भकमोड़

भकमोड़

(लघु कथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN :

मूल्य : भा. रू. २००/-

पहिल संस्करण : २०१३

श्रुति प्रकाशन :

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल,न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.

दूरभाष-(०११)२५८८९६५६-५८फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : http://www.shruti-publication.com

e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

मुद्रक: अजय आर्टस्, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

अक्षर-संयोजक: श्री उमेशमण्डल आ अखिलेशमण्डल

डिस्ट्रिब्यूटर:

पल्लवी डिस्ट्रिब्यूटर, वार्ड न. ६, निर्मली (सुपौल),

मो.९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

***Bhakmor**: Collection of short Maithili stories by Jagdish Prasad Mandal.*

कथा मिलन सदाय--सगर राति दीप जरय'क
निर्मली गोष्ठीकेँ
समरपित...

मनमनियाँ

औरहा (लौकही, मधुबनी जिला) कथा गोष्ठी (सगर राति दीप जरए)मे अगिला गोष्ठीक निमंत्रण (निर्मली, सुपौल जिला) पड़ल।

औरहासँ निर्मली गोष्ठीक बीचक जे कथा अछि ओ संकलनमे अछि। औरहामे एकगोटे प्रश्न उठौलनि जे एके लिखिनिहारक कथा दू-दू गोटे पढ़ै छथि। प्रश्न नीक लागल। एते नीक लागल जे जवाब देबे बिसरि गेलौं। नीक ई लागल जे जँ गोष्ठीओक नीबिते दस-बीसटा कथा लिखा जाए तँ एकरा की कहबै?

औरहा निर्मलीक बीच एकटा भुताहा चौक छै। रस्ता भकमोड़ छै, तँए संग्रहक नाओं भकमोड़ छी।

चलंत गोष्ठीक कथा केहेन हुअए? प्रश्न मनमे उठल? समए एहेन विचित्र बनि गेल अछि जे सुचित्र खींचब कठिन भऽ गेल अछि, तँए कथामे एकरूपता नै अछि। जहिना अनेको एकपेड़िया मिलि बहुपेरिया बनबैए तहिना भऽ गेल अछि। चाहे जे अछि मुदा सभ कथा अपन-अपन परिचए तँ दइए रहल अछि।

दुनू गोष्ठीक (औरहा-निर्मली) बीचक कथा, तहूमे हकरिया कथाक रूपमे लिखल गेल अछि तँए ई संग्रह निर्मली गोष्ठी (कथा मिलन सदाय-सगर राति दीप जरय)केँ सेवा समरपित...।

साहित्यक (मैथिली साहित्यक) दुर्भाग्य कही आकि सौभाग्य, मुदा रचनाकारक रचित रचना प्रकाशित नै भऽ पाबि रहल अछि एकरा की कहबै?

तीन मासक भीतर पोथी रूप देखि मन खुशी अछि, मुदा खुशीक जड़िमे किछु सहयोगीक भरपूर प्रेरणा रहल, जे प्रेरित करैत रहला। तँए सभकेँ हृदैसँ धैनवाद दइ छियनि। खास कऽ गजेन्द्रजी (श्री गजेन्द्र ठाकुर) आ उमेशकेँ बेर-बेर धैनवाद।

पोथीक रूप साकार करैमे श्रुति प्रकाशन आ प्रेसक जे संचालक मण्डल छथि, काजक मूर्त रूप बनबैमे सचमुच सफल मूर्त्तकार छथि, तँए तहेदिल धैनवादक पात्र छथि।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

०५.१०.२०१३

एकसत्तरि-

एक धाप जमीन

ओझरी

मुसहनि

केलवाड़ी

स्वरोजगार

घूर

कनियाँ-पुतरा

वारंट

गामक मुँह फेर देखब

एक धाप जमीन

भिनसुरका काज-उदमसँ निचेनो ने भेल छेलौं। सुनलौं जे दिनेश भाय कपार फोड़ा लेलनि। भोरे-भोर एना किए भेलनि। अखनि तँ शरीरक सभ अंग भकुआएले रहल हेतनि। यात्रा दिस नजरि गेल। दही माछक यात्रा नीक होइ छै मुदा केकरा लेल। अधखरूआ काज छोड़ि जाएब उचित नै बुझलौं। तैबीच पनिगर समांग सभ दिनेश भायकेँ छन्हिए पाइ-कौड़ीबला भाइए गेल छथि, झंझारपुर लऽ जा प्राइवेटमे भर्ती करा देलखिन।

चुल्हिक जारनिसँ लऽ कऽ तरकारी धरिक ओरियान कऽ निचेन भेलौं चाह पीलौं। तैबीच रस्ते-पेरे केते बात उड़िया गेल। जहिना धारक पानि आ वायुमंडलक हवा उधियाइत रहैत। जे एक धाप जमीन लेल दुनू भैयारीमे झगड़ा भेलनि। ओइ जमीनमे केराक घौर, छठि पावनिमे दुनू भाँइ टहलि-बुलि कऽ एकठाम भेला। परिवारक पछुआएल काज देखि देहमे खौंत फेकनहि रहनि आकि दुनू केरे बीटक बीच फड़ियौलनि। ओना दुनू भाँइ गामेक स्कूल धरि नियमित छात्र रहला मुदा, समैओ तँ समैए छी। सदिकाल उर्कुसी उड़िएबिते रहैए। जँ से नै तँ आब कहाँ देखै छी उखरि-समाठक आकि हर-पालोक चोरकेँ। तँए कि चोरक वंश मेटा गेल। भेल जे भने नीके भेल जे रस्ते पेरे जिगेसो भऽ जाएत आ किछु अगिलो भाँज लगि जाएत जे कपार फुटलनि तँ फुटलनि, ब्रेन ने तँ हेम्रेज भेलनि। दरबज्जासँ निकलिते देखलौं जे रस्ते-पेरे समाददाता सभ समाद बिलहि रहल छथि। समादो तँ अजीब होइए किने, एके घटना दस रंगक बनि जाइए। एना किए? पहिल घरवासी गामक नेताइन, जँ पड़ोसीया बनि हमहीं नै मोजर दैतियनि, सेहो तँ नीक नहियेँ। पुछलियनि-

''की घटना भेल अछि?''

वेचारी अपने बेथे बेथाएल जे तीन हजार रूपैआ नोकरीक नाओंपर दिनेश भाय ठकि नेने रहथिन। अनधुन बाजए लगली-

> ‘‘नीक भेल एक भाँइ कपार फोड़ौलक, दोसर मारि खेलक। ओना मारि तँ दुनू खेलक। मुदा एकटा चुपा दोसर देखौआ भेल।’’

गपक कोनो अरथे ने लगल जे घटनाक जड़ि की छी। मुदा नीक-अधलाक विचार भऽ गेल। चुपे आगू बढ़लौं तँ दोसर गोटे कहलनि-

> ‘‘छोट भाए भऽ कऽ पैघपर हाथ उठाएब दिनेशकेँ नीक भेलनि। दुनू भाँइकेँ तँ भगवाने बड़का-छोटका बनौने छथिन।’’

घटना तँ हराएले रहल मुदा एकटा पन्ना तँ भेटल। पन्नो तँ पन्ना होइ छै, मुदा दोसरो-तेसरो तँ पन्ने कहबैए। रस्ता दिस आँखि उठबिते ललितपर नजरि पड़ल। नजरि पड़िते भेल जे आब सभ भाँज लगि जाएत। लग अबिते पुछलिऐ-

> ‘‘बौआ, दिनेश जीक समाचार कहऽ?’’

मनमे भेल जे धुड़फन्दा लोक ललित छीहे, जँ कहीं अपने गाड़ीपर बैसा अपने डाक्टर लग लऽ गेल होथि। खैर जे होउ, धुअल-पखारल शब्दमे ललित बाजल-

> ‘‘काका, अहाँ तँ बुझिते छिऐ जे हम रोड परहक आदमी भेलौं, एको मिनट पलखति कहाँ होइए जे गामो-घर दिस देखब। तहूमे ठीकेदारी तँ आरो जपाल अछि। तेहेन लफड़ा ऑफिस लगा देने अछि जे ऑफिसेसँ अबै छी।’’

ऑफिसक नाओं सुनि अचंभित भेलौं जे भोरे-भोर कोन ऑफिस चलै छै जे कहैए ऑफिसेसँ एलौं। पुछलिऐ-

> ‘‘भोरे-भोर ऑफिस?’’

निधोख ललित बाजल-

> ‘‘लेन-देनक ऑफिस तँ डेरे छै किने।’’

बात आगू नै बढ़ा, पुछलिऐ-

''एक बेर दिनेश जीक जिगेसा कऽ लेब तँ जरूरीए अछि किने, तइमे तोरा तँ आरो बेसी उपराग देथुन जे बेरपरक ललित नै छी।''

काजक झमारल ललित बाजल-

''काका, समाजक लीले गड़बड़ अछि, अहीं कहू जे ई उचित भेल जे एक घौर केराले अपनो अस्पतालमे बरदाइ आ दोसो-महीमकँ बरदाबी। तहूमे कि कोनो हमरा पहिने कहि देने छला जे एक घौर केराले दुनू भाँइ माइर करब।''

पुछलिऐ-

''से कि ओ जनै छला?''

ललित बाजल-

''भरि दिन पोथी-पतरा कन्हेमे लटकल रहै छन्हि आ अपनो दिन-बेरागन नै बुझै छथिन। एक सए बेर दरबज्जापर जाएब तखनि तँ धोपचटमे गोटे बेर भेट जेता, एहेन उड़नबाज दुनू, तखनि कहू जे केना केरा घौर कपार फोड़ा देलकनि। मुदा जे होउ, समाजोक तँ दायित्व छै। तइसँ एक बेर जा कऽ हाल-चाल पूछि लेब जरूरीए अछि किने।''

कहलिऐ-

''भने तोरा सवारीओ छह, तीन बजेमे चलह।''

धुड़फन्दा ललितकेँ बात नीक लगलै। बहानाक गवाही बिनु तकनहि भेट गेलिऐ। बाजल-

''काका, भने पान-छह घंटा समैओ अछि, ताबे हमहूँ बैंकक काज कऽ लेब। निचेनसँ चलब जे आठ-नअ बजे राति तक घूमि आएब।''

ओना तत्खनात गपमे काट-खोंट करब उचित नै बुझलौं, मुदा ओकर आठ नअ बजे आ अपन आठ-नअ बजेमे अंतर तँ बुझिए पड़त। साढ़े-पाँच छअ बजे तक संभव अछि। कहलिऐ-

"बड़बढ़ियाँ।"

महेश-दिनेश सहोदर भाए। ओना, अर्थ रोगसँ पीड़ित परिवार, तँए गामक स्कूल छोड़ि बाहरक स्कूल-कौलेजक नियमित विद्यार्थी नै रहला मुदा एम.ए; पी.एच.डी.क सर्टिफिकेट नै छन्हि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। समए तेहेन भऽ गेल अछि जे पाइक खेल कोनो स्कूलकेँ चमका रहल अछि। तँ कोनोकेँ धमका रहल अछि। ओना बम्बैया कलाकार जकाँ चौबीसो घंटा मेकअपेमे रहै छथि। एकरंगा चेहरा दुनू भाँइक दिन-राति रहिते छन्हि। वएह आल रंगक अंगा, खौंरकी, कट्ठा डेढ़ेक सिनूरक ढिमका आ बिनु कमाइ देलहा केश-दाढ़ी तँ बनौनहि छथि। तँए कि दिनेश दब छथिन। दुनियाँ की कनीएटा अछि जे दस कट्ठा अहाँ जोतिए लेब तँ दुनियाँ जोता जेतै। समाजक स्त्रीगणक कौलेजक प्रोफेसरी ने महेश करै छथि, मुदा अदहासँ बेसी पुरुखक कौलेज तँ खालीए छै। पारखी दिनेश, समाजेमे नोकरी ताकि लेलनि। दू दुनियाँमे दुनू भाँइक जिनगी तखनि भैयारीमे एना हएत? छगुन्तामे पड़ल छेलौं। जहिना कौर्नर बौल फेकैक अभ्यास खेलाड़ी करैए तहिना रंग-रंगक सोंगर लगा जुति धड़बी तँ केतौ सोंगर नम्हरे भऽ जाए आकि छोटे भऽ जाए। कुजुति देखि मन भन-भनाइते रहए आकि महेश भायक मैझला बेटा पहुँचला। होइते छै कोनो घटना घटला पछाति घरवारी कोट-कचहरी, अस्पतालसँ गाम-घर धरि घूमि कनसोह लइते अछि। नव समाचारक जिज्ञासा बढ़ले छल। पुछलिऐ-

"बाउ, सुनै छी जे अहीं दिनेश भाइक कपार फोड़ि देलियनि। कहुना अहाँ भेलौं तँ बेटे-भातिज ने भेलियनि।"

मनमे भेल जे घटनाक जड़ि छूटि गेल। दोसर पन्ना उलटि गेल। जेना गणेशकेँ प्रश्नक उत्तर पहिनेसँ तैयार होय तहिना ठाँहि-पठाँहि बाजल-

“ऊहो भातिज बुझता तखनि ने पित्ती बुझबनि, भाय-भैयारी महिंसीक सींग, जखने जनमल तखने भीन। पित्ती नै दियाद छिया, दियाद जकाँ रहबनि।”

गणेशक ठमकल बात सुनि मन ठमकि गेल। ठमकिते ठहकए लगल जे चालि-चलनि तँ सचमुच दिनेशक दब छन्हिए जखने परिवारक चालि-चलनि दबत तखने पारिवारिक सम्बन्धमे कमी अबै छै। बातकेँ मोड़ैत पुछलिऐ-

“झगड़ा किए भेल?”

मुस्की दैत गणेश बाजल-

“काका, जँ जड़ि बुझही तँ एक धाप जमीन ले झगड़ा भेल। मुदा परिवार परिवार छिऐ, खापड़िक भुज्जासँ तसमै धरि चुल्हिपर चढ़ै छै।”

सुनि-सुनि हँसीओ लागए मुदा हँसैओक तँ अर्थ छै, कियो जीतला पछाति हँसबैए तँ कियो घिनाइत हँसबैए। तँए हँसीकेँ पेटेमे रोकि पुछलिऐ-

“की एक धाप जमीन?”

“दुनू भैयारीमे गामक तँ सभ किछु बँटाइए गेल छन्हि, पाही पट्टी अपन-अपन छन्हिहेँ तँए ओहो बँटाएले छन्हि। एकटा बीट केरा अछि। गौसार छइहे, खूब नम्हर-नम्हर घौर होइ छै। ओहीले मारि भेल?”

“नै बुझलौं?”

“बँटै दिन दुनू भैयारीमे मेहदी जकाँ मेदहा रहनि, नै बँटलनि। किछु दिन पछाति आबि काका कहलनि जे गणेश चलह केरा बीट बँटैले। कहलियनि अहाँ भैयारीक बँटवारा छी, अपन बाँटि दियौ। एक धाप बढ़ा कऽ आड़ि दऽ देलखिन। बाबूओ तँ सभ दिन बाहरे रहै छथि। तेते ने बाहरी काज रहै छन्हि जे महिनामे गोटे राति गाम-विश्राम होइ छन्हि। अगुताएल रहने ई बाते बिसरा गेलनि।

नानी गामसँ समाद आएल जे तांत्रिक जीकेँ एक घौर केरा पठा दइले कहियनु। आब अहीं कहू काका, एक तँ वेचारी नानी बूढ़ छथि तैपर ओ सभ बाबूकेँ पाहुन नै कहि तांत्रिकेजी कहै छन्हि। हिनको अपन ने महात्म्य छन्हि।''

''हँ।''

हँक की अर्थ गणेशकेँ लगलै, से ओ जानए। कहलिऐ-

''तोहर जिगेसा तँ भाइए गेल, आब कनी दिनेशो जीक जिगेसा कऽ लेबनि।''

तीन बजे तैयार होइते रही आकि ललित पहुँचल। चाह पीब दुनू गोटे विदा भेलौं। सीमा टपिते ललित बाजल-

''काका, समुद्रक लहरि जकाँ गामो-घरमे लहरि अबै छै।''

ललित कथी बाजऽ चाहै छल से नै बूझि पेलौं। पुछलिऐ-

''की लहरि?''

बाजल-

''गाममे चोर अबै छेलै आकि आगि लगै छेलै, अवाज सुनिते ओकरा भगबै आकि मिझबै छेलौं। मुदा एहेन नीक बेवहारमे आगि मिझौनिहार अगिलगौन आ चोर भगौनिहार चोरिकरौन संग चोरबा केना बनल?''

ललितक प्रश्न सुनि बकार बन्न भऽ गेल। मानि लेलिऐ जे ललितक विचार जरूर विचारणीय अछि, से तँ मोटर साइकिलपर नै हएत। बजलौं-

''तूँ डरेबरी करबह आ गामक जड़ि खोदबह।''

दिनेश जीकेँ भेँट करैत पुछलियनि-

''डाक्टर साहैब की सभ कहलनि?''

दिनेश-

''कहलनि जे मारि किछु बेसी लगि गेल अछि तँए ओ तँ निजाइते-निजाएत। मुदा हँसुआक पीठ माथमे बेसी धँसल नै अछि, ओहो जल्दीए ठीक भऽ जाएत।''

दुनू गोटे डाक्टर लग पहुँच पुछलियनि-

''डाक्टर साहैब, दिनेश जीक की स्थिति छन्हि?''

''नीके छन्हि।''

''पाइ-कौड़ी दुआरे इलाजमे कमी नै होन्हि।''

''एह! से कि दिनेश जीकेँ चिन्है नै छियनि। अनाड़ी किए बुझै छी।''

घूमि कऽ आबि दिनेशजी लग दुनू गोटे बैसि गप-सप्प शुरू केलौं। पुछलियनि-

''दिनेशजी एना किए भेल?''

जाबे दिनेश किछु बाजथि तइसँ पहिने पत्नी टपकि गेलनि-

''हमर कपारे जरल अछि, तँए ने एहेन जरल घरबला भेल। नै जँ से नै रहितथि तँ एतबो ने बुझा कऽ कहल भेलनि जे छठिमे नैहरसँ एक घौर केराक मांग भेल अछि, ओहो कि कियो आन भेला, जेहने अपन तेहने ने अहूँकेँ।''

ललितकेँ चुटका सुतरल। चुटकी लैत बाजल-

''ई की कोनो नव गप छी, सासुरमे भैयारीक कोन बात जे समाजे सासुर जकाँ नीक-अधला करैए। तहूमे छठि सन पावनि, बिना ठकुआ-केरा-भुसबाक केना हएत।''

आन समए दिनेश जीकेँ पत्नीक बोल जेहेन मीठगर आकि तेलगर लगैत होन्हि मुदा अखनि नीक नै लगलनि। लाल आँखि बना ललौन बोलीमे दिनेशजी बजला-

“समाज जिगेसा करए एला, तिनकर स्वागत-बात छोड़ि चंडी-काली बनि जाउ। जखनि गड़डीक-गड़डी आनि कऽ दइ छी, तखनि रसिक पिया बनि जाइ छी, आ अखनि कपरजरूआ बनि गेलौं। पत्नी छी पत्नी जकाँ रहू।”

दिनेश जीक तामसकेँ रोकैत ललित बीच-बचाव करैत बाजल-

“भौजी, एतबो नै बुझै छिऐ जे अखनि भाय-साहैबक देहमे चोटोक दर्द छन्हि आ कपारमे लोहोक बीन-बीनी हेबे करतनि। जरलपर जारनि देबै तखनि धधड़ा नै धधकतै। चुप रहू। भाय-साहैब, अंगूर हमहूँ अनने छी, खाइक मन होइए?”

दुनू बेकतीक झगड़ा जे हौनु मुदा एकटा प्रश्न तँ ठाढ़े भऽ गेल। ओ ई जे पति-पत्नीक बीच सम्बन्धक रेखा केहेन हेबा चाही। कियो पति चरित्रसँ बिगड़ल छथि, आ पत्नी चरित्रवान छथि, तखनि दुनूक बीचक सम्बन्ध केहेन होइ? कियो पत्नी घूसखोरीक विरोधमे रहथि आ पति दिन-राति घूस लथि तैठाम पत्नी-पतिक पाइक उपयोग नै करती?

दिनेश जीक बिगड़बसँ लाभे भेल। छुच्छे चाहक जगह जलखैओ आएल। दिनेश जीकेँ पुछलियनि-

“अहाँ सन लोकले नीक भेल?”

दिनेश हरदा बाजि गेला-

“दिनक दोख छल। नै तँ साल भरिसँ दुनू भैयारी एकठाम बैसि चाहो ने पीने छेलौं। पीबो केना करब, हुनको अपन दुनियाँ छन्हि, अपनो अपन अछि। महिनामे साइते गोटे राति गाममे बीतैए। नै तँ बाहरे रहै छी। साँझमे आएले रही। खाइ बेर पत्नी कहलनि जे सासुरसँ केराक आढ़ति भेल। छठमे दिन छठि छिऐ। दू दिन घरोमे रहतै। पुछलियनि तँ कहलनि जे अपने बीटमे केरा अछि। सतबजिया गाड़ी पकड़ि पटना जाइक रहए ऑफिसमे केते रंगक काज पछुआएल छेलए। अनदिना ने भीड़ो रहै छै, पावनि-तिहारमे तँ सेहो कमिए जाइ छै। तँए अन्हरोखे हाँसू नेने केरे बीट लग पहुँचलौं।”

टोकलियनि-

''अन्हरोखक माने?''

दिनेशजी तिलमिला गेला। अन्हरोख भोरोमे होइ छै, साँझोमे होइ छै। सँझुका अन्हरोख बदलैत-बदलैत अन्हारमे बदलि जाइ छै मुदा भोरका तँ फरिच होइत-होइत फरिछा दिन भऽ जाइ छै। तँए, ने जेबोक समए होइ छै।

तत्-मत करैत देखि दोहरबैत कहलियनि-

साँप-कीड़ा अन्हार-धुन्हारमे करजान सभमे रहै छै, तखनि किए गेलौं। अच्छा, ओते भोरमे ओ सभ केना पहुँचला?

दिनेशजी बजला-

''सएह ने बूझि पेलौं, जे नियारि कऽ गेल रहथि आकि ओहिना देखलनि तँ पहुँचला।''

पुछलियनि-

''ओ सभ तँ सतबजिया सुतनिहार छथि तखनि केना एकठाम भेला? खैर छोड़ू। बुझा कऽ नै कहलियनि जे कुटुमारे केरा जाएत।''

दिनेशजी-

''भातीजकेँ कहलिऐ, गणेश जेहने हमर सासुर तेहने ने तोरो ममहर भेलह। तखनि तोहीं कहऽ?''

पुछलियनि-

''गणेश की कहलनि?''

जाबे दिनेशजी बजितथि तइ बिच्चेमे पत्नी झपटि कऽ बजली-

''हुनका सभकेँ -महेशक परिवार- धनबूबूक ने भऽ गेल छन्हि। हम तँ सहजे दियादे भेलियनि। सभ जनै छी जे दियाद आ दालि जेते गलै छै तेते सुअदगर होइ छै। अनको की ओ सभ जीमे लगबै छथिन।''

दिनेश जीक पत्नी-केकैयीक बात सुनि ललित बाजल-

“भौजी, अहीं कोन उतकिरना केलौं। जँ एक घौर केरे छठिमे नैहर पठबैक छेलए तँ दिनेश भायकँ झंझारपुरेसँ कीनि कऽ पठा दइले कहितियनि।”

केकैयी बजली-

“मास दिन पहिने कहि देने छेलियनि जे अपने बीटमे केरा अछि, तखनि केना कीनि कऽ पठबैले कहितियनि।”

दुनू गोटे गपकेँ रोकैत बजलौं-

“खैर जे भेल से तँ भाइए गेल, मुदा कोनो धरानी नीक भऽ गाम चलू तखनि बैसि अपनामे मुँह मिलानी कऽ लेब।”

हमर बात केकैयीकेँ नीक नै लगलनि। बजली-

“यएह कहथु जे कियो बेसी समंगर रहत तँ कम समांगबलाकेँ गामसँ भगा देत।”

मुस्की दैत ललित बाजल-

“केकरा के भगौलकै हेन। जे अहाँकेँ भगा देता। अनेरे मने-मन परेशान होइ छी। भैयारीक बात छी, हमसब समाज भेलौं, अहाँ जे कहै छी से बिना हुनकासँ बुझने केना उत्तर देब।”

चिन्तित होइत दिनेशजी बजला-

“देखियौ जे एक तँ ओहिना ऑफिसक काज सभ पछुआ गेल अछि, तैपर ऐठाम बरदा गेलौं!”

ऑफिसक काज सुनि पुछलियनि-

“अहाँकेँ ऑफिसक कोन काज अछि जे पछुआ गेल। नोकरी तँ नै करै छी।”

दिनेशजी-

''अपन काज कहाँ छी, जखनि समाजमे रहै छी ऑफिस जाइ-अबै छी, तखनि अनकर काज नै करिऐ, से नीक हएत।''

दिनेश जीक बात सुनि भेल जे ऑफिस तँ अखनि लेन-देनक अखाड़ा बनल अछि। जइसँ बिनु लेन-देन करैबला अपनो काज छोड़ि रहल छथि तैठाम दिनेशजी अनको काज झोरा भरि-भरि करै छथि तेकर की माने। बेपार कऽ रहला अछि आकि समाज सेवा। खैर जे होउ। तही बीच डाक्टर पहुँचला। ठाढ़े-ठाढ़ डाक्टर साहैब बजला-

''सुधारमे छी किने दिनेशजी?''

गिरगिराइत दिनेशजी कहलकनि-

''डाक्टर साहैब, देहमे दर्द तँ अछिए।''

जहिना गर्म चाहसँ मुँह पकल रहने, कनी कमो गर्म चाह ओहने गरम बूझि पड़ै छै तहिना दिनेशो जीकेँ होइत रहनि। मुदा पावनिक लहकी देखि सभ बिसरि बजला-

''डाक्टर साहैब, दबाइ सभ खाइते रहब, मुदा छुट्टी दऽ दिअ जे भोरुका सतबजिया गाड़ी ने छूटि गेल, जँ रौतुको एगरबजिया पकड़ा जाएत तैयो सबेर-सकाल काल्हि पटना पहुँच जाएब।''

दुनू गोटे (ललित) विदा भेलौं। एक तँ अपनो ग्लानिसँ मन भरि गेल दोसर ललितोकेँ किछु एहेन बात मनकेँ भटभटा देलकै जे बिसाइन होइत-होइत बिस-बिसाइत रहए। ओना दोहरा कऽ चाह पीऐक आग्रह दिनेश जीक बेटो आ पत्नीओ करैत रहली मुदा सुचित मन जहिना खेबा-पीबाक इच्छा जगबै छै तहिना कुचित मन अनिच्छा सेहो जगबै छै। सएह दुनू गोटेकेँ भेल। हलाँकी दिनेशजी एते विचार जरूर केलनि जे ललितकेँ कहलखिन-

''ललित, एक तँ अहाँक समए लेलौं तैपर सवारीओक खर्च बढ़ा दी, से नीक नै। तेलक पाइ लऽ लिअ।''

मुदा ललितोकेँ ठीकेदारीक ताव रहबे करै बाजल-

“गाड़ी तेलक जे हिसाब जोड़ब तखनि काज चलत। एतबो आशा हमरा कमाइक नै अछि। अहाँ अखनि डाक्टर ऐठाम छी केना नीक भऽ गाम पहुँचब ई दायित्व केकर छै।”

कहि ललित आगू बढ़ि मोटर साइकिल पकड़लक। पाछूमे बैसिते रही आकि ललितक मुँहपर नजरि पड़ल। जेहने तुरुछल मन तेहने आँखिक भौ बूझि पड़ल। मुदा बीचमे किछु बाजब उचित नै बूझि चुपे रहलौं।

कनीए आगू बढ़िते ललित बाजल-

“काका, तेहेन दुनू भाँइक किरिया-करम भऽ गेल छै जे कहू दस-दस लाखक घर बनौने अछि। तैपर दस-दस लाख बेटी बिआहमे खर्च करैए केतएसँ आनैए। दुनू तेहेन बहुरूपिया बनि गेल अछि जे यएह सभ समाजमे भाए-भैयारी बनए देत।”

ललितक गंभीर बात मन डोला देलक। बजलौं-

“ललित, बेसी तँ नै बुझै छी जे असल बात बाजब मुदा एते तँ मन मानिते अछि जे जे जेते नीच-सँ-नीच जगह परहक पाइ उठबैए ओ ओकर ओते बेसी बेवस भऽ गेल अछि। जे मानवीयताक विपरीत भेल। जँ से नै भेल तँ कहू एक धाप जमीनमे केराक बीट, कोन सोनाक बड़का खान छै, जेकरा ले हजार-बजार किछु ने छै, से सए-सैकड़ाक लालचमे भैयारीक जे परिचए देलनि से तँ देबे केलनि, जे समाजोक परिचए तँ दाइए देलनि।”

समाजक नाओं सुनिते ललितोकेँ शतरंजक सह भेटल। बाजल-

“काका, हमहूँ ठीकेदारेक जिनगी जीबै छी, एकर माने ई नै जे नीक-अधलाक विचार नै करै छी। छाती खोलि गामक चौराहापर बाजि सकै छी, जे भाय समाजक एक्कोटा लाल ई कहि दैह जे फलनमासँ अधला भेल, जँ भेल तँ अखनो ओकरा चर्चमे आनए चाहै छी। मुदा ई दुनू भाँइ (महेश-दिनेश) तँ कोनो मनुखे ने छी।”

“जाए दहक। जे जेहेन करत से तेहेन पौत।”

ooo

ओझरी

कान्हपर डेढ़हत्थी ठेंगामे कुशक चारिटा आँठी गौंछ कऽ टँगने सुकला काका दू बाँस फड़िक्के रहथि आकि नजरि पड़ल। ओना पाँच बजे भोरेसँ जेरक जेर लोक खुरपी-ठेंगा नेने कुश उखारए जाइतो छला आ उखाड़ि-उखाड़ि घुमितो छला। तैबीच सुकला काका सेहो रस्ते रस्ते दछिनसँ उत्तर मुहेँ बाधसँ घर दिस अबै छला। कनी फड़िक्के देखि नजरि तँ हुनकेपर छल मुदा किछु बजलौं नै। ताबे सहटि कऽ एक बाँस आगू ओहो बढ़ला। कान्हपर कुशक भार रहनि मुदा मन तीन मासक ओझराएल काजपर छेलनि तँए मनो खुशी छलनि आ मुस्की सेहो ठोरपर छेलनि। खनहन मन, खरहड़ डेगक संग हरिअर मुँह देखि भेल जे भरिसक सिरगर कुश असानीसँ उखड़लनि तँए मन हरिआएल छन्हि। फेर भेल जे भरिसक धड़गर खुरपी हेतनि तँए असानीसँ कुश उखड़ल हेतनि, तेकर खुशी हेतनि। गुन-धुन मन करिते छल ताबे एक लग्गी लग चलि एला। ओना कुश तँ कुशे छी कियो जड़ि भिरा सिर-तिर नेने उखाड़ै छथि तँ कियो ऊपरेसँ काटि चटाइ बनबै छथि। उसरक उपजा तँ छीहे। जे जमीनमे आन किछु ने उमझैत ओइमे कुशे उमझैए। लग अबिते पुछलियनि-

‘‘कक्काक, मन बड़ हरिअर देखै छी केतो किछु पेलौं हेन?’’

कक्काक कान्हपर कुशक भार मुदा अपन तीन मासक ओझराएल काजकेँ आरो ओझराएबपर छेलनि। पबैक नाओं सुनि जेना ठोरेपर रहनि तहिना बजला-

‘‘पएब की, ने पेलौं आ ने पाबए देलिऐ।’’

काका गपक कोनो अर्थे ने लगल, किछु बुझलो रहैत तखनि ने। मनमे भेल जे रस्ते-रस्ते अखनि लोक चलैक ढबाहि लगल अछि, नीक हएत जे दरबज्जेपर बैसि नीक जकाँ पुछि लियनि। कहलियनि-

“काका, अहाँ तँ टहलो-बुलब छोड़ि देलिऐ। दरबज्जेपर चलू, चाहो पीब लेब आ गाम-घरक किछु गप्पो कऽ लेब।”

चाहक नाओं सुनि मन चपचपेलनि। किएक तँ डेढ़-दू घंटा बिलम भऽ गेल छेलनि। बजला-

“चाहे नै पानिओ पीबह।”

जहिना आग्रह केलियनि तहिना एक चेकी चढ़ा ऊहो मानि गेला मुदा बीचमे एकटा उकड़ू काज तँ आबिये गेल। ओ ई जे पानि पीबैक की माने। खेनाइसँ लऽ कऽ छुच्छे पानि धरिक नमगर प्रश्न आबि गेल। तत्-मत् करिते रही आकि धाँइ दऽ सुकला काका बजला-

“आँगनमे चाह बनबए कहि दहुन आ कलपर सँ एक लोटा पानि नेने आबह।”

सुनि मन हल्लुक भेल। अपने आँगन दिस बढ़लौं आ ओ दरबज्जा परहक ओसारपर कुशक भारो आ खुरपीओ रखि चौकीपर बैसला। कलपर सँ लोटा नेने आबि आगूमे देलियनि। देखिते बजला-

“आब की पानि पीबैक लोटो रहल, पहिने जे धिया-पुताक लोटकी छल से भऽ गेल लोटा।” कहि उठा कऽ एक्के छाँकमे गट दऽ पीब गेला। भेल जे भरिसक छाँक नै पुरलनि। पुछलियनि-
“एक लोटा आरो आनि दी?”

मनाही करैत कहला-

“आब किए अनबऽ। जेतबे अनलह ओतबे पियासो छेलए। बैसह। की पुछए लगल छेलह?”

कक्काक हल्लुक मन देखि भेल जे गप करैक मूडमे आबि गेला, जँ पहिने चाहो पीआ देबनि तँ बिना कौमे-फुलस्टौपक व्याख्यान दऽ देता। कहलियनि-

“पहिने चाह पीब लिअ। गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइ छै।”

तैबीच आँगनसँ चाह आएल। गिलास पकड़ैत बजला-

“आइ कुशी अमावस्या छी, अदहा भादो बीति गेल।”

कनी गुम होइत पुन: बजला-

“केतेक धूअल-पखाड़ल पहिलुका लोक सभ छला जे एक दिन माघ बितने नाचि बजै छला जे गेल माघ उनतीस दिन बाँकी। कहू जे ई कोन हिसाब भेल। तीनिओ-चौथाइसँ कम भेल। मुदा से नै, केते हुनका सभमे अडिग बिसवास छेलनि जे जखनि एक दिन माघ सन जाड़ काटि सकै छी तखनि उनतीस दिन किए ने कटत।”

कक्काक बात सुनि भेल जे चाहेक ताउमे काका बहकि गेला। मनमे कोनो प्रश्न अछि आ ओ किम्हरो बहकि गेला मुदा बीचमे टोकबो नीक नै। जखने रूकता तखने पुछबनि। गर अँटिते पुछलियनि-

“काका, ओ जे कहलिऐ?”

जेना कक्काक नजरिसँ उतरि गेल छेलनि। बजला-

“की?”

“ने अपने पेलौं आ ने पाबए देलिऐ?”

सुनिते जेना धक दनि मन पड़लनि। बजला-

“तीन मासक काज तेना ओझरा गेल जे ने अपने किछु पेलौं आ ने आने कियो पौलक।”

“से की?”

से की सुनिते जेना सुकला काका पसीज गेला। जहिना कोनो बच्चा वा सियानकेँ बेथित मनक बेथा कियो सुनए चाहलापर पसीज जाइत तहिना कको पसीज गेला। बजला-

“तीन मासक जे ओझराएल काज छल ओकरा छोड़ि देलिऐ। जइसँ मनो हल्लूक भऽ गेल।”

कक्काक झँपाएल-तोपाएल बातक किछु अरथे ने लगल। मुदा जखनि सोझहामे बैसिले छथि तखनि पुछैओक तँ अधिकार अछिए। ई नै ने जे जे बजलौं से सुनि लिअ। दोहरा कऽ किछु ने बाजब। जँ कोनो प्रश्न उठैत आ ओकर खण्डन-मण्डन नै होइत ता ओकर रस केना निकलत। जाबे रस नै निकलत ताबे कथी पीब रसिया बनि रसाएब। पुछलियनि-

“काका, कनी फड़िछा कऽ कहियौ। नीक जकाँ नै बूझि पेलौं?”

नम्हर साँस छोड़ैत काका बाजए लगला-

“तीन मास पहिने रेडियो स्टेशनक एकटा अपेक्षित फोन केलनि जे काल्हि कथा पाठक समए भेटल, से जरूर अबिऐ। अखनि अगुताएल छी। काल्हि बारह बजे जखनि पहुँचब तखनि आरो गप हेतै।”

कहि फोन काटि देलनि। कथा लिखिते छी, बचिते छी, ओतौ जा कऽ बाचि देबै। मनमे कोनो बेसी लहरि नै उठल। घरमे केतेको कथा अछिए, अपना दहीकेँ के खट्टा कहलक जे कहबै। जे मन फुड़त से कथा लऽ लेब जा कऽ पढ़ि देबै। आरो की?

रेडियो स्टेशनक नाओं सुनि पुछलियनि-

“पहिनो कहियो कथा-पाठ केने छेलिऐ, आकि पहिल बेर छल?”

प्रश्न सुनि काका ठमकि गेला। जेना किछु पेटक बात मने ने पड़नि तहिना किछु समए घुरियाइत बजला-

“पहिल बेर छल। ओहो तँ भऽ गेल। नै तँ देखै नै छहक जे युनिवर्सिटी होइ आकि कौलेज, सरकारी ऑफिस होइ आकि कोनो संस्था, किछु गोटेक हाथक खेलौना बनि गेल अछि। जहिना सराधक भोज बुझै छै तहिना मूड़न, उपनैन बिआहक भोज बुझै छै।”

काकाकेँ बहकैत देखि छोड़ तानि पुछलियनि-

“काका, रेडियो स्टेशन गेलिऐ?”

जेना एकाएक काकाक नजरि अपनापर पड़लनि। बजला-

“किए ने जइतौं। जुआ पाशापर जाइकाल जहिना युधिष्ठिर कहने छला जे बजौलापर बीखो पीआ देत सेहो स्वीकार अछि। दोसर दिन सबेरे दस बजे खा-पी कऽ विदा भेलौं। दस-पनरह मिनट बारह बजेमे बाँकीए रहए, तखने पहुँच गेलौं। चिन्हा-परिचएक अपेछित छोड़ि दोसर नै। मुदा ओहो बाटे तकैत रहथि। पहुँचिते अपना ऑफिसमे लऽ गेला। कुशल-समाचारक पछाति कहलनि जे कथा देखए दिअ। नम्हर कथा दसे मिनटमे केना पढ़ल जाएत। कम-सँ-कम अदहा घंटा समए चाही। गुन-धुन करैत कहला जे किछु पाँतिकेँ निकालि दियौ। कथा नम्हर अछि, समए कम। मनमे भेल जे पुछियनि, एकटा कथा लिखैमे जेते समए लगै छै तेते दिन पहिने ने जानकारी हेबाक चाही, हड़बड़ी बिआहमे तँ कनपटी सिनूर होइते छै। मुदा मनमे तेते खुशी रहए जे सभ बात तर पड़ि गेल। कथामे सँ टोबि-टोबि किछु पाँति निकाललौं। निकालि पुन: देलियनि। मुदा नम्हर देखि ओ अपनो निकाललनि। ताधरि कथाक रूप कुरतासँ अधकुरता आ साँचीसँ फाँड़ धरि पहुँच गेल।”

पुछलियनि-

“तेकर पछाति की भेल?”

बजला-

“समए भेटल। कम्प्यूटरक आगूमे बैसलौं।”

“असगरे आकि आरो कियो?”

“एके घरमे दू हन्ना अछि। बीचमे शीशाक देबाल लगल छै। देखि तँ सभ सकै छी मुदा अवाज रूकि जाइ छै। जखनि बैसलौं तखनि दोसर हन्नामे जे बैसल रहथि ओ हाथक इशारासँ कहबोले करथि आ चुपो होइले कहथि। होइत-होइत बीस मिनटमे कथा बिसरजन भेल। फेर कम्प्यूटरमे काट-छाँट भेल। बीस मिनट उतरि कऽतेरह

मिनटपर अँटकल। ताधरि कथाक रूपे बदलि गेल। जहिना सजल-धजल देह अन्डर बीअरमे बदललासँ होइत तहिना भऽ गेल। खैर जे होउ, नै मामासँ कनहो मामा तँ भेल।''

पुछलियनि-

''पाइओ देलक?''

जेना केते भारी अधिकार भेट गेल होन्हि तहिना गुम्हरैत बजला-

''पाइ किए ने दइत। मुदा तइमे कि भेल से सुनह। जहिना सभ दूटा तीनटा, चारिटा अपन नाओं रखैए तहिना दूटा नाओं अछि। दूटा कागतपर दू बेर हस्ताक्षर करौलक दुनूपर दुनू नाओं लिखि देलिऐ। दू घंटा पछाति जखनि विदा होइपर भेलौं आकि चेक बनौनिहार कहलनि जे अहाँक दुनू हस्ताक्षर नै मिलैए, तँए चेक नै बनल। कहि दोसर कागत फेर देलनि। हस्ताक्षर कऽ देलिऐ। चारि बजि गेल। समए ओठर भऽ गेल। कहलनि, आइ चेक नै बनि सकल। अहाँ जाउ, पठा देब। कहलियनि, बड़बढ़ियाँ। विदा भेलौं। विदा भऽ गेलौं, मुदा ओझरीकेँ जनमौने एलौं।''

एक ओझरी मेटाइत दोसर ओझरीक जनम सुनि जिज्ञासा भेल पुछलियनि-

''से की?''

मुदा कक्को सतर्क छला। बजला-

''पहिने जे कहै छिअ से सुनि लैह नै तँ फेर बौआ जाएब। जखने कथ्थकर बौआइत तखने सुनक्कर वा पढ़क्कर तँ बौएबे करत किने?''

कहलियनि-

''हँ से तँ बौएबे करत।''

बजला-

''मन तेते तमकि गेल जे हुअए अखनि जँ राजा रहितौं तँ राज-पाट लूटा दइतौं। मुदा गाड़ी दुआरे पाँचे सए टाका अछि। किए तँ

दिल्लीमे बीसे रूपैआक जरूरति होइ छै, अपना ऐठाम तँ से नै छै। पान सए तकक कारोबार छै। मुदा सेहो बिसरि गेलौं। चारि सए टका भरि दिनमे गमा देलिऐ।''

''हँ, तँ चेक पठौलनि की नै?''

''आखिर किछु छिऐ तँ सार्वजनिक संस्था ने छिऐ। पोस्ट ऑफिसक माध्यमसँ बीस दिनक पछाति पठौलनि। संस्थो तँ सार्वजनिके छी किने, सभकेँ अपन-अपन दायरा छै, अधिकार छै। बीस दिन पछाति एकठामसँ चेक चलल दोसर ठाम बीस दिन फेर अँटकि, बेरहटिया करए लगल। खैर जे होउ मुदा हाथमे तँ एबे कएल।''

बिच्चेमे काकाकेँ पुछलियनि-

''काका, तब तँ जीतलियनि?''

जीतब सुनि मीरा-राधा मन पड़लनि, एक जीतबे ने कएल दोसर हारबे ने कएल। मुस्की दैत बजला-

''कागतोक रूपैआ बनै छै आ रूपैओ कागत बनि जाइ छै।''

उड़नखटोला गप सुनि चकविदोर जकाँ हुअ लगल मुदा जखनि सोझहेमे छथि तखनि पुछिऐ लेब नीक हएत। पुछलियनि-

''एना केना भेल?''

मचकीक आस मारि बाजए लगला-

''चेक जखनि हाथ आएल तखनि भेल जे रूपैए आबि गेल। जँ दसटकही नोट दइत तँ एकथाक होइत तइसँ नीक जे बक्सामे जगहो ने छेकत। कोनो किताबमे घोंसिया देबै।''

कक्काक बात सुनि कहलियनि-

''बैंकमे नै जमा केलिऐ?''

जेना केतौ काका हारि चुकल छला तही क्रममे बजला-

“बौआ, की कहबह? भेल जे पराते भने जँ बैंकमे जाएब तँ सभ कहत जे देखियौ खापड़ि केते तबधल छै तँए सात दिनक पछाति बैंक गेलौं।”

बजलौं-

“खैर, बैंक तँ पहुँचलौं ने।”

पहुँचब सुनि बजला-

“की पहुँचब दैवक कपार। भाँज लगेलौं तँ पता लागल जे पहिल पालीमे लेन-देन चलै छै दोसरमे आन काज। एक बजे बड़का रौदामे गेलौं। आठ-दस गोटेक बीच मैनेजर साहैब बैसल रहथि। भीड़ देखि मनमे भेल जे पहिने जे एला हुनकर काज ने पहिने हेतनि। ब्रिन्चपर चारि-पाँच गोटेक बीच बैसलौं। बैसल-बैसल समए ओठर भऽ गेल, उनहि गेल मुदा दरबारक भीड़ नै कमल। ठहाकापर ठाहाका चलैत रहए। साढ़े चारि बजे जा कऽ मैनेजर साहैबक आगूमे चेक देलियनि। चेक देखिते बजला, ‘बैंकमे देखिते छिऐ जे सभ गाड़ी पकड़ए चलि गेला। असगरे छी, हमहूँ चलैएपर छी, कहि उठि गेला।”

पुछलियनि-

“तब तँ काज नै भेल हएत?”

बजला-

“काज केना होइत। समैए उनहि गेलै।”

“बैसिले-बैसल उनहि गेल?”

“कहलियऽ से नै बुझलहक। दरबारे ने टुटल, मुँह तकिते रहि गेलौं। दोसर दिन फेर गेलौं। समैपर चेक देलियनि। रजिष्टर उनटा मिलौलनि तँ कहला चेके गलती भऽ गेल। खातामे किछु नाओं अछि चेक किछु नाओंसँ अछि। कहि चेक घुमा देलनि।”

''एना किए भेल?''

''ओहुना देखिते छहक जे दूटा-तीनटा चारिटा नाओं लोक रखिते अछि, कियो अधकट्टी तँ कियो गोल गोला मुदा हमरा से नै भेल। गमैया नामक आधारपर वोटर लिस्ट बनल, वोटर लिस्टक आधारपर परिचय पत्र आ राशनकार्ड बनल। ओही आधारपर बैंकमे खाता खुजल। मुदा स्कूलक नाओं कागजे-कागजे बौआइत रहल। ओही आधारपर चेक बनल। मैनेजर साहैबसँ पुछलियनि तँ कहलनि जे एफीडेफिट लगा कऽ नाओं चढ़ि जाएत। संतोष भेल। चलि एलौं। दोसर दिन बैंकक काज छोड़ि कऽ कोर्टक काज दिस बढ़लौं। रबि रहने एक दिन ओहिना चलि गेल। दोसर दिन एफीडेफिट बनेलौं। तेसर दिन बैंकपर गेलौं तँ पता लागल जे मैनेजर साहैब सस्पेंड भऽ गेला। साते दिन नोकरी शेष छेलनि तही बीच सस्पेंड भऽ गेला। आश्चर्य भेल जे सेवा निवृत्ति होइसँ एक पनरहिया अपने कागत-पत्तर सरियबैमे लगि जाइ छै। तखनि घरमुहाँ-सँ-बहरमुहाँ केना भऽ गेला। कैसियरसँ पुछलापर पता लगल जे इन्दिरा आवासक कमीशनमे गोल-माल भेल तँए सस्पेंड भेला। अगिला सप्ताह धरि दोसर आबि जेता। ओ तँ पुन: घूमि कऽ नहियेँ औता किएक तँ केतबो जल्दी फड़िछाएत तँ नीचा-ऊपर करैत सप्ताह बीतिए जेतनि। सुनि चलि एलौं।''

पुछलियनि-

''फेर की केलिऐ?''

बाजए लगला-

''दोसर सप्ताह गेलौं, तँ नवका मैनेजर आबि गेल रहथि। असगरे बैसल रहथि, जा कऽ सभ बात कहि कागत देलियनि। कागत देखि रखि लेलनि। परिचए-पातक गप-सप्प उठल। नीक संस्कारी परिवारक छथि। कहलनि, ई तँ मैनेजरक अधिकारक काज छी जे

उर्फ करि कऽ नाओं चढ़ा लैतथि। अनेरे एते करैक कोन काज छेलए। चेक देखि कहलनि जे एकर समैए समाप्त भऽ गेल।''

सुनि चोटे घूमि कऽ आबि कागतक बीच रखि देलिऐ।

पुछलियनि-

''दोहरा कऽ किए ने फेर बनबा लेलौं?''

बजला-

''सौंसे रामायण पढ़ि गेलौं, सीताक पते नै। जेते आमद हएत तइसँ केते बेसी खर्चे भऽ गेल तखनि अनेरे कोन ओझरीमे फेर पड़ब। छोड़ि देलिऐ।''

❍❍❍

मुसहनि

भोरेसँ बेलबा घुसकीपट्टीवालीक हरिअर मन देखि तारतम करैत रहए जे की बात छिऐ जे यएह छी, कहियोकाल जहिना खढ़ देखि लप दऽ आगि पकड़ि जरा दइत तहिना बुझि पड़ैत रहैए आ आइ की बात छिऐ? मुदा चेहरा केतबो मेकअप किए ने करए हृदैक बात सोलहन्नी तँ नहियेँ बुझि सकैए। घुसकीपट्टीवालीक खुशीक कोनो अरथे ने बेलबाकेँ लगै, दिन बीति गेल मुदा भाँज नै लगल। भाँज लगलै रातिमेखाइकालजखनि मनोनुकूल खेसारी दालिक पाँचटा कचौड़ी थारीमे देखलक। सेहो भाँज सुपते कहाँ लगलै, पुछला पछाति लगलै। लगिते मनोहल्लुक भेलै। हल्लुक होइत मुँहसँ फुटलै-

> ''ह-ह चेनसेसूतब किने। अनेरे, नान्हिटा गपमे भरिदिन मड़ियाइत रहलौं।''

बेलबाकेँ अपन खेत-पथार नै,ने हरे-बरद, आ ने दोसर समांगे जे एक समांगक कमाइसँ गुजर चलैत आ दोसर बटाइ खेत करैत। सेहो नै रहै। मुदा भगवान जँ खाइले आ बजैले मुँह चीरलखिन तँ कमाइक चालि चलैले हाथो-पएर देलखिन। किछु होउ, ई पैरुख (पुरुखपना) तँ बेलबामे छइहे जे अपन बाँहुबलसँ गामक मुसहनिपर अधिकार केनिहार अछि। तहू भीर तँ दोसराकेँ नहियेँ आबए देने अछि। आबिओ केना सकै छै हल्लुक माटि ने बिलाइ तकैए भारी भीरमेकिए जाएत। की समुद्र मथन पछाति यएह ने बँटवारा भेल जे माटिक ऊपरका अनका दिस बँटा गेल आ नुका कऽ तरमे रखलाहा बेलबाक हिस्सा भेल। दोसरि साँझ। दिन भरिक टालाक काज उसारि, पोखरि-झाँखड़ि दिससँ आबि चीलमक चौरखीमे बेलबा बैसल। घुसकीपट्टीवाली तइसँ पहिने चौरखीकेँ बहारि, चटकुनी बीछा, एकटा गोइठाँ सुनगा रखि देने छलि। बेलबाकेँ बैसिते तेतरा, झिंगुरा, लेलहा सेहो पहुँचल चारू गोटेक बीच अजीव प्रेम। जेना प्रेमास्पद होइत, तहिना एक-दोसराले जान अरपनिहार। ओना चारूक जिनगीमे दूरिओ आ लगिचो, परिवार बनौनहि छै। अपन-अपन किछु चालिओ-परकीत तँ छइहे। तेतराक पहिलुकघरवालीकेँ

जहिया बम्बैआ छौड़ा (बम्बइमे नोकरी केनिहार) उड़हाड़िकऽ लऽ गेलै तहिएसँजेना दुनियाँसँ विरक्ति भऽ गेलै। मनमे सदिकाल होइ जे बिनु इज्जतक जिनगी ओहने जेहने बिनु गमकक फूल। ओना निर्णए करैमे अगुता जरूर गेल तेतरा। ओ ई नै बुझि पेलक जे पति-पत्नीओक बीच बेक्तिगत चालि होइ छै। जे इज्जतक खाम्हीक काज करै छै। बुझबो केना करैत? ओ अर्द्धांगिनि बुझि सभ किछु अदहा-अदही बुझैत। ओना जइदिन स्त्री घरसँ पड़ेलै तइदिन ओते दुख नै भेलै मुदा मनमे सोग तँ समाएले छै। तैयो जिनगीमे हारि नहियेँ मानलक अछि। हारिओ केना मानैत एकटा गेलै दोसर आनि तीनटा बेटा-बेटीक संग परिवार तँ बनौनहि अछि।

चारूगोटे एकठाम होइते जेना ऑफिसमे टेबुल-टेबुलक काज अलग-अलग अंगक होइत तहिना चारूगोटे अपन-अपन काजमे जुटि गेल। झिंगुरा गाँजा, चीलम निकालि आगूमे रखलक। आमदनी परहक टीपगर जहिना गाँजा तहिना समस्तीपुरक बड़की तमाकुल। ओना बेसीकाल चारूगोटे भाँगे पीऐत अछि। बाड़ी-झाड़ीमे फूलक समए भांगक फूलो झाड़ि लइए, आ वसन्ती गाछ बीछि-बीछि सुखा कऽ रखिओ लइए, मुदा परसुका मुसहनि चारूक सुरखीए बदलि देलक, तँए जेहने टीपगर तमाकुल तेहने गाँजा। ओना चारूगोटेक परिवार एकरंगाहे कनीएकऽतल-बिचल छै।झिंगुराक दोसर आमदनी छै। जे दोसरकेँ नै रहै। ओ रहै जे घरवाली फुदनी गछ-चढ़नी, जे गाछपर चढ़ि जारनि तोड़ै, ओना लग्गीओ रखने अछि मुदा केहनो-केहनो घोड़नाह गाछपर चढ़ि कऽ जारनि तोड़ि लइए। तइले कोनो रोको-राक नहियेँ छै। सूखल जारनिक रोको किए हएत। गछचढ़नीए दुआरे सरही आमक गाछीक ओगरवाहि सेहो लोक दइते छै। आगूमे गाँजा अबिते लेलहा लटबए लगल। बेलबा कटकीसँ चीलम साफ करए लगल। तेतरा गोइठाकेँ तोड़ि घुर जकाँ लगा गूल बनाबए लगल। चीलम साफ कऽ बेलबा गिट्टी सेहो खोखरलक। गाँजा लटा, तमाकुल मिला चीलममे बोझि लेलहा तेतरा दिस बढ़ौलक। गूल चढ़ा तेतरा बेलबा दिस बढ़ौलक। चारूगोटेमे बेलबा सभसँ जेठ। बेलबामे सभसँ प्रमुख गुण छै जे केकरो बनहौटा जन नै छी। ने नीक-बेजएमे आ ने पावनि-तिहारमे केकरोसँ एको सेर आकि एको पाइ कर्ज लइए। कियो भैया तँ कियो गुरूकाका सेहो कहै छै। आगूमे चीलम रखि बेलबा भोग लगबैत फुस-फुसा कऽ मंत्र पढ़ए लगल,‘जेकर जे हक-हिस्सा छह से अपन-अपन लऽ

जा।' तीनबेर पढ़िदम मारि, तेतरा दिस बढ़ौलक। मुदा धुँआ मुहँमे रखि शरबत जकाँ घोड़ए लगल। दम मारि तेतरा जखनि झिंगुरादिस बढ़ौलक तखनि बेलबा मुँहक धुँआ निकालि बाजल-

"परसुका सगुन बढ़ियाँ रहल।"

बेलबाक सगुन सुनि लेलहा खिसिया कऽ बाजल-

"सगुन-तगुन किछु ने होइ छै।"

लेलहाक तामस बेलबा बुझि गेल जे भुखाएल बिलाइ खौंझाइते छै। जखनि ओहो दम मारत तखनि ने मन असथिर हेतै। तँए किछु ने बाजल। ताबे लेलहा हाथ चीलम पहुँच गेल। जिराएल लेलहा रहबे करए तेते जोरसँ दम मारलक जे एकबित धधड़ा चीलमसँ धधकिगेलै। दम मारि जहिना हाथसँ चीलमक धधड़ा मिझेलक तहिना अपनो मनक धधड़ा मिझा गेलै। मुदा तेतरा लेलहाक बातकेँ पकड़ि लेलक। दोहरौनी भाँज जाबे चीलमक शुरू होइ तैबीचमे सवाल फँसि गेल। अपनेमे दू पाटी बनि गेल। दू गोटे कहै जे सगुन-तगुन किछु ने होइ छै आ दू गोटे कहै जे होइ छै। तेहल्ला कियो ने, जेकरा दुनू पंच मानि फड़िछबैत। रूकल चीलमकेँ धुँआइत देखि लेलहा बाजल-

"झगड़ा ने दन चुन-तमाकुल किए बन्न हौ। गप्पो चलतै आ चीलमो चलए दहक।"

जहिना एकघोंट चाह पीला पछाति आकि एक कौर खेला पछाति दोसर अपने अबै लगैत तहिना लुबलुबाइल लेलहा बाजल-

"सगुन-तगुन किछु ने होइ छै।"

दोहरा कऽ बेलबा दम मारि चीलम आगू बढ़बैत बाजल-

"सगुन बड़ पैघ गुण छिऐ, तँए एकरा दोखी बनाएब उचित नै हएत?"

बेलबा आ तेतराक विचार एक बटिया रहै तँए एकदिस भऽ गेल आ झिंगुरा, लेलहाक एक बटिया रहै तँए दोसरदिस भऽ गेल। दू-दू गोटेक पाटी चारूगोटेक बीच बनि गेल। बेलबा विचारकेँ रोकैत झिंगुरा बाजल-

"सगुनकेँ दोखी कहाँ कहै छिऐ, जँ गुण सगुन भऽ जाए तखनि तँ जरुर नीक भेल, मुदा जँ कोनो काजे केतौ विदा होइ आ माछ-दहीसँ सगुन बनाबी एकरा हम नीक नै कहबै?"

बेलबाक प्रश्नकेँ ठमकैत देखि सोंगर लगबैत तेतरा बाजल-

"दुनियाँ बड़ीटा छै, रंग-बिरंगक खेल चलै छै तँए अनका छोड़ह। अपने बात लएह। परसू जे छह-छह पसेरी मुसहनि भेल तेकरा की कहबहक?"

तेतराक बातकेँ लेलहा लपकि कऽ पकड़ैत बाजल-

"जँ माछे-दहीसँ सगुन बनिते तँ मछिबारे आ माले-जाल बलाकेँ सभ किछु भऽ गेल रहितै, दिन-राति ओकरे देखैत-सुनैत रहैए।"

तैबीच पहिल चीलमक गाँजा जरि गेल। गुलाब तकथीपर लटाएल-काटल गाँजा रहबे करै, झिंगुरा चीलममे बोझि आगि चढ़ा बेलबा दिस बढ़ौलक। तइले अपना बीच कोनो मलिनता केकरोमे नै रहै। करणो रहै जे एक-एके दम ने कियो लगबैए। बरबरिक हिस्सा ने भेल।बड़ बेसी हएत तँ कियो दमगर अछि तँ कनी बेसी जोरसँ दम खींच लेत। तइसँ बेसी की करत? मुदा तैसंग ईहो तँ रहबे करै जे पेटगरोकेँ बेसी खेनो पेटे भरै छै आ कम खेनहारकेँ सेहो पेट भरिते छै। धुँआ फेकैत बेलबा बाजल-

"परसू जे अपना सभकेँ ओते मुसहनि भेल ओकरा नीक सगुन नै कहबै तँ की कहबै?"

जेना लेलहाकेँ प्रश्नक उत्तर बुझले रहै तहिना बाजल-

"तूँसभभलहिं जे कहक मुदा हमर मन नै मानैए। तीन सालक बाढ़िमे, धान तँ उपजि गेल मुदा मुसहनि किए निपत्ता भऽ गेल। जे चीजे निपत्ता अछि ओ सगुन केना भऽ पौत।"

लेलहाक बातमे चोंगरा भरैत झिंगुरा बाजल-

> ''दिल्ली गेल छहक, रेलबेटीशनमे जे मूस देखबहक तँबिसवासे ने हेतह जे मूस छी आकिबिलाइ। मुदा गाममे तँए देखिते छहक रौदी होइ छै तैयो मूसकेँ पड़ाइन लगि जाइ छै आ बाढ़िमे तँ सहजे जँ नै भागत तँ डुबकुनियाँ काटि-काटि मरबे करत। ई तँ गुण भेल जे सुभितगर समए भेल तँए धानो उपजल आ मूसक बाढ़ि एने मुसहनिओ भेल।''

तेसर चीलम चलैत-चलैत चारूक मन भरि गेल। कौल्हुका विचार करए लगल। तेतरा बाजल-

> ''काल्हि दू ठाम काज अछि। एकठाम तीनगोरेक आ दोसरठाम दूगोरेक।''

तेतराक बात सूनि झिंगुरा बाजल-

> ''तीनगोटे तँ जोड़ियाएल छी मुदा पाँचम नै रहने दोसर केना हएत?''

बेलबा बाजल-

> ''किए ने हएत? दुनू काजकेँ मिलानी करिकऽ देखहक। टुकड़ी बनै जोकर जँ हेतै ओकरा टुकड़ी बना लेब आ जँ नै बनैबला हेतै ओकरा पूरा कऽ करब।''

बेलबाक बात सुनिते लेलहाक मन मानि गेलइ। बाजल-

> ''बेस तँ भैया कहलहक। दुइएटा ने भऽ सकै छै, या तँ पाँचम केनिहार भाँजऽया तँ काजेकेँ टुकड़ी कऽ दहक।''

तेतराक मन सीकपर टाँगल, तँए खोलिकऽ तँ नै बजैतमुदा मुड़ी डोला-डोला हूँ-हूँकारी भरैत रहए। सीकपर टाँगल ई रहै जे परसू जे मुसहनि खुनलक तइसँ नमहर दोसर रहै। ओना ईहो मनमे उठै जे ऊपरका काज ने हूसि सकै छै, तरका काजपर तँ एकाधिकार अछिए, दोसर कइएकी सकैए। मुदा तँए कि, काज करए जाएब तइसँ दोबर-तेबर बेसी ओइमे हएत, तेकरा पहिने करब आकि जइमे कम हएत, तेकरा करब।

गाममे खेती छोड़ि दोसर काज नै। जे छोट-छोट टुकड़ीमे विभाजित रहैए। छोट-छोट काज रहने कम केनिहारक जरूरति पड़ै छै तँए, बोनिहार-मजदूरक बीच संगठन नै। मुदा शहर-बजारक बीच तँ से नै अछि। पैघ-पैघ कारखाना रहने बेसी मजदूरक जरूरति पड़ैए। तहूमे खेती काज दिने भरिक होइ छै जखनि कि कारखाना चौबीसो घंटा बारहो मास चलै छै। तैसंग ईहो होइ छै जे कारखाना घरमे बनल रहैए जइसँ हवा-बिहाड़िक संग झाँटो-पानिमे चलिते रहैए मुदा से खेतीमे तँ नै होइए। ओना शहरो-बजारमे कारखाना सभ रंग भेने मजदूरक कमी-बेसी होइ छै मुदा जेना-जेना बजार बढ़ैत जाइए तेना-तेना कारखानोक रूप बढ़ल जाइ छै, जइसँ खुदरा मजदूर थौकक रूपमे थकिआइत जाइ छै। जेकर विपरीत गतिए किसानी अछि। जेना-जेना समए आगू बढ़ैए तेना-तेना परिवारो बढ़ै छै आ परिवार बढ़ने खेत विभाजित होइत जाइ छै। विभाजित भेने काजक रूप सेहो छोट होइत जाइ छै। दोसर ईहो होइ छै जे जेकरा बेसी खेत रहल ओ मशीनक सहारासँ काज लइए जइसँ मजदूरक(बोनिहारक) संख्यामे कमी अबै छै। तँए जहिना शहर-बजारक श्रमिक संगठित होइत जाइए तहिना गामक मजदूर अंसगठित होइत जाइए। तैसंग दोसर ईहो छै जे गाम-घरक अधिकतर बोनिहार बन्हुआ बनल अछि जखनि कि शहर-बजारमे से नै छै। ओना शहरो-बजारक रूप बदलि रहल अछि, लोकक (श्रमिकक) काज लोहाक मशीन हथियौने जा रहल छै जइसँ हजारक-हजार हाथ निकम्मा भेल जा रहल छै। जहिना सभ गामक काज तहिना अँहू गामक काज रहने ने काजमे एकरूपता आ ने श्रमिकक बीच एकरूपता। रहबो केना करत, कियो पजेबा घर बनबैए तँए ओकरा सीमेंट-बालु लोहा आ राज मिस्त्रिक जरूरति पड़ै छै आ कियो फूसिक घर बनाबैए तँए ओकरा लकड़ी, बाँस खढ़क जरूरति संगे घरहटियाक जरूरति पड़ै छै। जइसँ जहिना काजक एकरूपता नै रहै छै तहिना हाथ आ हाथक ओजारोक एकरूपता नै रहै छै। मुदा छोटो-छोटो काज रहने किछु-ने-किछु एकरूपता तँ रहिते छै। तीन गोरेक काज खढ़ अँटियेनाइ रहै आ दू गोरेक मटिकटियाक। दुनू काजकेँ टुकड़ी बनौल जा सकै छै। खढ़ अँटियेला पछाति चारिदिन खढ़ सोझ होइले जँकियाएल जाइ छै, तहिना खाधि भरैक सेहो अछि। मुदा एकरंग बोइन रहितो कनी हल्लुक-भारी तँ अछिए। एकटा जहिना बैसारी काज अछि तहिना दोसर ठढ़का काज अछि। तहूमे माटिक

फेकब भारी भेल, जखनि कि खढ़ अँटियाएब मात्र खढ़कँ सेरिया कऽ छोट-छोट आँटी बनाएब अछि। कोल्हका काज सुनि बेलबा बाजल-

''दुनूठाम एके काज अछि आकि दू रंगक?

तेतराकँ दुनू काज बुझले रहै, बाजल-

''काज तँ दू रंग अछिए एकठाम खाधि भरैक छै दोसरठाम खढ़ अँटियबैक।''

बीच-बचाउ करैत झिंगुरा बाजल-

''अपना सबहक बीच बेलबा भैया बुढ़े भेल, आ हमरा देखनहि रहऽ जे सातमे दिन बोखारक पथ पड़ल, अखनो तक नीक जकाँ देहमे तागतिनहियेँ आएल हेन परसुए मुसहनि खुनैकाल देखलहक ने जे केते बेर बैसलौं। तँए हम दुनूगोरे खढ़ अँटियाबए जाएब आ तूँ दुनूगोरे खाधि भरए चलि जइहऽ। जुआन-जवान तँ छहे।''

उठैत-उठैत लेलहा बाजल-

''भैया, एहेन प्रेम रहतह तँए सभ दिन आनन्दे-आनन्द रहतह। नै तँए देखिते छहक?''

देखिते कहैत लेलहा चुप भऽ गेल।बात खुजबे ने कएल? मुदा चीलमक भरल मन छोड़िओ तँ नहियेँ सकैए। झिंगुरा पुछलक-

''की कहलहक?''

लेलहा-

''यएह ने कहलियऽ जे दुनियाँमे केना उनटा-पुनटा होइ छै, जे महिला शरीरसँ पुरुखक अपेछा निरबल होइए ओकरा कारखानाक इंजन आ पुलिसक लाठी हाथमे थम्हा दइ छै आ जे पुरुख सबल होइए ओकरा हाथमे कागत-कलम थम्हा दइ छै। एहने रीतकँ ने वसन्त रीत कहै छै।''

तेतराक आँखिपर निशाँ लटकि गेल, बातक चिड़ौड़ी देखि बाजल-

"अनेरे समुद्र उपछैक कोन चिड़ौड़ीमे लागल छह, ठनका जेकरा माथपर खसै छै से बुझै छै ठनकाक गुण। चलह, अनेरे मनमे खुट-खुटी रखने छह। कौल्हका काज कल्हि देखल जेतै। चेनसँ खाएब, भगवानक नाओं लऽ निचेनसँसुतनाइ छोड़ि अनेरे कौल्हुका चिन्तामे किए माथ धूनब?"

बेलबा बाजल-

"दुनू काज सेरिया लएह, तखिन ओहू मुसहनिकेँ खुनिए लेब।"

बेलबाक बात सुनि तेतरा बाजल-

"भैया, भने खेतमे पड़ल छै। परसुके धान तँ घरे-अँगने छिड़ियाएल अछि ओकरा सदहऽदहक तखनि खुनब।"

तीनू गोटेकेँ जाइते घुसकीपट्टीवाली बेलबा लग आबि बजली-

"संगतिया सबहक भाँजमे पड़ि अहूँ दुइर भेल जाइ छी। कहू जे केतेखान पहिने ठकुरवारीमे घड़ी-घंटा बजलै असतुत भेलै आ अहाँले धैनसन।"

पत्नीक खौंझसँ बेलबा मिसियो भरि डोलल-डालल नै। किएकतँए पत्नीक खौंझक कारण बिनु बुझने डोलि-डालि जाएब नीक नै। बाजल-

"ठकुरवारी ठाकुर सबहक छिऐ आकि हमर छी जे ओकर देखौंस करब। हमर तँ यएह संगतिया सभ ने छी जेकरा संगे जीबै-मरै छी।"

निरुत्तर भेल घुसकीपट्टीवाली पाछू नै हटली, पाशा बदलि लेलनि। जहिना शिवजी पाशा बदलि शिवानी भऽ गेला, तहिना। पाशा बदलैत बजली-

"अन्न तीमनक सुआद टटकेमे होइ छै, आकि सेराकऽ पानि भऽ जाइए तखनि होइ छै।"

बेलबोक मन हल्लुक रहबे करै,तँए अवसरकेँ हाथसँ गमाएब नीक नै बुझलक। किएकतँ गमौनाइ ओहने होइ छै जेहने डारिक चुकल बानरक होइ छै। बाजल-

"लोक सुआदले खाइ छै आकि पेट भरैले खाइ छै। सरेने जँ ओकर गुणो निकलि जाए तखनि ने?"

पतिक बात सुनि घुसकीपट्टीवालीक मनमे एलनि, एना जँ बात छिड़ियाएत तखनि तँ काजक गप बिसरिए जाएब। एक तँ ओहिना ओहन बिसराह छी जे आन तँ कनी मनो रहैए जे काजे बिसरि जाइ छी। काजे नै तँ राज की? हृदए खुशीसँ भरलतँए घुसकीपट्टीवाली सोचलनि जे जे बात पति बजता तेकरा जँ मुँह-नांगरि जोड़ब तखनि ने, जँ से नै जोड़ि सोझहे अपने मनमे दोसर काज आबि गेल तखनो तँ गड़बड़ाइए जाएत। घरो कि घर जकाँ रहए तखनि ने,सेतँ सतरहटा भुरकी हरिदम रहिते अछि। हाथमे पानिक लोटा बढ़बैत घुसकीपट्टीवाली बजली-

"लिअ, अखने कलपर सँ अनलौं कुर्डा कऽ लिअ।"

आन दिनसँ दोसर रंग बात सुनि बेलबाक मन खुट-खुटाएल। आन दिन कहाँ पानिक बात बजै छेली, आइ किए बजली! जरूर किछु रहस्य हेतै! मुदा इशारोमे जँ रहस्यकेँ नै रखल जाएत, तखनि तँ ओ तेना तरेमे दबा जाएत जेना कोनो सीखे-लीखे ने रहत। आँखि तँ पत्निक आँखिपर रहै मुदा नजरि नजरि दिस बढ़ौलक। कुर्डा कऽ ओसारपर बैसिते घुसकीपट्टीवाली घरसँ थारी निकालि आगूमे देलखिन। घरदेखिया थारी जकाँ साँठल थारी देखि बेलबाक मनमे भेलै जे बिनु कारणे टिटही थोड़े लगै छै, जरूर किछु बात छिऐ। लगले मन हुमरलै हम कि कोनो घटिया घरदेखिया थोड़े छी जे खेनाइयए-पीनाइमे केकरो गरदनि काटि लेबइ। भातक ऊपरमे पाँचो कचौड़ी तेना पसारल जे आगूमे सानैओक जगह नै। भात सानब छोड़ि बेलबा पहिल नम्बरक कचौड़ी उठा (पहिल नम्बर वएह ने जे आगूमे रहै) हिया-हिया देखए लगल। ई तँ पुड़ी जकाँ लगैए मुदा छी तँ कचौड़ीए। कचड़ी नै छी आ ने पकौड़ी छी, छी तँ सोलहन्नी कचौड़ीए। किएकतँ ओहिना खेसारीक सौंसका

दालि, मिरचाइक टुकड़ी आ पिऔजक टुकड़ी टक-टक तकै छै। नून-तेल ने तरे-ऊपरे सटि गेल अछि आरो तँ तकिते छै।

कचौड़ीकेँ निहारि-निहारिदेखैत पतिकेँ देखि घुसकीपट्टीवालीक छाती चहकए लगलनि। बजली-

"ई तँ ओही भगवानकेँ धैनवाद दियनि जे बेटाक पुसौठ हएत, नै तँ जहिना तीनसाल नै केलौं,हाथ-पएर फाटए लगलै तहिना अहूबेर फटितै।"

तीनसाल पूर्वक पुसौठ बेलबा बिसरि गेल। बिसरिओ केना ने जाएत। एक तँ ओहिना गजेरी-भगेंरी गाँजा-भांगक प्रेममे दुनियाँ बिसरैले तैयार रहैए, तैपर बेलबा संगतिया छीहे। संगितियाक जिनगी तँ ओहन जिनगी होइ छै जइमे दस दिसक धार-नाशीक संग गंगा-जमुना सन धारक पानि मिलि समुद्र सिरजन करैए। बाजल-

"पुसौठ केकरा कहै छै?"

लहकी देखि घुसकीपट्टीवाली अवसरकेँ हाथसँ नै छोड़ि बजली-

"एहने मुनसा ने धिया-पुताक पावनि बिसरि धियो-पुताकेँ बिसरि जाइए।"

तैबीच बेलबा पहिल कौर तँछुच्छे दालि-भातक खेलक मुदा दोसर करमे जे मिरचाइक टुकड़ी मुँहमे पड़लै से सुसुआते बाजल-

"पावनिमे कि सभ होइ छै?"

धनलक्ष्मी जकाँ घुसकीपट्टीवाली बजली-

"किच्छो ने होइ छै। जे होइ छै तइसँतँ घर भरल अछि, किच्छोकथीताकए पड़त।"

पत्नीक धारक प्रवाहमे बेलबा बाजल-

"शुभ काजमे अनेरे देरी करब कोन कबिलती भेल, तइले पुछैक कोन जरूरी अछि। अच्छा ई कहूँ जे पावनिमे की सभ हएत?"

जहिना छोट बच्चाकेँ माए-बाप सिखबै छथि तहिना बिकछा-बिकछा घुसकीपट्टीवाली बाजए लगली-

“पावनिमे किछु ने होइ छै आ सभ किछु होइ छै।”

उड़ैत चिड़ैक बोल जकाँ बेलबा किछु थाहि नै पबै छल। तँए जहिना धार थाहैक नाहक लग्गा होइ छै तहिना थाहैत पुछलक-

“खेबा-पीबामे की सभ होइ छै?”

“अगबे चाउरक चिक्कसक बगीया बनै छै, ओही लऽ कऽ बाल-बच्चाक हाथ-पएरक पुसौट होइ छै।”

“घीओ तेलक काज पड़ै छै?”

“घी-तेल किए कहै छिऐ, नूनो-मिरचाइक काज नै पड़ै छै।

“चिक्कसक मुँह-नांगरि बना,छतिया-पीठिया बनौल जाइ छै, टटका पानिमे नहा कऽ चुल्हिपर सिद्ध कएल जाइ छै। सिद्ध होइते भऽ गेल बगिया।”

“एके रंगक होइ छै, आकि दोसरो-तेसरो रंगक?”

“एकटा सुच्चा भेल, दोसर कुरथीओ दालि दऽ कऽ आ तेसर गुरो दऽ कऽ बनौल जाइ छै।”

“तब तँ नामो सबहक हेतै।”

“छइहे कि, जहिना आमक गाछ भेल, आ दालि-दलिहन भेल ई जड़ि भेल। जड़िक पछाति अमुख आम आकि अमुख दालि बनैए। तहिना बगिया जड़ि भेल। दलिबगिया,गुरबगिया किसिम भेल।”

“एकदिन तँएके रंगक ने खाएब, दोसर-तेसर?”

“एना अनाड़ी जकाँ किए बजै छी। पहिलदिन टटका खाएब, दोसर दिन बसिया खाएब, तेसरदिन दलिबगिया खाएब, चारिमदिन गुरबगिया खाएब।”

“गुर दालिए जकाँ केना रहत?”

“खेबै तखनि देखबैतँ केहेन रसगर छै। एते पघिलल रहत जे छातीमे चुहुटि कऽ पकड़ि लेत।”

“जखनि चारिदिनक ओरियान एकेदिन केने भऽ जाएत तखनि अहाँकेँ चारिदिनक छुट्टी दऽ दइ छी। तैबीच कुशेसर आकि सिंहेसर आकि जनकपुरसँ घूमि आउ।”

❍❍❍

केलवाड़ी

पूर्णिमा हिसाबे अदहा कातिक टपि गेल मुदा सकराँइतिक हिसाबे पचीस दिन पछुआएल अछि। रातिए दिवाली भेल, परीवक पखेबो आ धनमनतरि सेहो छी। काल्हि भरदुतीओ आ चित्रगुप्तो छी। साठि बर्ख पार केला पछाति जीवन काका नव जिनगी पाबि केलवाड़ी पहुँचला।

चारि कट्ठा चौमासा (पानि भेटने) वाड़ी-फुलवाड़ी केलवाड़ी बनि हँसैत देखि बीच केलवाड़ीमे बैसि, वृन्दावन जकाँ कखनो नजरि उठा कोनो घौरपर दैत तँ कखनो पूर्बाक लहकीमे लट-पट सट-पट करैत भालरि सभकेँ सेहो देखैत रहथि। लहकीमे लहकि जीवन काका अपन संगी-केलवाड़ीक परिचए-पात करए लगला। बाबाक लगौल आमक गाछीकेँ अदहा उपटा केलवाड़ीमे जिनगी देखि रहल छी। आमक गाछीमे बबो अहिना ने देखै छल हेता यएह धड़-धरती ने कुलो-खनदान, उपजो-वाड़ी, खेनाइओ-पीनाइकेँ अपना पेटमे समेटि कऽ रखने अछि। बाबाक बराबरी कहाँ कऽ पाबि रहल छी। पछिला सर्वेमे जेते हुनका खेत छेलनि तेते तँ हमरो अछिए। मुदा सबहक अपन समए होइ छै, तहीक कर्तो-धर्ता ने छी। हुनका अमलदारीमे गाममे एकटा वैद्य छला। वैद्य की छला अखुनका करखन्ना जकाँ छला। अपने हाथे मंडूल बनबै छला, जे पौण्ड रोगक रामवाण छेलै। सीतामढ़ीसँ पूर्णिया, नेपालक झँपा जिलासँ लऽ कऽ वीरगंज होइत गंगाक उत्तरी छोर धरिक बजार छेलनि। रोगीक आवाजाही छेलनि। जहिना इलाकाक लोक वैद्य जीकेँ जनैत तहिना रहैक जगह बाबाकेँ सेहो जनैत रहनि। अनका अपेक्षा स्थिति बहुत नीक नै रहनौं, दरबज्जाकेँ दरबज्जा बना रखने छला। अनठिया-बहरबैया लेल कोनो रोक-राक नै, मुदा तँए कि गामो ओहने छल। नै। जातीय रंग-रूप नीक जकाँ गछाड़ने छेलै। बाबासँ आगू बढ़ि अपनापर नजरि पड़िते जीवन काका चौंकला, की अपने जकाँ पोतो मनमे रहबै, नै। अहिना ऊहो सोले-साल बरखी आ पितृपक्षमे मन पाड़त! मुदा एना भेल किए? अपना अछैत जुआन बेटा काज करै जोगर भेल, बाहर कमाए कहलिऐ। परिवारमे अन्न-पानिसँ

लऽकऽ रूपैआ-पैसा धरिक काज पड़िते छै। किसानी जिनगीमे नगदी खेती नै भेने पाइक समस्या छैहै। पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, दबाइ-दारू, लत्ता-कपड़ा सभ तँ कीनै पड़ै छै।

अखनि धरि जीवन काका अपनाकेँ अपन सीमानक भीतर बुझै छला तँए मनमे कोनो लहरि नै उठै छेलनि। उठबो केना करितनि? जाबे समुद्र आकि मरूभूमिमे जुआरि नै उठैत ताबे केना लहरि-लहरि लहराइत वायुमंडल दिस बढ़ैत। ओना खुशीलाल आज्ञाकारी बेटा छन्हि। तैबीच वैचारिक मनभेद केना बनल से बुझित जीवन कक्काक मन बगदि गेलनि। जहिना पोसो हाथी बगदि जाइत तहिना। भेल ई जे खुशीलालकेँ एते छूट तँ दाइए देने छेलखिन जे नीक काज बिना केकरो पुछनौं करब अधला नै। आज्ञाकारी बेटा केतौ सीमाक उल्लंघन नै केलनि, मुदा सीमाक उल्लंघन तँ भाइए गेल। नव पद्धतिक पढ़ाइ एकभग्गू भऽ गेल अछि, जखनि कि जीवन काका समग्रतामे बिसवास करै छथि। मुदा जीवन काकाकेँ अपनो मन उग-डूम तँ करिते छन्हि जे बेटा ई बात अखनि धरि किए ने बूझि पौलक जे भँसि गेल। माए-बाप जीबैतै दिशा ने बेटा-बेटीकेँ सिखौत-पढ़ौत आकि जिनगी भरि संगे-संग रहि बेर-बेर सिखबैत रहत। जँ से हेतै तँ जिनगीओ आ कालखंडोक बँटवारा केना हेतै। की आब किछु कहब उचित हएत? उचित तँ ओइ दिन तक होइत जइ दिन काज करैले डेग उठबए लगल, अन्तो-अंत धरि जँ कहैत। मुदा आब?

गंभीर प्रश्न जीवन काकाकेँ गंभीर परिस्थिति पैदा कऽ देलकनि। जँ बताह जकाँ बड़बड़ा बेटोकेँ कहबै, पुतोहुओकेँ कहबै आ जँ कहीं टोकारा पाबि खिसिया कऽ गाम दिस टहलि समाजोकेँ कहबै, से उचित हएत? काजक तँ फले काजक पूर्णता छी। ऐठाम तँ ओहूसँ बेसी परिस्थिति चहकि गेल अछि। तेहेन पढ़ाइ-लिखाइ भऽ गेल अछि जे अखनि ने मोटगर पाइ देखै छै, मुदा रिटायर करिते अदहा भऽ जाएत, आ बेटा-बेटीक जिनगी तेते भारी भऽ जेतै, जे सम्हारि नै पौत। एहेन परिस्थितिमे कियो माए-बापकेँ देखत आकि बेटा-बेटीकेँ। उगैत सुरुजक दर्शन ने शुभ होइ छै आकि डुमैत सुरूजक। तखनि? जेकरा मूस जकाँ बिल खुनैक लूरि नै होइ छै तेकरा लेल दुनियाँ जे होउ मुदा जेकरा खुनैक लूरि हेतै ओ सीमा किए टपत। बाढ़ि औतै ऊँचकापर चलि जाएत रौदी हेतै नीचका दिस बढ़ि जाएत। यएह

सोचि जीवन काका चारू कट्ठा खेतकेँ, जे आमक गाछी तोड़ि, केलवाड़ीओ आ तीमनो-तरकारीक चौमास खेत बना लेलनि। खेतोक लीला की कृष्ण लीलासँ कम अछि, रौदी भेने जीरो, सुभ्यस्त समए भेने हीरो। केतौ तीनिओ बीघा बीघासँ कम गोबरबैए तँ केतौ बीघा पाँच बर गोबरबैए।

चारू कट्ठाक बीच एकटा कल गड़ा लेलनि, चारूकात निम्मन हाता कटा, माटि ढहै दुआरे साबे आ आड़िपर अनरनेबा, नेबो, दारीम, सरीफा इत्यादि छोटका गाछबला फलक रोपि देलखिन। डेगसँ नापि एक-एक लग्गीक दूरीमे केरा गाछ सोहो रोपलनि। जे चालीस बीट भेल। जेठुआ रोप भेने कातिकमे दू-दूटा पौंच गाछ देलक। मघारि आबि फूटि गेल। कुहरि कहारि कऽ घौर भेल। खैर जे भेल, भेल तँ। वएह बीट तेसर सालमे पहुँच गेल। साठिटा घौर पनरहसँ पचीस हत्थाक भेलनि।

एक तँ ओहिना मन तुरुछाइत रहए जे आइए झंझारपुरक हाटो छिऐ आ पखेब पावनिओ। हाटो तेहेन जे सुति उठि आँखि मीड़िते विदा होउ। केना चौरीसँ करमी लत्ती आनब, सोनहौनक ओरियान करब। जखनि दुनू काज लोके हाथक छी तँ आगूओ पाछू कएल जा सकै छेलै। खैर जे होउ। गर अँटबैत झंझारपुर हाट गेलौं। केरोक सूर-पता लगबैक छल आ पावनिओक वस्तु-जात कीनैक रहए। हाटपर पहुँचलो ने रही आकि आढ़तिबला भेट गेल। पुछलिऐ-

“कारोबारक की हाल-चाल अछि?”

मनमे एक्को मिसिया नै रहए जे अधला नजरिसँ पूछि रहल छिऐ। तीन माससँ झंझारपुर गेलो नै छेलौं। हाल-चाल सुनिते गुम्हरि कऽ बाजल-

“सभ बूडि गेला गंगा नहए आ ई रहि गेला गाममे।”

परिचित लोकक मुहँ कठानि बात सुनि अवाक् भऽ गेलौं। आगू बढ़ि भाँज लगल जे हाजीपुरसँ लऽ कऽ भागलपुर धरिक बीचक जेते अछि सभ लगा कऽ केरा दहा गेल। जे केरा खुदरा-खुदरी गाम धरि पकड़ि नेने छल। की गाममे केरा सन फलक जेकर खेतीओ असान, तेकर कीनिनिहार किसान बनि गेल छथि! झंझारपुरसँ विदा होइते मनमे उठल जे केरा घौर छौड़ाक

कबुला छै, जँ से नै भेलै तँ छौड़ाक माए घरोमे ने रहए देत। मन ठमकल, एहेन कबुले की जे सौंसे घौर कबुला कऽ लेलनि। जे कीनि कऽ खाइए ओ दर्जनक हिसाबसँ कीनत आकि घौरे कीनि लेत। आइसँ पाँचे दिन छठिक रहल तहूमे तीन दिन पहिनेसँ शुरूहे भऽ जाइए। जखनि चीजो ने हाट-बजारमे छै तखनि एहेन की हमहींटा छी आकि अपन अड़ोसीओ-पड़ोसीओक गति सएह हेतनि। पत्नी बड़ खिसिएती तँ पाइ आगूमे फेक देबनि। पाइ देखि जखनि दोसर-तेसरसँ भाँज लगतनि, अनेरे ने उचिती-विनती कऽ छठिक विसर्जन करती। दलदलसँ सक्कत माटिपर पएर पड़ल। मन थीर भेल। मुदा ई तँ अपना मनमे छल। झंझारपुरसँ अबिते पत्नी झपटि कऽ बजली-

> ''जेकरा काज करैक छिछा रहै छै से ने काज करैए आ जे सदिकाल जेबीए टोबत ओकरा बुते देवता-पित्तर राखल हेतै।''

अपन हारल की बाजब। अनधुन बिना कौमा-फुलस्टोपक बजैत-बजैत बजा गेलनि-

> ''गामेमे जीवन काका केराक वोन लगौने छथि।''

हारल मन घूमि तकलक। बजलौं-

> ''एना किए छान-पगहा तोड़ने जाइ छी। अखनि पाँच दिन पावनिमे बाँकी छै। तैबीच की कोनो ओछाइन धऽ लेब। आकि छुटल-बढ़ल जे काज अछि तेकरे जोड़ियाएब।''

मुदा मानि गेली। खेला-पीला पछाति नीनो किए हएत बड़दकेँ सोनहौन पिऔनाइ रहए, गरदामी देनाइ रहए, तैसंग धानो काटि कऽ नै अनने रही, ऊहो आनए पड़त। पान ओ (पत्नी) पीसि देती मुदा लगा कऽ तँ अपने दिअ पड़त। जेते काल नीन घेराएल रहल तेते काल टटका गपो सभ गपकेँ ठेलने रहल। तँए कखनो मन हुअए जे एहेन कबुला केनिहारिकेँ चारि थापर लगा दियनि। कहू जे एहनो हाड़-काठबलाकेँ कबुला-पाती केने धिया-पुता हएत।

बरदकेँ सोनहौन-तेल पीअबैत गरदामी पहिरबैत, सींगमे तेल लगबैत, मुँहमे पान खुआ दूधाएल धान, आगूमे दैत केराक भाँजमे जीवन काका ऐठाम विदा भेलौं। दरबज्जा खाली देखि मनमे उठल, लोक या राजधानीएमे रहैए

आकि वोनेमे। जखनि दरबज्जा सून छन्हि तखनि केदलीए वोनमे हेता। तहूमे एक तँ छठिक लहकी दोसर तेहेन इलाकाक केरा वोन दहाएल जे अनेरे एकक तीन हेतनि। चारूकात चकोनो होइत करजान पहुँचिते जेना मने हरा गेल। कहू जे एकटा घौर लेल एक दुपहरिया हरान भेनौं, नै भेल। जेकर वोने देखै छी। जइसँ तरपट्टीओ सुनए पड़ल। मुदा परिवार तँ परिवार होइ छै, एहेन-एहेन बातक जँ मद्दी हएत तखनि परिवार ठाढ़ रहत। भूतलग्गू घर जकाँ अनेरे ढनमना कऽ खसि पड़त। केलवाड़ीक हत्तापर ठाढ़ होइतै भेल जे बिना चीजबलाकेँ पुछने आगू डेग उठाएब उचित नै। मुदा देखबो तँ नहियेँ करै छियनि। गर लागल। बजलौं-

“काका छी यौ, काका?”

जहिना रातिमे ओछाइनपर पड़ल अनभुआर बोली सुनि अकानए लगैए मुदा उत्तर दोहरेला पछाति तेहरेलोत्तर दइए। जीवनो काका बोली अकानए लगला। बुझलेहे जकाँ दोहरी अवाज दैत डेग आगू बढ़ेलौं एक तँ केराक वोन, गाछो अवाज रोकैत आ पातो। तैसंग शर्बतक गिलास जकाँ अवाजोकेँ दुनू घोड़िते अछि। एक तँ निशाँएल जकाँ जीवन काका बैसल रहथि। बहरबैया अवाजकेँ नीक जकाँ नै अकानि सकला, सहरगन्जे बजला-

“के छिअ, आबह।”

आबह सुनि मनमे हूबा भेल जे हाजिरी दर्ज भाइए गेल। जीवन काका बिसरि गेलौं। बिच्चेमे केरा घौर विचारकेँ बोहिया देलक। साठि-सत्तरिटा कटैबला केराक घौर। किछु तरकारीबला आ किछु फुल्लीओ छइहे। जइमे कोशा लगले छै। देखैत दोसर कोन दिस पहुँचलौं आकि काका बोली देलनि-

“के छियऽ केम्हर गेलऽ।”

बाढ़िक इलाकामे जहिना लोक पुक्की-पाड़ि-पाड़ि जिनगीक उपस्थिति दर्ज करबै छथि, तहिना हमहूँ बीटे-बीटे, दोगे-दोग देखैत पूबरिया-उत्तरबरिया कोण दिस बढ़ि गेलौं। बढ़ि की गेलौं, केरा अपन जिनगीक कथा देखबए-सुनबए लगल। किछु उत्तर नै देब उचित नै बूझि बजलौं-

"काका, तेहेन वोन अहाँ लगा देने छिऐ जे बौआइ छी।"

"अच्छा बोली अकानैत चलि आबह।"

लग अबिते जेना बूझि पड़ल जे जीवन काका जेना सोनाक घैल पौने होथि तेहने खुशी देखलियनि। खुशीओ केना ने हेता, घोंग्हीसँ मोती, कोयलासँ हीरा होइते अछि तखनि महि किए ने अकास उड़ए। जे केहेन सोंगर लगौलासँ काज चलत। जँ से नै भेल तखनि तँ अनेरे बनलो काज बिगड़ि जाएत। मुस्कीआइत तीर फेकलौं-

"काका, बुढ़ाड़ीओमे जेना केंचुआ छोड़ने होइ तेहने चकचकी बूझि पड़ैए।"

हमर बात सुनि काका गुम भऽ गेला। अगुता कऽ ओहन जकाँ नै जे कहबै सासुरक सुपारी खुआबह। तँ कहत जे तीनटा सारिओ अछि। केचुआ छुटिते ने नव-जीवन भेटै छै। मुदा बातकेँ बदलैत बजला-

"पहिने ई कहऽ जे अगुताएल तँ ने छह? तेहेन अखनि पावनिक लदान पड़ि गेल अछि जे दमो माड़ैक छुट्टी नइए।"

काजो अपने रहए, काज तँ काजे छी। एकक पछातिओ दोसर हएत, तइले झंझारपुरक समए अछि आ ऐठाम नै अछि। बात बिहियबैत कहलियनि-

"काका, हम तँ छेहा बेरोजगार छी। अनेरे भरि दिन ढहनाएल घुमै छी।"

हाथक इशारा दैत बैसबैत बजला-

"बौआ, केचुआ छोड़ैक लूरि जेकरा रहै छै वएह ऐ धरतीक सुख बुझै छै। अपना ऐठाम केराक खेती अदौसँ होइत आबि रहल अछि। जेहने गुणगर तेहने पेटभर। मुदा ऐठाम तँ पौष्टिक वस्तुक उत्पादन होइ वा नै होइ मुदा जन-जनकेँ पोष्टिक अहार भेटि रहल छै। जइसँ स्वस्थ शरीरक निर्माण भऽ रहल छै।"

साँस छोड़िते मन पड़लनि जे किम्हर आएल से तँ पुछबे ने केलौं। आ अनेरे सासुरसँ भागल स्त्रीगण जकाँ भटभटाइ छी। मुदा लगले मन

सम्हरलनि। दुआरपर आएल अभ्यागतकेँ चट दनि पूछि देब जे केम्हर एलौं, सेहो तँ नीक नहियेँ। भने चाससँ समार भऽ गेल। एक रस भेने ने अनुकूलता अबै छै, ओना जँ ओहन वस्तुक शर्बत बनाएब जेकरा छानए पड़ैत तखनि अनेरे किए एक बेर पानि छानू दोसर बेर शर्बत। एक्के बेर किए ने छानि एक रस बना लेब। बजला-

> ''बौआ, केम्हर एलह, से पहिने बाजह। ई काज भेल, काजकेँ कखनो टाड़ैक वा अँटकबैक काशिश नै करी। ई दीगर भेल जे कोन काज केहेन काज।''

जहिना तीन कोनियाँ तीर आकि बंशीक कोण अपने दिस बैसला जकाँ रहै छै जे प्रवेश काल तँ पैसि गेल मुदा निकलै काल खोखरनहि औत। जीवन काकाकेँ मचकीपर चढ़ल देखि आस मारलौं। मुदा केकरोसँ किछु मंगैसँ पहिने केकरो दोख अबै छै। मन घुड़िया गेल जे जँ अपन दोख लगा कहबनि तँ सोझहा-सोझही गप केना करब, जँ पत्नीक दोख लगाएब ऊहो नीक नै हएत, किछु छथि तँ अर्द्धांगिनी तँ वएह छथि। जँ समूहमे कबुलाक चर्च करब तँ मुहेँ छिऐ जँ कहीं बजा गेलनि जे एहेने पुरुख छह जे कबुला-पाती केने धिया-पुता होइ छह। असमनजसमे पड़ले रही आकि काका बजला-

> ''समाजमे ने केकरोसँ लजाइ आ ने छिपाइ। आन किए बुझै छह। एते केरा जे लगौने छी से अपने खाइले, पाकल घौर पाँच दिन अँटकै छै। जँ चरि-चरि छीमी खाएब तँ बीस छीमी भेल। एहेन-एहेन हत्था सभ अछि जइमे पचीस-पचीस छीमी छै। तोहीं कहऽ जे एको हत्था अपना बुते सठत।''

रसगुल्ला रसक बोरमे डुमल कक्काक बात सुनि जेना अपने हँसी फुटि गेल। कहलियनि-

> ''काका, छठि पावनि छिऐ, एक घौर केरा लेब। आन साल तँ दू-तीन हत्थाक घौर लऽ कबुला पूरा लइ छेलौं, जइमे बारह-चौदहटा छीमी रहै छेलै, मुदा ऐठाम तँ ओहन घौरे ने देखै छिऐ?''

हम तँ अपना मने कहलियनि। ओ की बुझलनि से तँ वएह जानथि। मुदा अपनोसँ नम्हर हँसी हँसि बजला-

''जा जे घौर मन हुअ ओ काटि लिहऽ।''

सुनि तँ लेलौं मुदा मनमे भेल जे कहीं काका भक्की मारलनि तखनि तँ जेतेमे पावनि हएत, तेते केरेमे चलि जाएत। मुदा मन पड़ल जे अपनासँ श्रेष्ट लग चुपे रहब नीक। जे कहता ओकरे सरि-सुर करैत अपना अनुकूल बनाएब नीक रहत। चुप देखि जीवन काका बजला-

> ''सुनह, टटका केरामे पानि निकलै छै जे देहो-हाथकँ आ कपड़ो-लत्ताकँ दगा दइ छै। तँए पहिने केरे काटि लए जाबे दूध सुखतै ताबे गपो उसरि जाएत।''

कक्काक बात सुनि भरोस भेल जे केरा तँ भाइए गेल, दाम केना पुछबनि। जँ दाम लेबाक रहितनि तँ गनि नेने रहितथि, से गनबे ने केलनि। गर भेटल, पुछलियनि-

''छीमी-हत्था कहाँ गनलिऐ?''

जेना ठोरेपर रहनि बजला-

> ''जँ एक साँसमे गामपर लऽ जेबह तँ ओहिना भेलह। नै तँ जेते पावनिक फीरिस्तमे जे हुअ ओते दऽ दिहऽ।''

केराक घौर छोड़ि दुनू गोटे बैसलौं। नफगर काज देखि धैनवाद नै देबनि सेहो नीक नै। बजलौं-

''काका, गामक टेक रखि लेलिऐ।''

टेक सुनि काका गुम भेला। की टेक? पाशा बदलैत बजला-

> ''बौआ, अपन धरती एकसँ एक अन्न, फल, फूल उपजबैक शक्ति अपना गर्भमे रखने अछि। तखनि तँ जेहने दुहनिहार तेहने ने कामधेनु। चालिस बर्ख पूर्ब केरा खेती करै छेलौं, मुदा खोप सहित कबुतरो चलि गेल छल जेकरा घुमा कऽ लाबलौं।''

जिज्ञासा भेल। पुछलियनि-

“से की?”

विह्वल होइत काका बाजए लगला-

“जहिना देखबहक जे जामुनक मासमे लोक जामुनक बीआ रोपैए, आम रौपैए, अनारसक मासमे अनारस रौपैए तहिना अपना ऐठाम सरसठिक रौदीक पछाति जे उथल-पुथल भेल तइमे करो खेती आएल। बाहरी किस्मक केरा, एकमौसमी। जहपटार लोक अपन पुरना करजान सभ उपटा-उपटा लगा लेलक। जे केरा अपना ऐठाम बहुत पहिनेसँ होइत चलि आबि रहल छल, ओ उपटि गेल। रोपाएल ओ जे समायानुकूल नै छल, अपनो गेल आ जेहो आएल सेहो गेल। मिथिलांचलक केदली वन महराइ गाबए लगल।”

जीवन कक्काक विचारमे रस भेटल। पुछलियनि-

“हेबा की चाहै छेलै, काका?”

प्रश्न सुनि गुम भऽ गेला। किछु काल पछाति गुम्मी तोड़ैत बजला-

“दिनो, उनहल जाइए, केराक दूधो सुखि गेल हेतह।”

प्रश्नकेँ टाड़ैत देखि दोहरबैत पुछलियनि-

“काका, जखनि एते गप भाइए गेल, तखनि कनीक्के पुछड़ी किए छोड़ि देलिऐ?”

ई बुझले ने रहए जे बिलमे चलि गेला पछाति जँ साँपक नांगरि पकड़ि खींचौ चाहब तँ नांगरि टूटि जाइ छै मुदा साँपक मुँह नै निकलै छै। विस्मित होइत बजला-

“बौआ, जे कहबह, ओ तँ काइए नेने छी, देखिते छहक। मुदा एकटा बात तैयो रहि जाइए। अपन जे पुश्तैनी, जुग-जुगसँ अबैत वस्तु छल आकि अछि ओकरा अनुकूल समए नै भेटलै, जइसँ आगू बढ़ैत। जे एहेन बाधा उपस्थित कऽ देल गेलै जे धात्री गाछ तर भोजन केरा पातक जगह बजरूआ थारीमे होइए।”

उठि कऽ विदा होइत पुछलियनि-

"काका, केराक किस्मक नाओं की भेल?"

"ओना केते गोटे मर्तमान कहै छथि, मुदा सहरगंजा नाओं छिऐ मरीचमान।"

दोहरबैत पुछलियनि-

"बजारसँ तँ पकले घौर लऽ अबै छी, एकरा तँ पकबऽ पड़त।"

अदहा बात मुहेँमे छल आकि बड़बड़ए लगला-

"देखह, अपना ऐठाम माटिक तरमे गोरि धानक भूसा, डाबामे दऽ धूकि कऽ पकौल जाइ छै, जे नीक होइ छै। बजारक केरा, तरकारी (टमाटर) आ आम सभकेँ कारबेटसँ पकौल जाइ छै, जे नीक नै होइ छै। अखनि पाँच दिन बाँकीए अछि, काल्हि गोरि देबहक तँ समैपर पकि जेतह।"

केरा घौर उठा आँगन अनलौं। जेते गोरे झंझारपुर हाटसँ घूमि-घूमि आएल रहथि, एक्के-दुइए सभ पुछए लगला। मुदा एकटा धोखा भऽ गेल रहए जे पत्नी मन पाड़लनि। मन ई पाड़लनि जे छीमीमे चुन कहाँ लगौलिऐ, कियो देखि नेने हएत तँ पाकत?

पत्नीक बातक कोनो मानियेँ ने लागल। एक तँ कोनो माससँ अनुकूल, केरा पकबैक समए कातिक होइ छै। मौसम परिवर्त्तनक समए रहै छै। तैठाम चुन की करत?

मुदा अपन अनुकूल बनबैले तँ किछु भकमोड़ अबिते छै, बजलौं-

"ऐ बेर छठि परमेसरी खुशी छथि, देखै छिऐ शुरुहेसँ केहेन बाट धड़ा देलनि।"

अपना जनैत तँ अनुकूल हुअ चाहलौं मुदा से भेल नै। बजली-

"लोकक नजरि नीको होइ छै, अधलो होइ छै। मुदा यएह दुनू नीक अधला तेते विआन करैए जे नीक तँ केते नीक आ अधला तँ

केते अधला। पावनिक नाओंपर एक दिन केरा खेनहि की। एक दिनक भोजे आ राजेक की महत छै।''

पत्नीक बात सुनि अनुकूल नै देखि, पाशा पलटैत बजलौं-

''आब कथी सभ बाँकी रहल, से मन पाड़ि दिअ।''

❍❍❍

स्वरोजगार

एक तँ अहुना शिक्षण संस्थानक वातावरण देखि रविशंकरक मन कौलेजक पढ़ाइसँ उचटि गेल, तैपर परसुका किरिया-कलाप तँ आरो मनकेँ तोड़ि देलकै। भेल ई जे कौलेजमे विश्वविद्यालय स्तरक परिचर्चा छात्र सबहक बीच भेल जइमे रविशंकरकेँ आमंत्रित नै कएल गेलै। बनल-बनाएल परिचर्चाक दिशा निर्देश, बनल-बनाएल कर्ता-धर्ता आ बनल-बनाएल पाठक सुनिनिहार। आमंत्रित नै करैक कारण रहै जे कौलेजक वातावरणमे ओ चुप्पा बताह आ गोंग बूझल जाइत। जइसँ संगी-साथीक बीच अधिककाल रविशंकरक बतहपनीए चर्च होइत। जहिना बघबा खाए वा नै खाए लोहारक लोहराइन महकबे करत, तहिना रविशंकरोक रहए। एकटा अवगुण रविशंकरोमे जरूर रहै जे हाइ स्कूलमे जेते विषय पढ़ने छल ओते विषयसँ सम्बन्ध बनौनहि रहि गेल। ऐ बातकेँ मनसँ हटा नेने छल जे हाइ स्कूलक किछुए विषय कौलेजमे रहि जाइ छै, सेहो दिनो-दिन घटिते चलि जाइ छै। अही सीमाक उल्लंघनक चलैत छात्रे नै शिक्षकोक बीच चर्च रहए। जखनि कि रविशंकरक स्पष्ट समझ रहै जे भाषा कामधेनु छी। जे सदिकाल दूध दऽ सकैए। एकर माने ई नै जे निमुआन धन बूझि ओकर दुरूपयोग होइ। ओतबे शब्दक प्रयोग नीक होइ छै जेतेसँ विचारक माध्यमसँ विषय गतिमान बनै छै। भाषा ओहन धार होइए जेकरा पार करैमे घटवारकेँ घटवारि नै दिअ पड़ै छै।

विश्वविद्यालयक परीक्षाक अधडरेड़ेपर छोड़ि रविशंकर अपन सभ वस्तु समेटि, लगक जे किताब-कौपी रहै ओकरा अलग छँटिया, दोसराक संग जे लेन-देन रहै ओकरो फड़िया, पुस्तकालयक सेहो फड़िया, पड़ोसक लेन-देन सबहक मुँहमिलानी कऽ बिना किछु केकरो कहने रूमक चाभी भागेसरकेँ सुमझा जहिना यागवल्क गुरुआइसँ दुनू पत्नीओ धरिकेँ छोड़ि विदा भेल छला तहिना विदा भऽ गेल। ओना भागेसर मात्र गौआँए रूमेट नै दियादिक संग खानदानी सेहो। तथापि ने रविशंकर किछु बाजि अपन बेथा भागेसरकेँ

सुनबए चाहैत आ ने भागेसर किछु बाजए। नै बजैक कारण भागेसरकेँ बुझले रहै जे गणेशजी जकाँ कभग्गू अछिए जेमहर नजरि गेलै तेम्हरे जनकक हरबाहिसँ मूसक राखल मुसहनि तक खुनि कऽ निकालि लैत, जेमहर नै गेल तेमहर हाथी आँखि जकाँ लूब-लूबबैत रहलौं। ओसारसँ निच्चाँ उतरिते पाछूसँ भागेसर पुछलकै-

> ‘‘रवि भाय, आगूक की कार्यक्रम अछि?’’

जहिना गणेशजीक मन सदिकाल एकेरंग रहैत तहिना रविशंकर बाजल-

> ‘‘अखनि विचार मनमे अछि। गाम जाएब समाजक संग परिवारकेँ देखब दुनू बापूत मिलि विचारब जे केना बाप-दादाक लगौल फुलवाड़ी आरो हरिआइत रहत तखनि ने।’’

एक दिस रविशंकर डेग बढ़ौलक दोसर दिस भागेसर पल्ला झाड़लक जे सभ दिनक एके रंग बूड़िवाण रहि गेल। जा जे कपारमे लिखल छह से कियो बाँटि लेतह। खैहनु चेतानन्दक कपार।

कौलेजक हातासँ निकलिते रविशंकरक मनमे घौंदा जकाँ प्रश्न लुलुकि गेलै। बिऔहता बर आ दुरगमनियाँ कनियाँ जकाँ मनमे समस्याक सोहरी लगि गेलै। मुदा जहिना छोट बच्चाकेँ कियो दुलार कऽ कना दइ छै आ ओ अपना माए लग जा कहै छै, ‘फल्लाँ मार’, तहिना सभ प्रश्नकेँ छँटिया रविशंकरक मन परसुकाकेँ आगूमे रखलक। की हम परिचर्चामे अपन विचार व्यक्त करैबला नै छी? भऽ सकैए जे जे विचार हमर अछि ओ दोसरोक होइ, मुदा सेहो तँ सुनला पछातिए ने बुझितौं। नहियेँ बजितौं मुदा जँ आनोक मुँहसँ सुनितौं तैयो तँ मनमे सबूर हेबे करैत, सेहो ने भेल। ने बजनिहारे भेलौं आ ने सुनिनिहारे।

रविशंकरो आ भागेसरो संगे दुनू ब्रह्मपुर हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास कऽ राजधानीक एक्के कौलेजमे नाओं लिखौलक। ओना पढ़ैमे रविशंकरक अपेक्षा भागेसर हल्लुक मुदा मैट्रिकमे बेसी नम्बर भागेसरेकेँ आएल छेलै, जे सुनिए कऽ रविशंकर रहि गेल। विचारि नै सकल जे जखनि भागेसर दब

अछि तँ ओकर नम्बरो ने दबे अबितै। बाल-बोध मन रविशंकरक, एतबे बुझलक जे परीक्षा तँ शिकार करब भेल। अनाड़ीओ शिकारीकेँ बेसी शिकार हाथ लगै छै आ जीवनीओकेँ कम। ई नै बूझि सकल जे जहिना खेतमे जोत-कोरसँ फसल लगबै धरि वा बाँस-खढ़-खरहीसँ घर बन्है धरि कोनो पेंच-पाँच नै होइ छै, पेंच-पाँच होइ छै फसल लगला पछाति आ घर बन्हला पछाति। अपन रोपल अपने खा दोसरोकेँ खुआबी आकि अपने पुराबी आकि अनके रोपल खाइ। भागेसरमे एकटा विचार जरूर अछि जे रविशंकरकेँ श्रद्धाक नजरिसँ जरूर देखैत। मुदा से सेझहामे, परोछमे विचारक दूरी एते लतड़ि गेल छेलै जे जड़िसँ मुड़ीक दूरी देखबे ने करै। ओना हाइ स्कूल धरि दुनूमे (रविशंकर आ भागेसर) एते दूरी नै बनल छेलै जेते कौलेजमे आबि बनलै। तेकर कारणो भेल जे जहिना रविशंकर अध्ययनमे खिंचाइत एकाग्रता दिस बढ़ैत गेल तहिना भागेसर देखा-देखीक अनुकरण करैत दोसर दिस बढ़ि गेल। तइसँ नजरिमे दोष आबि गेने बुझबे ने करैत जे छबड़दानी अपने सुरक्षित पानिक तरमे रहि छबड़ाकेँ कहैत जे ऊपरेमे छिऔ।

ओना पटना अबिते दुनू गोरे एक्के लौजमे रूम भाड़ा लेलक। मुदा भड़ैते बनैकाल रविशंकर बाजल रहए-

''गौआँ छोड़ि दोसरकियो रूममे नै आबि सकैए।''

अखनि तँ भागेसरो एक पुरखियाहे छल संगीक जरूरति बूझि बाजल रहए-

''बड़बढ़ियाँ।''

माथपर मोटरी नेने डेग आगू दिस बढ़ैत, मुदा मनमे बेर-बेर पानिक हिलकोर जकाँ रविशंकरकेँ उठैत जे विश्वविद्यालय स्तरक कार्यक्रम भेल, बेक्ती-विषेषक नै छल, तखनि किए ने बुझलौं। ने प्रश्नक जड़ि भेटै आ ने विचार आगू बढ़ै। मुदा तैयो बाढ़िक पलाड़ी जकाँ बहबे करै। मन बहकलै, इन्दिरा आवासक जेकरे पक्का घर रहै छै हथियाक झटकीमे खसल घरक अनुदानो तेकरे भेटै छै। सएह ने तँ भेल। की अहिना भोजे-भातक शिक्षण संस्थान बनल रहत? धू:! अनेरे मनकेँ बौअबै छी। ठीके लोक बताह कहैए। एहने-एहने घतहपनी सोचने ने लोक बताह होइए। अनेरे हमरे किए एते सोग अछि। जानए जअ जानए जत्ता। लसिगर होइ आकि खढ़हर से ओ जानए।

हमहीं की बजितौं जे अनेरे माथ धुनै छी। बड़ बजितौं तँ यएह ने बजितौं जे साहित्य जगतमे मध्यकालीन युग स्वर्णिम रहल। भक्तिमय साहित्यक सृजन एते कहियो ने भेल। मुदा भक्ति साहित्यक पछाति वैराग्य अबैत आकि श्रृंगार? एबाक चाहै छल वैराग्य से नै आबि श्रृंगार आबि गेल। समैओ मुगले शासनक छल। मिथिलांचलक किसानक सुदिन नै दुर्दिन छेलै। बीससँ तीस रौदी प्रति सदी होइत आबि रहल छेलै। बाढ़ि-झाँट छोड़ि कऽ। तैसंग बड़का-बड़का भुमकमो भेल। आजुक संचार नै, दू-गाम चारि गाम पसरैत-पसरैत अवाज विलीन भऽ जाइ छल। ने धार-धूर आजुक छी जे आबे बाढ़ि अबैए आ पहिने नै अबै छल। खैर छोड़ू। रौदीक मारिसँ जे परिवार नष्ट भेल, वा गाम छोड़ि कऽ जे भागल, तेकरा छोड़ि कऽ। जे इमानदार किसान छला ओ मिसिओ भरि ओइ सभ प्रकोपसँ डोलला नै। मातृभूमिक माटि-पानिमे अपनाकेँ समरपित केने रहला। भलहिं एक रौदीक मारि पाँच बर्खमे किए ने भरपाइ करए पड़ल रहल होन्हि। एकाएक रविशंकरक विचार आगू बढ़ल। विश्वविद्यालय सर्वोच्च शिक्षण संस्थान छी। जे मिथिलांचल ऋृषि-मुनिक बासस्थल अदौसँ रहल आकि ओतबे गनल-गूथल छथि जेतेकेँ द्वारिका छाप भेट गेल। विश्वविद्यालयक दायित्व बनैत अछि जे जिनकर रचना दिवारमे सड़ि गेलनि पानिक चुबाटमे गलि गेलनि ओहनो-ओहनो रचनाकारक खोज हुअए।

गामक सीमानपर अबिते रविशंकरकेँ भागेसर मन पड़ल। मन पड़िते बुदबुदाएल-

> “गौआँ-घरूआ रहने भागेसर बहुत उपकार केलक। ओकरे केने कौलेजक पुस्तकालयसँ सम्बन्ध बढ़ल। नै तँ तेहेन-तेहेन लुटिहारा सभ अछि जे किताबक कोन चर्च जे आलमारीओ उठा कऽ लऽ जाइए। जँ ओ नै रहितए तँ की अपने बुते ओते भीतर तक जा सकै छेलौं। ओकरे पाबि ने सभ रंगक किताबसँ भेँट भेल। जिनगी भरि ओकर उपकारकेँ नै बिसरब।”

रविशंकरकेँ पटना छोड़िते भागेसर अपना पत्नीकेँ मोबाइलसँ कहि देलक जे रविशंकर बताह भऽ गेल। गाम अबैसँ पहिने तेना चालनिमे दऽराधा

चाललनि जे सौंसे गाम पसरि गेल, रविशंकर बताह भऽ गेल। तहूमे चुप्पा बताह। कखनि की कऽ देत तेकर ठेकान नै। काने-कान सौंसे गाम बीआवान भऽ गेल। ओना ई बात नै परोछ रूपे चेतानन्दोक कान तक पहुँचलनि मुदा सोझहा-सोझही नै भेने अनेरे सुनलाहा बातक पाछू जाएब उचित नै बूझि चुपे रहला। कौआ कान नेने जाइए, तइले कौआकेँ खेहारैसँ नीक अपन कान देखब होइ छै। ओना पोखरिक पानि जकाँ असथिर चेतानन्दक परिवार तँए चिड़ैक एक लोल पानि उठौने हिलकोर नै उठैत।

दलानक ओसारपर मोटरी रखि रविशंकर हिया-हिया चारू दिस ताकए लगल जे अपन हाजिरी तँ दर्ज करबैक अछि।

कनीए पछाति चेतानन्द बाड़ी दिससँ एला। अबिते रविशंकरकेँ पूछि देलखिन-

"बाउ, नीके छेलह किने?"

जहिना बिनु बोलक बच्चा माए-बापक बोल सुनि हँसि-कानि अपन बात कहैत तहिना रविशंकर मुस्की भरि उत्तर दैत गोर लगलकनि। गोर लागि रविशंकर अपन वस्तुजात सेरियाबए कोठरी दिस विदा भेल।

समाजक बीच अनेको सुआदक (तीत-मीठ-खट्टा) बात-विचार हवा-बिहाड़ि जकाँ वातावरणमे पसरैत रहै छै। बात कोन आवरणमे पसरि रहल अछि ओ बूझब बाल-बच्चाक खेल नै छी। एहनो तँ होइते अछि जे पहिने दीक्षे छिटाइत अछि शिक्षा हरा जाइत अछि। खैर जे होउ, चेतानन्दक मनमे उठलनि जे काल्हिसँ जे गाममे बीआबान भेल अछि ओकर मुड़ी पहिने देख ली। जँ रखै जोकर हएत राखब नै तँ मचोड़ि कऽ तोड़ि कातमे फेक देब। आगू ससरिते मनमे उठलनि एक तँ ओहिना रस्ताक झमारल रविशंकर अछि तैपर कौलेजमे पढ़ैए। कौलेजीआ छौड़ा सबहक जे चालि देखै छिऐ से किछु ने फुड़ाइए। जँ कहीं रविशंकरो ओहिना करए। मुदा कानमे नहियोँ देब हमरा लेल उचित नै भेल। पिते नै आदिगुरु सेहो छिऐ। ओकर नीक-बेजए नै बूझब बाल-बोधक संग अन्याय हएत। कोनो जरूरी छै जे नीक बात सभकेँ अधले लगै, किछु के नीको तँ लगबे करै छै। छातीपर पाथर रखि चेतानन्द बजला-

> ''बाउ, लोकक मुहेँ सुनै छी जे तोँ बताह भऽ पढ़ाइ छोड़ि गाम चलि एहल हेन! से की बात छिऐ?''

पिताक प्रश्न सुनि रविशंकर मिसिओ भरि विचलित नै भेल। जहिना पोखरिक असथिर पानि, काह-कूह निच्चाँ बैसि गेने परीच्छ रहै छै तहिना रविशंकरक मन असथिर। बाजल-

> ''बाबूजी, एक संग तीनटा प्रश्न उठा देलिऐ। उत्तर बेराबेरी देब। पढ़ाइ छोड़ि कऽ किए एलौं। बहुत बेसी तँ अखनि धरि नै पढ़लौं जे भरिपोख उत्तर देब। मुदा एते जरूर बुझलौं जे अपन जिनगी अपने हाथमे लऽ कर्मकेँ धर्ममे प्रतिष्ठित कऽ सकै छी। नै तँ मुँह किम्हरो बोल किम्हरो बनल रहैए। अपन जिनगी अपना हाथमे लऽ क्षमतानुसार अपनो आ दोसरोक सहयोग करिऐ। मुदा सहयोगोक सीमा छै। जखनि मनुख अपन सीमांकन कऽ चलत तँ ओहन सहयोगक बेगरते नै रहि जाइ छै। मुदा बेकतीसँ परिवार, परिवारसँ समाज, देश-दुनियाँ बनैत, तँए बढ़ैत चलबे ने जिनगी छी।''

चेतानन्दकेँ बतहपनीक आभास नै भेलनि, तँए दोहरा कऽ बतहपनी शब्दक प्रयोग करब नीक नै बुझलनि। पिताक बात छिऐ जँ कहीं उनटे रोपा जाए। शब्द तँ मनसँ उचरैत अछि। तँए अशुभकेँ शुभ बनाएब उचित भेल, मुदा शुभकेँ अशुभ बनाएब केना उचित हएत? अपनो नीक हएत जे जुआन बेटा भेल, सरकारो मानीए नेने हेतइ, तँए अपना अधिकार आ कर्तव्यकेँ हमहीं किए रोकबै। हँ तखनि बिआह कराएब पछुआएल अछि से कराबै धरि भार अछि। लेत अपन घर-परिवार, सर-समाज। साठि बर्ख नहियेँ पूरल हएत तइले किए बैसल रहब। से नै तँ एकटा आरो बात पूछिए लिऐ। पुछलखिन-

> ''बौआ, गाममे रहि करबह की? पढ़ि-लिखि सभ नोकरी-चाकरी करैए आ तूँ?''

गंभीर होइत रविशंकर बाजल-

''बाबू, अखनि गामक असली रूप बुझैमे कनी बाँकी रहि गेल अछि तँए अखनि किछु ने कहब।''

''की असली रूप?''

''गामक माटि-पानिक लम्बाइ-चौड़ाइ की छै, अपना केते अछि, गाममे परिवार केते छै इत्यादि। किछु बुझैक बाँकी अछि से बूझि गेला पछाति अपन योजना आगूमे रखि अहूँक विचार लेब।''

रविशंकरक विचार सुनि चेतानन्द ठमकि गेला। मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलनि। की योजना? कोनो कि सरकारी कारोबार छी जे योजना बनौत। मुदा धाँइ दऽ नै मानब उचित नै हएत। भलहिं बीकछा कऽ पूछि लेब अलग भेल। तहूमे कौलेजमे पढ़ैए, जँ कहीं किताबक भाषा बाजल हुअए। तखनि? से नै तँ नीक हएत जे अखनि रविशंकरोक मन थीर नै हेतइ ताबे ओहो थीर होइए, तैबीच अपनो अधखरूआ काज पूरा लइ छी। ओहो निचेन हएत अपनो निचेन हएब तखनि खरियारि कऽ बूझि लेब।

बेरका समए। चाह पीब चेतानन्द रविशंकरकेँ चाल पाड़लनि। अबिते रविशंकर पुछलकनि-

''किए सोर पाड़लौं?''

चेतानन्द बजला-

''तखुनका बात नीक जकाँ नै बुझलौं?''

रविशंकर बाजल-

''जाबे धरि गामक माटि-पानि, गाछ-बिरिछ, माल-जालक संग परिवारकेँ नै बूझि लेब, ताबे अपन सीमा-सरहद नीक जकाँ नै बना सकै छी।''

माटि-पानि, गाछ-बिरिछ इत्यादि सुनि चेतानन्द बजला-

''ई कोन बड़का उलझन भेल जे तूँ ओझराएल छह। सात सए बीघाक गाम अछि, एगारहटा पोखरि अछि। इनार तँ मरिये गेल अछि। दूटा बाट गाममे अछि। जे दुनू मिलि चौराहा बनल अछि।

एकटा पूबे-पछिमे अछि आ दोसर उत्तरे-दछिने। तैसंग पाँच सए परिवारो अछि।''

चेतानन्दक विचार सुनि रविशंकर बाजल-

''बाबू, जे बात नै बूझल छल से बुझलौं। कनी थमहू, कागतपर लिखि लेब नीक हएत।''

कागत-कलम आनि रविशंकर बाजल-

''गामक रकबा केते अछि?''

''सात सौ बीघा।''

''परिवार केते अछि?''

''पाँच सौ।''

''अपना केते जमीन अछि?''

''साढ़े पाँच बीघा।''

''तखनि तँ परिवारक हिसाबसँ बेसी अछि?''

''हँ से तँ अछिए। तँए कि हम बेसी खेनिहार छी?''

बेसी खेनिहार सुनि रविशंकरक मन ठमकल। मुदा जखनि चोर-मोट सोझहेमे अछि तखनि पुछिए लेब नीक हएत। पुछलकनि-

''बेसी खेनिहार माने?''

चेतानन्द कहलखिन-

''बाउ, अपनो मनमे अछि जे जेते खेतमे काज केनिहार छथि हुनका सबहक बीच एक रंग खेत होन्हि, जइसँ श्रमक प्रतियोगिता हएत। मुदा जेकरो बटेदारी, भूदानी खेत भेलै, सेहो सभ कियो भरना लगा तँ कियो केबाला कऽ दिल्ली बम्बै धेने जा रहल अछि। तैसंग जिनका बेसी छन्हि, ऊहो नोकरी-चाकरी करए चलि गेल

छथि, गामक खेत तँ ओहने परती बनि गेल अछि जेहेन उजड़ल गाम होइ छै। तखनि तोहीं कहऽ जे की कएल जाए?''

प्रश्नकेँ ओझराइत देखि रविशंकर बाजल-

''पहिने अपन समए आ खेतीक मिलान करए दिअ, तखनि फेर आगू गप करब।''

उत्सुक होइत चेतानन्द बजला-

''हँ, हँ, नीके सोचै छह। कोनो काज करैसँ पहिने बूझि-जानि लेब बेसी नीक होइ छै।''

रविशंकरक जिज्ञासा देखि चेतानन्दकेँ खुशी भेलनि। मनमे उठलनि, 'नै दुनियाँ तँ कम-सँ-कम अपन परिवारक तँ सभ एक रंग खाएब, ओढ़ब-पहिरब, एकरंगक घरमे तँ रहब।' यएह ने भेल परिवारक एकरूपता। ई तँ नै ने जे कुरसीपर बैसल बेटा बापकेँ कहत- 'ऐ बूढा, कहाँ रहता है।' मुदा जखनि अकासे फाटि गेल अछि तखनि दरजीक बपहारिए कटने की हएत?

साँझक समए। लालटेन नेसि चेतानन्द दरबज्जाक चौकीपर चाह पीब असगरे बैसल रहथि। बाजाप्ता कागज कलम नेने रविशंकरो आबि बैसल। हाथमे कागज देखिते चेतानन्द पुछलखिन-

''बौआ, कथीक कागत-पतर छिअ?''

जहिना कोनो काजकेँ पहिने भूमिका बान्हल जाइ छै तहिना भूमिका बान्हि कागत खोलि रविशंकर बाजल-

''बाबूजी, अपन किसान परिवार छी।''

किसान परिवार सुनि चेतानन्द बजला-

''से तँ छीहे। जँ से नै छी तँ किए बड़को-बड़को कुरसीबला अपनाकेँ निधोख किसान परिवार आ किसानक बेटा बजैए।''

मुस्कीआइत रविशंकर बाजल-

''पहिने सुनि लिअ, तखनि अपन विचार देब। पानि खेतीक प्राण छी। बिनु पानिक किसानक जिनगी मुरदाक होइ छै। चारिए मासक

बरसात बारहो मासकेँ सजबैए। जँ हाथमे पानि आबि जाएत, तखनि लत्ती जकाँ किसानी पसरि जाएत। तँए किछु खेत बेचि बोरिंग कराएब। खेतीक विकसित रूप बनबैमे जेते खर्च हएत ओ खेत बेचि कऽ करब।''

चेतानन्द मुड़ी डोलबैत बजला-

''घर-परिवार सुमझाबैक अर्थ ई नै ने होइ छै जे विचार रोकल जाए। जे मन फुरह से करह मुदा पाँच कट्ठा तीमन-तरकारीले हमरो बना दिहऽ देखै छी जे तेते ने लोक दबाइ दइ छै जे ओकर गुणे बिगाड़ि दइए। अपना हाथे उपजाएब मनसँ खाएब। अछैते औरुदे मरनाइओ नीक नै छी।''

चुटकी लैत रविशंकर बाजल-

''घरक आगूओमे धनखेतीए रखने छी आ मन निरोग तरकारीपर जाइए।''

चेतानन्द कहलखिन-

''अखनि तूँ नै ने बुझबहक। ई खेत गोरहा छिअ। नहियोँ तँ बोरा कट्ठा भइए जाइए।''

''जइबेर रौदी भऽ जाइ छै?''

''एते लोक हिसाब जोड़त तखनि काज चलतै।''

''तँए ने...?''

❍❍❍

घूर

गोसाँइ डुमैक समए भऽ गेल छल। इसान कोणक हवा मध्यम तेज गतिए चलैत रहए। घुरिया सौन भेने जेठोसँ बत्तर समए जइसँ जरनोकाठी आ गोइठो-करसी सुखा कऽ हरनाठ भेल। माल-जालक थैरमे घूर पजारैक समए भऽ गेल छल। बजार जाइए काल बैकुण्ठ बाबा पोता -पुष्पानन्द-कँ कहि देने रहथिन जे बौआ परिवार सरकारी ऑफिस नै छिऐ जे अपने रहब हजार कोस हटल मुदा जिम्मा रहत ऑफिसक। परिवार परिवार छिऐ, तहूमे गिरहस्त परिवार। जइमे ने उचित अभ्यागतक समए निर्धारित अछि आ ने साँढ़-पाराक। तहूमे केतबो बन्हौटा गाए-महिंस किए ने हुअए मुदा डोरी टुटलापर वा खुजलापर किछु-ने-किछु मलैकिए जाइए। तहूमे गोटे-आदहे एहेन होइए जे बोनैया जकाँ सौंसे गाम मलकैत रहै छै। तँए जेते काल हम नै रहब तेते काल दुआरे-दरबज्जापर रहबो करिहह आ खाइओ पीबैले दिहक। पोसा माल-जाल अनठिया कुत्तो-बिलाइ देखि भड़कैए। तही काल खुट्टो आ डोरीओ टुटैक डर रहै छै। बाबाक बात सुनि पुष्पानन्द हँ-हूँ उत्तर नै दऽ मने-मन विचारए लगल जे जिम्मा तँ किछु ने भेल मुदा समए बेठेकान भेने नम्हर भेल। कखनि बजारसँ औता कखनि नै, तैबीचमे खाली ओगरवाहिए आ खुआबैए-पीआबैक बात नै भेल, जेठुओ समैसँ समए दुरकाल होइए, नहाबैओ पड़त, घरो-बहार करए पड़त। तहूमे जँ कहीं पुरना संगी भेटलनि तँ घूमि कऽ एबो करता आकि नै। तखनि तँ दिनक कोन बात जे कएओ दिनक जिम्मा भऽ गेल। गप्पकँ ओझराइत देखि पुष्पानन्द विचारलक जे कोनो कि अनभुआर काज अछि जे अबूह लगत, जिनका एते अजगजक भार रहतनि ओ अपने नै बुझथिन जे घरक समैक की महत छै। आ जँ एहेन संगी भेटि जान्हि जे नोकरीसँ रिटायर भऽ आएल होथि, जिनका ने खेती-पथारी होन्हि आ ने माल-जाल? अपन खेती-वाड़ी, माल-जाल, फल-फुलवाड़ी तँ किसाने परिवारक अंग छी जे नोकरी-चाकरीमे नै अछि। तखनि तँ दुनू गोटेमे यएह ने समझौता हेतनि जे अपने ऐठाम चलल जाए जे सुच्चा दूधक चाहो पीब आ भरि पोख गप्पो हेतै। गप्पो कोनो छोट थोड़े हेतै, रजनी-सजनीक खिस्सा

जकाँ सौंसे जुआनीक गप्प हेतै। खैर जे हौ। जाबे घूमि कऽ नै औता ताबे तकक भार। बेर खसिते माछी-मच्छर आबए लगै छै, ताबे धरि नै आएल रहता तँ घूरो कऽ लेब। सएह ने।

हँसि गोसाँइ पाट होइत देखि पुष्पानन्द बीच थैरमे घूर लगौलक। जैठाम सभ दिन घूर लगौल जाइ छेलै। अनभुआर रहने पुष्पानन्द गदौसबला खढ़ आन दिनसँ घूरमे बेसी दऽ देलक। ओना करसीक हिसाब ठीके रहै, किएक तँ सबेरे बैकुण्ठ करसी रौदमे पसारि देने रहथिन। खड़ाएल खढ़ रहने पजार पड़िते एक्के बेर धुधुआ कऽ चारूकात पकड़ि लेलक। हवा रहबे करै आगिक लुत्ती उड़ए लगलै। तखने बैकुण्ठ बाबा दरबज्जापर पहुँचला। घूरकेँ देखि साइकिल ओलतीमे ठाढ़ कऽ लोटा लऽ कलपर विदा भेला। घूरमे पानि छीटब जरूरी बूझि पड़लनि। ओना दरबज्जापर अबिते घूर देखि मन करुआ गेलनि। आबि गेलौं तँए ने, नै तँ घर-दुआरमे आगि लगैत आकि नै? पोता एतबो नै बुझैए जे केते हवामे घूर लगाबी आ केतेमे नै लगाबी। मुदा जुआन-जहान पोता अछि, तहूमे कौलेजमे पढ़ैए। आनकेँ देखै छिऐ जे बाप-दादाक आगूमे बकटेंट जकाँ गप्पो करैए आ गँजो-भाँग पीबैए। भलहिं हमरा अखनि तक एहेन नै भेल मुदा समैक रोग तँ महामारी छी, केकरा पकड़त, के मरत आ के नै मरत तेकर कोन ठेकान छै। बाबाक मुँहक रूखि देखि पुष्पानन्द बूझि गेल। अपन ड्यूटी समाप्त बूझि टहलिए जाएब नीक बुझलक। अनेरे की बजता की नै तइसँ नीक जे ससरिये जाएब हएत। दादी आँगनमे छथिए ओ बुझबे करथिन, औथिन। गुरक मारि जहिना धोकरा अँगेजने रहैए तहिना अंगेजल छन्हिहेँ, अपन दुनू गोरे फड़ियेता।

घूरमे पानि छीटि आगि शान्त करैत बैकुण्ठ कपड़ा बदलि, कलपर हाथ-पएर धोइ दरबज्जापर आबि बजारक समान मिलबए लगला। पतिक चाल-चूल पाबि कमली आबि पुछलकनि-

''चाहो-ताहो पीब आकि पीनइ आएल छी?''

ओना बैकुण्ठक मन करुआएल रहनि मुदा पत्नीक बात सुनि तामस नै उठलनि। तामसक मुद्दा रहनि, हवामे घूर। क्रोध तँ मुद्दा-मुद्दापर अबैत जाइत

अछि। ई तँ नै जे तामस उठल तँ उठले रहि गेल आ तैबीच घीबोक घैल ओहने आ ताड़ीओक घैल ओहने रहल। क्रोध तँ मुद्दा-मुद्दाक होइत अछि। तहू मुद्दामे जगह-जगहक सेहो भिन्न होइत अछि। ई तँ नै जे गाछक पात जकाँ कोनो एहनो होइत अछि जे बिनु हवोक डोलैत रहैए आ किछु एहनो होइत जे बिहाड़िओमे नै डोलैए। ई तँ निर्भर करै छै गाछक चालि-बेवहारपर। तँए ने एकटा के जड़िसँ टीकासन धरि सिर लुधकल रहै छै आ दोसरमे सिरोक जगहपर जल्ले रहै छै। मनुखो तँ ओहिना ने अछि। मनकेँ थीर करैत बैकुण्ठ पत्नीकेँ कहलखिन-

> ''हाट-बजारक चाह केहेन होइ छै, से नै बुझै छिऐ, जँ पीबे केने हएब तँ ओकर मद्दीए केते हेतै।''

हवामे मसुआएल खढ़-पात जकाँ पतिक बात सुनि कमली पोचाड़ा दैत बजली-

> ''अनके जकाँ हमहूँ छी जे पुरुख रहैत हाट-बजारक चाह पीब, जँ चाहेक बनीमा किछो घोड़ि दिअए आ पीविते-पीविते लटुआ जाइ, तँ की बनीमा पजिया कऽ नै पकड़त, तखनि अहाँक मोले कथी रहि जाएत?''

एक तँ करुआएल मन तैपर पत्नीक झमार बैकुण्ठकेँ बरदास नै भेलनि। झमाड़ि कऽ बजला-

> ''मन थाकल अछि, कनी पानि पीब चाह पीब तखनि ने थीर हएत। निचेनसँ आगूक गप करब। गोर लगै छी अखनि जाउ। चाह बनौने आउ।''

पतिक दुनू हाथ जोड़ल देखि सुपक भाँटाकेँ ऊपर फेकि सुपेसँ लोकैत कमली बजली-

> ''पुरुखक हाथे जोड़ब की? ई तँ घोड़-मिलान छी। मुँहसँ हिहिया पाछू घूमि चौताल फेकब। गदहो जकाँ जँ चलै छी तैयो तँ एके रस्तासँ चलै छी। भरि दिनक काजक माला बना नेने छी आ ओकरे भिनसरसँ साँझ धरि जाप करैत रहै छी।''

पत्नीक भरिगर बोलसँ बैकुण्ठ अपनाकेँ झँपाइत देखि पाशा बदलैत बजला-

"बजारक चीज-बौस सभ अछि, साँझ पड़ि गेने फेड़-फाड़ भऽजाएत। जाबे अहाँ चाह आनब ताबे हमहूँ सेरिआ लइ छी।"

काजक मूर्त रूप देखि कमली बिनु किछु बजने चाह बनबए आँगन विदा भेली। चीजे-बौस कि मासक अदहा किलो चाहपत्ती, चारि किलो चीनी, दू सए ग्राम सुपारी, बीस ग्राम खएर, पचास ग्रामक जर्दा डिब्बा। तहूमे सभटा बँटले बाँटल अछि, रखि देब। मुदा अपने मनमे जे क्रोध ऐ रूपे तनल अछि जे घरमे आगि लगिए जइतए आ जिनगी भरिक कमेलहा जरिए जइतए। ई तँ काजक संयोग छल जे ओहो घूरमे आगि पजारलक आ हमहूँ एलौं। आखिर ओकरा अखनो धरि घूर लगबैक लूरि किए ने भेल, ई दोख केकर? की अपनो घूर लगबैक लूडि नै भेल आकि लगबैक लूरि बुझा नै पेलिऐ। जँ अपनालूरि नै रहैत तँ बारहो मास माल-जालक रक्छा केना करै छी। से तँ करै छी मुदा तखनि पुष्पानन्दकेँ लगबैक लूरिकिए ने भेल जे एक तँ घुरिया सौन भेने जेठोसँ बत्तर समए छै तैपर इसान कोणक मध्यमतेज(एक आ सएक बीच अनठानबे अंक मध्यम भेल, तँए तेज-मध्यम, मध्य मध्यम आ मध्यम।)हवा बहि रहल छै। खढ़-पातसँ लऽ कऽ घरक छप्पड़ धरि खड़ाएल अछि, तैठाम एहेन घूर लगाएब अनुचित भेल की नै? से तँ जरूर भेल। मुदा एहेन घूर ओ -पोता- जानि कऽ तँ नै लगौलक जे घर-दुआर जरि जाउ? तखनि ओकर दोख की भेल? गुम भेल असगरे दरबज्जापर बैसल बैकुण्ठ अपने काजक समीक्षा करए लगला।

चौकपर पहुँचिते पुष्पानन्दक मन पुष्पानन्दकेँ धकलए लगल जे जेठुआ गरे जकाँ बाबाक नजरि रहनि तँए कोनो धार कोण लऽ कऽ बरिसेबे करता। से नै तँ रस्ते-रस्ता टहलैमे थोड़े देखता कनसोहो लऽ लेब आ टहलिओ लेब। जँ कहीं सोझहामे पड़ता तँ कनी डेग झटका लेब जे बुझता कोनो काजे केतौ जाइए। नै तँ सासुरक डेग पकड़ि चलब। की सासुरक मद्धिम डेगे ने तँ जिनगीओक डेगकेँ दुबड़ा दइए? मुदा कोनो सुनि-गुनि नै

पाबि पुष्पानन्द तीन चक्कर लगा लेलक। मनो मानि गेलै जे दादीओ तेहेन लगारी छथि जे केहनो करियाएल मेघ किए ने हुअए ऊपरेमे सुखादेतनि।

प्रश्न अछि जे बारहो मासक मालक थैरमे केहेन घूर लगौल जाए जे ओइ समैक माछी-मच्छरसँ रक्छा हेतै। माछीओ-मच्छर तँ रंग-बिरंगक अछि। के केहेन धुआँसँ भागत? तेतबे नै, घूरक धुआँ तँ हवाक संग चलै छै, तँए हवाक रूखि सेहो देखए पड़ै छै। मन घुमलनि। सौन मास। सौन तँ सौन छी। अनेक रूप अनेक चेहरा। एहनो होइत जे शीतल जल शीतल समीरक संग लहलहाइत खेतकेँ हरिअरी ओहन साड़ी पहीरि छमकैत रहैए जेना गदाएल खेसारी जकाँ गदाएल पेट मनकेँ भरने रहै छै। मुदा एहनो सौन तँ होइते अछि जे जेठुआ धुरा उड़बैत घुरिया सौन कहबैए। हँ से तँ कहबैए! तखनि? तखनि किछु ने! आइक सौन केहेन अछि ओ भेल विचारैक बात। अनेरे आगू देखब तँ पोता-पोती, नाइत-नातीन की खएत, की पहिरत, केना रहत? नै जौं पाछू घूमि ताकब तँ दर्जनो लाख बर्ख पहिने जनकक मिथिला तंत्रमार्गसँ प्रभावित हजार बर्खक मिथिला बनि वाड़ीए-झाड़ी नाचल घुमी, ईहो तँ नीक नहियेँ। खैर जे हउ, ने दुनियाँक ठेकान अछि जे केते आ केतेटा अछि आ ने लोकक ठेकान छै जे केहेन अछि। तखनि? हँ तखनि अछि जे अपन चौबीस घंटाकेँ निअमित जिनगीमे बान्हि आकाशीय सूर्य-चान जकाँ अपना धुरीमे निअमित चलि जिनगीक आदि-अन्त कऽ विसर्जित करी। जँ से नै तँ अखनि कम स्कूल कौलेज अछि तखनि तँ ई गति अछि जखनि बेसी हएत तखनि पूछत आकि धकियाएत? खैर जे हउ, अनेरे मनकेँ घोर-मट्ठा केने छी। तही बीच कमली चाह नेने एलनि। अनुकूल जगह पाबि बैकुण्ठ पुछलखिन-

''हमरेटा ले अनलौं हेन?''

पतिक प्रश्न सुनि कमली ठमकली। मनमे उठलनि जे एना किए उटपटांग बात कहलनि। ऐठाम तँ दोसराइतकेँ नै देखै छी, तखनि? ओह! भरिसक मने चलिया गेलनि हेन। नै, मनमे अखनिसँ खट-खुट होइते रहत तइसँ नीक जे पुछिए लियनि-

''दोसराइत अछिए नै तखनि आरो चाह?''

कमलीक प्रश्न सुनि सिताएल नढ़िया जकाँ बैकुण्ठ कहलखिन-

''अहाँ?''

कमली मुहेँ लगल पुछलखिन-

''अखनि धरि कहिया सोझहामे चाह पीलौं जे...?''

बैकुण्ठ कहलखिन-

''अखनि धरि अपन विचारकेँ अहाँ ऊपर थोपैत एलौं, मुदा जे काज अहूँ करै छी आ अपनो करै छी ओइ विषयमे बैसि कऽ विचार नै करै छी। से आइसँ शुरू करब। तँए कहलौं जे एकठाम बैसि चाहो पीब आ घूरक विषयमे गपो-सप्प करब।''

पतिक बात सुनि कमली निधोख आँगनसँ चाह आनि आगूमे बैसि पीऐत पुछलखिन-

''बाजू की उलझन अछि?''

बैकुण्ठ बजला-

''उलझन कथी रहत, एक तँ रस्ताक झमारल बजारसँ आएले छेलौं आकि पुष्पा घूरमे आगि देलक। केना घूर लगौल छेलै केना नै, एक्के बेर तेना धधैक गेलै जे घरेमे आगि लगि जाइत। तखनेसँ मन खसल जाइए, तँए अहाँसँ विचार करब अछि।''

पतिक गिरगिराइत मन देखि कमली अवसरकेँ हाथसँ नै दिअ जाए चाहैत, पुछलखिन-

''पहिने ई कहू जे परिवारमे मालक थैर आकि जाड़क मास घर-ओसारक घूर पुरुख लगबै छला आकि औरत?''

कमलीक प्रश्न सुनि बैकुण्ठ आरो सकपका गेला। बजला-

“दुनियाँ बड़ीटा छै आ बहुत लोको छै जइसँ बहुत रंगक विचारो छै। मुदा अपना परिवारमे तँ पहिने अहीं लगबै छेलौं, जहियासँ वर-बेमारीमे पड़लौं तहियासँ लगबै छी।”

पतिक विवशता कमलीकेँ बूझि पड़लनि। मनमे उठलनि अर्द्धांगिनी। की अर्द्धांगिनी? मात्र सन्तान पैदा करब आकि जिनगीक अर्द्धांगिनी? खैर जे हउ, ठीके जिनगीक कोनो ठेकान नै अछि नै तँ तेंसरे जे रोग धेलक से मरैमे बाधा रहए, ई तँ औरुदा बाँकी रहए जे बँचलौं। बजली-

“देखियौ, मालक थैरमे बारहो मास घूर लगौल जाइ छै, आ घर-ओसारमे मात्र जाड़क मास। होइ छै की नै?”

“हँ, होइ छै।”

“बारहो मास समैक हिसाबसँ माछीओ-मच्छर होइ छै। दिनमे कमो-सम मुदा दिन लहसैत माल-जालक देहमे लुधकए लगै छै। किछु एहेन माछी-मच्छर होइ छै जेकरा उड़ौल जाइ छै आ किछु एहेन होइ छै जेकरा भगौल जाइ छै।”

पत्नीक विचारकेँ सुहकारैत मुड़ी डोलबैत बैकुण्ठ बजला-

“हँ से तँ होइ छै।”

दलदलाइत पतिकेँ देखि कमली बजली-

“आइक केहेन समए अछि तइ अनुसारे घूर लगौल जाएत। अपना ऐठाम रौदियाह समए अछि, जेठोसँ बत्तर अछि। माटि तक तबि गेल छै। जखनि माटि तबि गेल तखनि माटिक ऊपरका तँ तबबे करत किने?”

“हँ, से तँ तबबे करत।”

“तबैत-तबैत झड़कैओ लगत। झड़कनाइक माने भेल सुखाएब। कोनो वस्तुक सुखाइक माने भेल ओकर नमीक सूखब। आगिकेँ तँ पानिए दबैत अछि, जैठाम पानि नै रहत तैठाम तँ बेनग्न भऽ आगि नचबे करत।”

''हँ से तँ नचबे करत।''

जहिना जादूगर दर्शककेँ हिप्टोनाइज कऽ हँ-हँ करबए लगैए तहिना पतिकेँ हँ-हँ करैत देखि कमलीक मनमे उठलनि, गरदनिमे उतरी देखि केकरो घर-घराड़ी लिखाएब नीक नै, ओ समाज ठक छी, कहत जे माए-बापकेँ मुइला पछाति जेते नम्हर भोज करब तेते नम्हर जगह स्वर्गमे भेटतनि। बड़बढ़ियाँ। धर्मक काजमे सहयोग करी, ईहो बड़बढ़ियाँ, जखनि सराधक भोज धर्मक काज भेल तखनि जे सहयोग भेल ओ मदति किए ने भेल जे कर्ज बनि लोकक घर-घराड़ी लिखा गामसँ उजड़ि दइए? धु! अनेरे कोन लपौड़ीमे मनकेँ ओझरबै छी। अपन परिवारकेँ जेहेन बना समाजमे ठाढ़ रहब समाजक ओहन लकड़ीक खुट्टा जकाँ भेलौं। जेकरा छै ओ चाननो लकड़ीक धरैन, चौकठि-केबाड़ लगा घर बनबिते अछि।

ऐ परिवारक कर्ता-धर्ता तँ अपने दुनू परानी ने भेलौं? जखनि मेहनति कऽ खाइ छी, दिन बितबै छी तइसँ जे समए उगड़ैए ओइमे दोसरोकेँ जहाँ धरि भऽ पबैए मदति करै छिऐ। जँ अहिना समाजक सभ परिवार बनि जाए तखनि केहेन समाज हएत? मुदा समाज तँ देवदानवक भाँजमे पड़ि गेल अछि। जेकर कोनो ठेकान नै छै। कखनो दिनकेँ राति कहत तँ कखनो रातिकेँ दिन। जेना महाभारतक लड़ाइ काल भऽ जाइ। कखनो साँझक काज भोरमे करत तँ कखनो भोरुका काज साँझमे। विह्वल होइत बजली-

''किसान परिवारमे घूरक अपन महत छै।''

तैबीच पुष्पानन्द पहुँच गेल। पुष्पानन्दकेँ देखिते कमलीक मुँहसँ निकलल-

''भने बौऔ आबिए गेल। घरक कोनो बात आकि काज जौं सभ विचारि कऽ करब तखने ने घरमे मतभेद नै हएत?''

जाधरि पुष्पानन्द नै आएल छल ताधरि तँ बैकुण्ठ पत्नीक विचारमे हूँहकारी भरै छला मुदा पुष्पानन्दक सोझहामे भरब उचित नै बूझि चुपे

रहला। मुदा जहिना खिस्सा-पिहानीमे बाल-बोध पहिने हूँहकारी भरैत अछि तहिना पुष्पानन्द भरैत बाजल-

"हँ, से तँ ठीके?"

पुष्पानन्दक हूँहकारी सुनि कमलीक मनमे उठलनि, आब पहिल श्रोता पति नै पोता भेल। तँए एहेन बाजी जे परिवारक हितक होइ, जे सबहक दायित्व बनै। बजली-

> "बौआ, बारह मासक साल होइ छै। छहटा रीति अपना ऐठाम होइ छै। मुदा सभ रीतक महत समान नै छै, दू-दू मासपर रीति सेहो होइ छै आ बिनु मासक सीमा परहक सेहो संक्रमण रीति होइ छै। मुदा मोटा-मोटी अपना ऐठाम तीनटा रीति कहियौ आकि मौसम, जाड़, बरसात आ गरमी होइ छै।"

नव बात सुनि पुष्पानन्दक जिज्ञासा बढ़ल। जहिना बिनु ब्रेकक साइकिल ढलानपर चलौनिहारसँ बेकाबू भऽ जाइत तहिना पुष्पानन्दक मन ढलैक गेल। बाजल-

"पहिने कोन भेल?"

पुष्पानन्दक प्रश्न सुनि कमली घबड़ेली नै पोखरि-इनारक पानि जकाँ थीर होइत बजली-

> "बौआ, ई बेठेकान अछि। चैतकेँ पहिल मास मानबै तँ गरमी पड़त, अखारकेँ मानबै तँ बरसात पड़त, नै जे कातिककेँ मानबै तँ जाड़ पड़त। मुदा तीनू मौसमकेँ अपन-अपन गुण-धर्म छै जे बरहमसीओ छै आ समइओ।"
>
> "से केना बुझबै?"
>
> "बुझैले तँ दुनियाँ भरल अछि बाउ, मुदा परिवारक काजक बीच कहै छिअ। गरमी मौसममे जे घूर लगौल जाइ छै तेकर मुख कारण अछि माछी-मच्छरकेँ भगाएब। ओइ समए जाड़क मौसम बितल रहै छै, माछी-मच्छर ठिठुरल रहै छै जइसँ ओकरामे जहर कम छै तँए विषैला कम होइ छै, मालो-जालक देहपर रहल तँ बूझि

पड़ल जे खरहे-पात अछि। तैसंग हवा-बिहाड़िक मास सेहो होइ छै। तँए अधसुखू, खढ़ो-पात आ गोबरो-करसीक लगौल जाइ छै जे हवामे उड़बो ने कएल आ धुआँसँ माछीओ-मच्छर भगौत।''

कमली दादी बजिते छेली आकि बिच्चेमे पुष्पानन्द टोकलकनि-

''आ बरसातमे?''

बरसातक नाओं सुनि कमली ठमकि गेली। जेते ठेकनगर जाड़ आ गरमी मास अछि ओते बरसात कहाँ अछि। बरसा भेने बरसात नै तँ रौदी। गरमीओसँ असाध उमसल गरमी। एक तँ तरे-तर देहक पानिओ सुखबैए आ दोसर आगिपर चढ़ल अदहन जकाँ बाहरो निकालि फेकैए। मुदा तइसँ कि जौं बेठेकानोकेँ ठेकानि-ठेकानि पकड़ी तँ ऊहो पकड़ाइए जाइए। मनकेँ थीर करैत बजली-

''बौआ, नाना-नानी आकि दादा-दादीक बातकेँ, खिस्सा-पिहानीकेँ जँ ओहिना अनके जकाँ बुझबै तखनि हुनका सबहक अवहेलना हेतनि। नानी तँ नानी छथि। जिनका पेटमे आँखि बनबैओक शक्ति छन्हि आ बन्न आँखिकेँ सतमीक दुर्गा जकाँ डिम्हो दैक शक्ति छन्हि। खैर जे हउ। बाउ, दुनियाँ बेठेकान अछि अनेरे अपनो बौआएब आ तोरो कथीले बौएबह। अपने बितल कहै छिअ। जहिना ऐबेर घुरिया सौन अछि, तहिना बर्ख पाँचम सेहो भेल रहए। जहिना अपना ऐठाम घूर लगबै छी तहिना ऊहो मालक थैरमे लगौने रहए। बेठेकान लगौलक। हवा बहिते रहै अपने घरमे आगि लगि गेलै। एके घरक आगि तेना ने पसरल जे सौंसे गामे लगि गेल। गामो सूर्ज मंडल! छणेमे छनाक भऽ गेलै!! खैर जेतए भेल तेतए भेल मुदा एते तँ बुझहए पड़तह जे समए केहेन अछि। ओना आन-आन मासक ठेकान करब थोड़े हल्लुक अछि मुदा सौनक भारी अछि।''

जिज्ञासासँ जगैत पुष्पानन्द जोड़ैत बाजल-

''की भारी अछि?''

पुष्पानन्दक प्रश्न सुनि बैकुण्ठ चौंकला। जेना केकरो कोनो बात नै बूझल रहल आ दोसराक मुहेँ सुनि होइत, तहिना पहिने पुष्पानन्दक चेहरापर नजरि खिरौलनि जेना कोनो बच्चाक पेट हसोँथि माए भूखक अनुमान कऽ लैत तहिना बैकुण्ठ केलनि। प्रश्नकेँ तौलैत नजरि पत्नी दिस बढ़ौलनि। मुदा जहिना बच्चाक उमेरक हिसाबसँ दूध पिअबैले माए खुशी-खुशी तैयार होइत दुनू हाथ खेलाइत बच्चा दिस बढ़बैत तहिना कमलीकेँ देखि आँखि निच्चाँ कऽ लेलनि।

शान्तचित्त होइत कमली कहलखिन-

> "बाउ, घूरक गप ताबे चौपेत कऽ रखि दियौ। पहिने माछी-मच्छरक गप सुनि लिअ?"

दादीक जवाब सुनि पुष्पानन्दक मनमे ओहेन बात उठल जेहेन नटकिया सभ उठबै छथि।

पुष्पानन्दकेँ चुप देखि कमली बाजए लगली-

> "माछी-मच्छरक काल नै बूझि सभ जीव जीवे छी बुझब नीक हएत। की मनुखक बच्चा बोन-झाड़मे आन जीव जन्तुक बच्चा जकाँ पला सकैए? खैर जे होउ। बाउ, सौनमे नाग पंचमी होइ छै, पहिल परवक पाँचिम दिन। ओइ दिनसँ माछीओ-मच्छर आ आनो-आनो बिनु-जहरीलोसँ जहरीला। विषवन होइ छै। तइसँ माछीओ-मच्छर आ आनो-आनमे बीखक संचार होइ छै। गरमी मासक माछी-मच्छर मरबो करैए आ विसेबो करैए। मुदा जेकर जनम होइ छै ओ विसेबे बेसी करैए तइसँ खूनो पीबैक शक्ति बढ़ि जाइ छै आ विषक दर्द सेहो बेसी होइ छै।"

कमलीक बात अंतो ने भेल छेलनि आकि बैकुण्ठ बजला-

> "सभटा बात आइए पुष्पानन्दकेँ अशोकारिष्ट जकाँ एक्केबेर बोतल पीआ दियौ। तखनि देखबै जे केते लाइग करै छै।"

❍❍❍

कनियाँ-पुतरा

कमला-कमलक जन्मक उनैसम दिन। उनैसमासी कर्म केला पछाति जहिना कर्ता चैनक साँस लेबो करैत आ छोड़बो करैत तहिना सुधनी दादी पोती (कमला) पोता (कमल) कें जाँति-पीचि, पछबरिया ओसारपर कजरौटी दऽ पूब सिरहौने सुता बेटा-पुतोहुकें कहलखिन-

> ''आब अपन करमकें करम-धरम करह, वाड़ी-झाड़ी बिरहा गेल हएत ओकरो तकतियान नै करब तँ जीब केना?''

कहि सुधनी दादी आँगनसँ निकलि वाड़ी दिस विदा भेली आकि दछिनवरिया घरक कोनचर लगपहुँचिते मनमे ठहकलनि। ठहकिते ठाढ़ भऽ गेली। ठहकलनि ई जे कहुना तँ घरमे हमहीं बूढ़ छी, मुदा सुनैत तँ यएह एलिऐ जे जँ बेटा-बेटीक जौंआ संतान हुअए तँ पहिने बेटाक जनम होइ छै पछाति बेटीक। मुदा से भेल कहाँ। पहिने बेटीक जनम भेल? मुदा पुछबो केकरा करबै? बेटा-बेटे भेल, पुतोहु कनियेँ छथि, तखनि? समाजमे जँ केकरो पुछबै तँ कहत जे बुढ़िया बताह भऽ बड़बड़ाइए। गुनधुनमे सुधनी कोनचर लग ठाढ़ भेल ने आगू बढ़ैत आ ने पाछू ससरैत। अपन दतारी दोसरो-तेसरो तँ पुछैवाली छथिए। मुहाँ-मुहीं नै पूछि हएत, मुदा पुछबा तँ सकै छियनि। चोटे आँगन दिस घूमि पुतोहुकें हाथक इशारा दैत कहलखिन-

> ''कनियाँ, कनी एम्हर आउ।''

ओसारपर बैसल धीरजकें मिसिओ भरि शंका नै भेलनि जे एहेन कोन गप छी जे सोझहामे नै बाजि माए कातमे कहै छथिन। शंको केना होएत चुल्हि-चौकाक बात तँ सासु पुतोहुएकें ने कहथिन, तइले बेटाकें किए कोनो तरहक कुवाथ हेतनि। लगमे अबिते सुधनी बुधनीकें कान लग फुसफुसा कऽ बजली-

"कनियाँ, अहाँ तँ अखनि नव-नौताड़ि छी, अखनि ओते नै बुझबै मुदा माए तँ छथि। चुपचाप हुनकासँ बूझि लिअ जे जौंआ संतानमे पहिने बेटीओक जनम होइ छै?"

सासुक बात सुनि बुधनी मानि तँ गेली, मुदा तैयो बजली-

"ओना काल्हिए हम पूछि लेबनि, मुदा कहियो बाजल छेली जे पहिने बेटेक जनम होइ छै।"

पुतोहुक बात सुनि सुधनी ठमकि गेली। मुदा तैयो बजली-

"कनियाँ, आँखिक देखल अहूँकेँ अछि आ हमरो तखनि सुनलेहे बात मानब उचित हएत?"

सासुक बात सुनि बुधनी ठमकली। बल्ला आकि चूड़ी देखैले कोन ऐनाक जरूरी कोन स्त्रीगणकेँ होइ छै। ई तँ सद्य: आँखि देखैत अछि। जेकरा आँखि नै देखैत तइले ने ऐनाक जरूरति। कमसँ-कम एते तँ हेबे करत जे जहिना ऐ समाजमे (सासुरक) तहिना नैहरोक समाजमे अहिना लोक उनटा-पुनटा बुझबो करैए आ बजबो करैए। तैसंग ईहो हएत जे माइयो अपन बातमे मजगूती अनैले दोसरो-तेसरोकेँ पुछथिन वा निम्न बूझि नहियोँ पूछि सकै छथिन। मुदा जँ नै पूछि लेब आ झोंकमे कहियो बुढ़ही झोंकि देलनि तखनि तँ अनेरे आफतमे पड़ि जाएब। पुछैएमे की लगल अछि यएह ने आठ आना मोबाइलमे खर्च हएत, तइले अनेरे सासुक धौजनि बेसाहि कऽ रखब नीक नै। मने-मन बुधनी विचारिते छेली आकि अंकुड़ित भगवान जकाँ मनमेअकुड़लनि। अकुड़लनि ई जे अपना जौंआ सन्तान भेल, किनको एक-दू-तीन संतान होइ छन्हि, हमर बेथा जहिना ओ नीक जकाँ नै बूझि सकै छथि तहिना तँ हमहूँ नहियेँ बूझि पएब। अपना दू संतानक बेथाक अनुभव अछि, दोसरकेँ तीनक अनुभव रहितो एक-एकक अनुभव छन्हि। डायविटीज आ ब्लडपेसर किनको एक संग छन्हि आ किनको भेलनि दुनू मुदा बेरा-बेरी। अनुभव तँ दुनू गोटेकेँ दुनू बिमारीक भेलनि मुदा की दुनूक इलाजमे सोलहन्नी एके दबाइ कएल जाएत...।

पत्नीक ओझराएल मनक ओझरी चेहराकेँ रसे-रसे ओझरबैत चलि जाइत। ओसारपर बैसल धीरज बेर-बेर चेहरा देखैत तँ टुटल फूल जकाँ

बेसीए मलिन होइत चलि जाइत देखैत। मुदा सासु-पुतोहुक बीचक विवादमे पड़बो ओते नीक नै हएत जेते हेबा चाही। एकर माने ई नै जे परिवारमे कियो चिन्तित हुअए आ केकरो लेल धैनसन, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत? मुदा पुछबो केना करब? दुनूक बीचक सवाल जँ एक पक्षसँ पूछब तँ दोसर पक्ष पञ्छीए जकाँ ने बुझती, जँ एकठाम बात उठाएब आ ओ लिंग-विशेषक होइ तखन ने माए बाजत आ ने माइयक डरे (सोझमे रहने) पत्नी बजती। तखनि? मुदा जे बदनामे चलि गेल ओ कहियो ने कहियो निकलबे करत, तहिना जे परिवारक भीतर घूसि गेल ऊहो भुमहुर-आगि जकाँ धुँएबे करत, तइले अनेरे मन घोर-मट्ठा करब नीक नै, दुधे किए ने पीब लेब जे सभ संगे रहत। दूधक मोहनि जकाँ धीरजक मनमे चलिते रहै आकि दोसर अकुड़ गेल। ओ ई अकुड़ल जे ऐ घरक अगिला भार (चलबैक भार) तँ अपने दुनू बेकती (पति-पत्नी) पर पड़त, जाबे माए जीबैए ताबे गारजन बूझि भार हटौने छी मुदा अखने जँ ओ बिमार पड़ए आ भार उठबै जोगर नै रहि जाए तखनि तँ एकाएक भार पड़बे करत। जँ कोनो काजक भार अबैसँ पहिने अदहो-छिदहो बूझल रहत तँ एते हल्लुक तँ बनिए जाइ छै जेते सोलहन्नी बिनु बूझलक होइ छै। समाजमे देखै छी जे किनको सत-सतटा बेटी भेने डीह-डाबर दोसराक हाथ चलि जाइ छन्हि, तँ किनको सात बेटा भेने गामक अनको सभटा इनार-पोखरि हाथ चलि अबै छन्हि। धू: अनेरे मनकेँ छिछियबै छी। देखै छी जे एते-दिन बापे बेटाक भिनौजी होइ छेलै आब दुनू बेक्तीओमे देखै छी। तखनि अनेरे मन किए बौआएब किए ने दुनू बेकती पति-पत्नी बनि बुढ़ाड़ीओमे कोहवर घरक गप करब। पत्नी दिस नजरि उठा धीरज बाजल-

> ''एम्हर कनी सुनू। अखनि भने माएओ अँगनामे नै अछि, एकटा बात पुछै छी?''

सासुसँ हटि बुधनीक जिज्ञासा पति दिस बढ़ल। जहिना बाल-बोध बच्चा खिस्सा सुनि माल-जालक बच्चा जकाँ 'घूटडू-घू' सुनि मुँह बाँबि दइ छै तहिना जिज्ञासा भरल बात सुनैले बुधनी मुँह उठा बजली-

''की?''

धीरज-

> “अहाँक पीड़ा (उनैस दिनक) देखि मन महकि गेल जे आब संतान नै हुअए सएह नीक। दूटा भेबे कएल जँ दुनूकेँ दुनू बेकती सेवा कऽ मनुख बना ठाढ़ कऽ देबै तँ एकसँ दू परिवार तँ अवाद हेबे करत किने?”

हाल-बेहाल भेल बुधनी देहक मन मानि गेल जे पतिक विचार सोलहन्नी नीक छन्हि। हूँहकारी भरैत बजली-

> “अहाँ विचारकेँ काटब से दरकार हमरा अछि। तखनि तँ पुरुख अपने खेतमे आड़िओ दइए आ तामस उठै छै तँ ढाहियो दइए। तँए अहाँ जानी। हम तँ संगीए ने भेलौं। बड़ हएत तँ एतबे ने, जे कानि-कानि लोककेँ कहबै, संगियाँ मरि गेल हम भुतियाइ छी।”

जिनगीक सचाई जहिना धीरजकेँ तहिना बुधनीकेँ एक-दोसरा दिस खिंचए लगल। आगूक लेल दुनूक जिज्ञासा बढ़लनि। तही बीच सुधनी खोंइछामे झिंगुनी आ मुट्ठीमे सुखेलहा कड़ची नेने पहुँचली। अबिते चुल्हि लग कड़ची-जारनि रखि पुतोहुकेँ कहलखिन-

> “कनियाँ, बड़ीकाल भऽ गेल। बच्चा सभकेँ दूध पीएलौं?”

कड़ची रखि ओसारपर झिंगुनी खोंइछासँ उझलि बुधनीक लग बैसि सुधनी वाड़ीक खिस्सा पसारि देलनि। बाजए लगली-

> “उनैसे दिनमे वाड़ीक दशा बिगड़ि गेल। लत्ती सभ मचान छोड़ि-छोड़ि निच्चाँ उतरि कठुआ-कठुआ गेल। रामझिंमनी पँच-पँच, छह-छहटा जुआ कऽ गाछेकेँ कठुआ देलक। तेते ने खढ़-पात जनमि गेल जे वाड़ीक रुइखे खतम भऽ गेल अछि।”

वाड़ी-झाड़ीक अपसोच सासुकेँ करैत देखि पुतोहु मलसारि दैत बजली-

> “वाड़ी गेल तँ गेल मुदा घरमे जे दूटा लाल आएल से?”

पुतोहुक बात जेना सुधनीकेँ हिलकोरि देलकनि। अगम पानिमे हेलए लगली-

> ''से तँ अही दुनू लालले ने ओ सभ अछि। लालक पतिपाल हेतै तँ ओ सभ ढेर हेतइ।''

पुतोहुक बात सुधनीकेँ धारक पानि जकाँ भँसौलकनि नै समुद्र जकाँ हिलकोरए लगलनि। परिवार तँ खाली मनुखे टाक नै होइ छै, घर-दुआर, खेत-पथार, माल-जाल इत्यादि अनेको मिला कऽ बनै छै, जे मनुखसँ लऽ कऽ आनो-आनो वस्तुकेँ एक निश्चित सीमामे बान्हि दइ छै। मुदा एक बान्हमे रहितो तँ सबहक अपन-अपन महत्तो छै आ काजो छै। जइसँ एक दोसरकेँ जानो-पराण दइ छै आ जिनगीओ दइ छै। वाड़ी-झाड़ी, तीमन-तरकारी तँ मासे-मास दिने-दिने होइत-जाइत रहैए मुदा मनुख तँ से नै छी। तँए मनुखे ने मूल भेल। मूलक मूल्य तँ तखने ने बढ़ैत जाएत जखनि मूलक सेवा हेतै। मूलेक पानि ने छीप धरि रस पहुँच हँसबै-खेलबैए। अनेरे मनमे धौजनि करै छी। जेना सुधनीक मन हल्लुक भेलनि। बजली-

> ''कनियाँ, आब तँ दूध थीर भऽ गेल हएत, कहू जे दुनू बच्चाकेँ भरि पोख दूध होइ छै किने। जँ से नै हएत तँ बच्चाक पतिपाल करब कठिन भऽ जाएत। जँ अखनेसँ दूधकट्ट भऽ जाएत तँ सभ दिन खिद-खिदाइते रहत। रंग-रंगक रोग सेहो दबतै, आ अगुओ-पछुओ पकड़तै।''

सासुक बात सुनि बुधनी सकपका गेली। मुदा परिवारेक गार्जनेटा नै, बच्चाक दादीओ ने सुधनी छथिन तँए बाल-बोधक कोनो बात छिपाएब उचित नै बूझि बजली-

> ''माए, एकटा तँ बिसरिए गेल छेलौं, हिनका कहबो ने केने छेलियनि। ई तँ गपपर गप चलल तखनि मन पड़ल।''

पुतोहुक बातमे सुधनीकेँ मिसिओ भरि अनुचित नै बूझि पड़लनि। बजली-

> ''से की?''

“पुरनी (पल्हनि) एकहक घोंट कऽ दुनू बच्चाकेँ सेहो दूध पीआ दइ छै।”

बुधनीक अधखरूए बात सुधनी बूझि गेली। ओ बूझि गेली जे परसौतीक पहिल पूरक तँ पल्हनिए ने होइ छथि। ओना धियान अपनो दिअए पड़त। पल्हनि दस दुआरी होइए। समाजक काज तँ सबहक बरबैरे होइ छै मुदा काजे छोट-पैघ होइए जेकरा लोक पकड़ि चलैए। मुदा खतराक तँ घड़ी अछिए। जँ केतौ (पल्हनिक) हमरा (अपना) काजसँ पैघ काज दोसर ठाम भऽ जाए तखनि जँ ओकरा छोड़ि दिअए ईहो तँ नीक नहियेँ भेल। मुदा जे होउ, एते तँ वेचारी (पल्हनि) चेताइओ देलक जे बच्चाकेँ भरि पोख दूध नै होइ छै। खैर अखनि तक जँ बच्चा नीक जकाँ जीब गेल तँ आइएसँ दोसर जोगार कऽ लेब, जरूरी अछि। बजली-

“अच्छा कनियाँ एकटा बात कहू जे वेचारीकेँ खुआ-पीआ दइ छिऐ किने? वेचारी एहेन पीतमरू अछि जे आइ उनैसम दिन बीति रहल अछि अखनि तक अपन सिदहो-बोइननै मंगलक हेन। जखने बच्चा जनमैत अछि तखन माइए-बापटा कें कि परिवारो-समाजोकेँ आशा जगिते छै। मुदा ईहो नीक नै जे जे मुँह खोलि नै बाजए ओकरा सुपतो नै भेटै। आइ पल्हनि जखने औत, तखने मन पाड़ि देब, जेना जे हेतै से दाइए देबै।”

एकटा बच्चाकेँ दूध पीआ बुधनी सासुक कोरामे देलक। दोसर बच्चाकेँ ओछाइनसँ उठा कोरामे लइते छल आकि हकोपरास भेल पल्हनि पहुँचली। जेना समैपर नै एने कियो अपनाकेँ दोखी बुझैत तहिना पुरनीओ बुझलक। अबिते बाजलि-

“काकी, अबेर भऽ गेल।”

पुरनीक बात सुनि सुधनी गुमे रहली। मुदा सुधनीक गुमी पुरनीकेँ आरो झकझोड़ि देलकै। झकझोड़ि ई देलकै जे भरिसक मने-मन सुधनीकाकी गुम्हरि रहली अछि। मुदा से नै भेल, भेल ई जे पुरनीक बोली-वाणी, चालि-ढालि, चेहरा-मोहरा जोर-जोरसँ बाजि रहल छल जे पुरनी तेहेन उकड़ू काजमे

फँसि गेल छेली जे तन-मन दुनू फ्रीसान भऽ गेल छेलनि। मुँहसँ फुफड़ी उड़ैत थाकल-मारल बटोही जकाँ देखि सुधनी बजली-

“पुरनि, पहिने हाथ-पएर धो कऽ किछु खा लिअ। जखनि आबि गेलौं तखनि काज हेबे करतै। किए एते परेशान बूझि पड़ै छी?”

सुधनीक बात सुनि पुरनी पोखरिक पानि जकाँ थीर होइत बजली-

“काकी, की कहबनि। दछिनवारि टोल प्रसव करबए गेल छेलौं। उनटा बच्चा छेलै। दरदे कनियाँ छटपटाइ छेली, बच्चा जनमिते ने छेलनि। मुदा कहुना-कहुना कऽ सम्हरल। ओही काजमे एते अबेर भऽ गेल।”

पुरनीक बात सुनि सुधनी बजली-

“अहिना होइ छै। ने एकेटा मनुख अछि आ ने एके रंग काज हेतै। मुदा मनुखो तँ कम भेदिया नै ने अछि, देखिओ-सुनि आ गरो अँटका कऽ भेद तँ बूझिए जाइए।”

हाथ-पएर धोइ पुरनी खाए लगली। खाइते-खाइते बजली-

“काकी, अपना बच्चाकेँ भरिपोख दूध नै होइ छै, हमरो कोनो ठेकान नै अछि। से कोनो ओरियान कऽ लोथु। अखनि अन्न चटबैबला थोड़े भेलनि जे अन्न चटौथिन।”

पुरनीक बात सुनि सुधनी बजली-

“बौआकेँ कहलिऐ हेन जे ओना गाएओ-महिंसक दूधसँ काज चलि सकैए मुदा नीक हएत जे बकरीए दूध दिऐ।”

पुरनी-

“हँ-हँ काकी बेस विचार छन्हि। एना तँ बजारोक दूध एकपर एक छै मुदा ओकर कोन बिसवास। अपना हाथक जे अछि तेकरे ने बिसवास।”

दुनू गोटेक (माएओ आ पल्हनिओ) बात सुनि धीरजकेँ भेल जे जखनि दूध लेल बकरीक ओरियान करैएक अछि तखनि समए गमाएब नीक नै। जरूरीक जे काज अछि जँ ओकरा पछुआएब आकि अनठाएब ओ परिवारकेँ पाछू धकेलब भेल। जखनि बुझै छिऐ जे एक परिवार रहितो, सभ काज परिवारेक रहितो करैक तँ किछु सीमा अछिए। उठि कऽ आँगनसँ निकलि दूधारू बकरी भँजियबैले विदा भेल। समाजो तँ समाज छी। जहिना रंग-रंगक मनुख तहिना रंग-रंगक धनक खाड़ी सेहो बनले अछि। कोनो दरबाजा एहनो अछि जैठाम हाथी-घोड़ा रहैए आ कोनो एहनो अछि जैठाम किछु ने रहैए। मुदा तँए कि गाममे गाए-महिंस बकरी नै अछि से तँ अछिए।

धीरजकेँ आँगनसँ निकलिते बुधनीकेँ अपन बात बजैक गर भेटल। गर ई जे एक परिवार रहितो, सभ बात बुझला पछातिओ सभ लग सभ बात सभ नै बाजि पबैए। बजली-

> ''भने माएओ छथि आ अहूँ छी, जिनगीमे एहेन दुख कहियो ने भेल छल, जे भेल तँए...?''

बुधनीक बात सठलो ने छल आकि बिच्चेमे पुरनी बजली-

> ''कनियाँ, हमर-अहाँक (नारीक) यएह अग्नि परीछा छी। राजासँ रंक तककेँ ई परीछा होइ छै। तइले दुख-बेकल मनमे रखब तँ दुनियाँ चलत।''

पुरनीक विचारकेँ बुधनी सुनिते द्रवित भऽ गेली। एक संग मनमे अनेको प्रश्न उठि गेलनि। परिवार लेल बच्चा अनिवार्य ऐ दुआरे अछि जे वएह बच्चा बढ़ैत सियान-चेतन होइए, जैपर कुले-खनदान नै परिवार, समाज, देश-दुनियाँ ठाढ़ अछि। एहेन जे मनुखक अनिवार्यता छै तैठाम संतानक अनिवार्यता तँ छइहे। मुदा जिनगीक तँ कोनो ठेकान नै अछि, बच्चासँ सियान आकि बूढ़ धरि कखनो-कहियो कियो मरि जाइए, तखनि? एक बच्चापर आश्रितो तँ नहियेँ रहल जा सकैए। दोसर ई जे जँ बेटा-बेटीकेँ बरबरि मानि लेब, सेहो तँ सोलहन्नी उचित नहियेँ। हँ कोखिक लेल संतान भेल मुदा सामाजिक जे ढाँचा अछि तइमे बराबरी केना औत। मुदा मनो तँ मने छी। देहमे दुख भेने जे विचारमे अबै छै, सुख भेने बदलि जाइ छै। अपने दुनू परानी विचार केलौं जे एहेन दर्द (बच्चा जन्मक) दोहरा कऽ नै

उठाएब मुदा...? पीड़ाएल मन बुधनीक दृढ़तासँ मानि गेल जे आगू सन्तान नहियेँ हएब नीक। बजली-

> ''अखनि तँ सोझहामे ईहो दुनू गोरे छथिए, नीक-बेजए बुझबे करै छथिन।''

बुधनीक बात सुनि पुरनी बजली-

> ''कनियाँ, अगुताएल किए छी, अखनि पहिने देह-हाथ सक्कत बना लिअ। ताबे बच्चो सकताइए। अबिते-जाइते रहै छी जेहेन अपन परहेज करब, तेहेन जे चाहब से हेतै।''

पुरनीक बातमे बुधनी जिनगीक बिसवास पौलक। आँखि उठा पुरनीक आँखिपर दैत अपन बेथा कहलक। बुधनीक बेथीत मन देखि पुरनी बजली-

> ''कनियाँ, जहिना कामिनी फूल महिनामे चारिए दिनक जिनगी पबैए तहिना सन्तानक खेल सेहो अही चारि दिनमे निहीत अछि। पछाति बुझा देब।''

गप-सप्पकेँ सीमा छुबैत देखि सुधनी पुरनीकेँ पुछलखिन-

> ''तोहर सिदहा केते हेतह। कहुना भेलह तँ तूँ दसारी भेलह, तँए तोहर रस्ता रोकब उचित अपन रस्ता रोकब हएत। दाइए दइ छिअ। अपन नेने जइहऽ।''

सिदहा सुनि अखनि धरिक कएल काजक फल देखि पुरनीक मन खुशीभेल, बाजलि-

> ''काकी, हमर खेत-पथार, माल-जाल, राज-पाट सभ तँ यएह छी। दोसर कोन असरा अछि। आइ दिनसँ हिनका ऐठाम खेनिहार सभ आबए लगतनि। मुदा जे काज हम केलियनि सेहो कियो करतनि।''

पुरनीक बात सुनि सुधनी सहमि गेली। बजली-

> ‘‘कनियाँ, एक बेर अपना मुँहसँ बाजि जाउ, केते हएत। काजक भीर हमरो नजरिमे अछि। अन्हार घर साँपे-साँप होइ छै। समाजमे जेते हमरो सन लोक दइए तइसँ कम नै देब।’’

सुधनीक विचारमे आशा देखि पुरनी बाजलि-

> ‘‘बेटाक अदहा बेटीक सिदहा भेल, तँए दोबर नै डेढ़िया भेल। अनका लिए जे होउ, मुदा हमरा लिए तँ जेहने बेटा तेहने बेटीओ भेल।’’

मास दिनक कमला-कमल भऽ गेल। सुभ्यस्त समए भेने गामोक चुहचुही ऐ साल नीक अछि। धनमंडल भेल अछि। बच्चाक निबिते जहिना पमरिया, बकूनियाँ, हिजरा-हिजरनीक ढबाहि लागत, तहिना ठको-फुसियाहक ढबाहि लगबे करत किने?

दीपेक पमरिया, कहियो बपहरक नाओंसँ तँ कहयो ममहरक नाओंसँ एबे करत। से कि कोनो एकेठामक औत नैहर-सासुर सबतरि पसरत। जीविकाक तँ दोसर साधनो ओकरा छइहो नै ने।

दोसर मास चढ़िते चारि गोटे पमरिया पहुँचल। बेटाक बधैया मांगए। मुदा बेटीक?

❍❍❍

वारंट

बोरिंग-दमकलक कर्ज चुकौला पछातिओ हरिहर काकाकेँ केसक वारंट भऽ गेलनि। ओना वारंटसँ घबड़ेला नै मुदा एते शंका तँ आबिए गेलनि जे रंग-बिरंगक चेहराक बीच जीनाइओ तँ असान नहियेँ छी।

सरसठिक रौदीक पछातिक समए। सरकारोक नजरिमे कनी पानि आएल आ रौदियाएल किसानोक मन ठेहियाएल। अखनि धरि जे विचार-सोलहन्नी भाग-तकदीरक बीच जीवैत चलि आबि रहल छल तइमे कनी धक्का लगलै। धक्काक कारणो भेल जे गामक-गाम सून भऽ भऽ मसान जकाँ बनए लगल छल, बनबो कएल। नम्हरो-नम्हरो गाछमे सूखनियाँ लगि गेल केते रंगक फलो आ अन्नो गामसँ लोकेक संग पड़ा गेल। माल-जालक उजाड़ भऽ गेल। खेती-पथारीक चर्चे की, जे मिथिला दार्शनिक जगह रहल ओइ मिथिलाक दुर्दिनक बीच कुदिन सेहो आबि गेल।

बी.डी.सी. मीटिंग बिहानपुरमे भेल। जेना छोट आँट-पेटक मीटिंग तेना खूब जमगर भेल। गामसँ जिला धरिक अफसर-अफसरान एकठाम चारि घंटा बैसला, कम नै भेल, मुदा तैबीच चाह-पान-जलखैमे जे समए लगल हुअए तइ लगा कऽ। कलक्टर साहैब सभसँ सिरगर रहथि। ओना अखुनका जकाँ नवतुरिया नै, उमेरगर सेहो। हुनके बातक प्रतीक्षामे सभ कियो। उठि कऽ तोहफा बाँटए लगला। श्रीमुखसँ व्याख्यान देलखिन जे सौनक मेघ जकाँ सरकार लटकि कऽ निच्चाँ आबि गेल, तँए मुँहमंगा बर्खाक झड़ी लगत। इच्छित वस्तु लोककेँ भेटत। कहि चारि श्रेणीमे गाम बाँटि देलनि। तीन श्रेणीक किसान आ चारिम बोनिहार। बोनिहार लेल गाए-महिंस, रिक्शा, टमटम इत्यादि भेटतै जइमे तीन हीसमे एक हीस सरकार देत आ दू हीस अपन लगतै। तहिना सीमांत किसानकेँ बोरिंग दमकल तिहाइ छूटपर भेटत। आ जे अढ़ाइ बीघासँ पाँच बीघाक किसान छथि हुनका चौथाइ छूट भेटत। कहि मुस्कीआइत बैसि गेला। धन बर्खा हुअ लगल। सौनक सतैहिया लादि

देलक। खाद छूटपर, बीआ छूटपर, खेतीक औजार छूटपर, गाए-महिंसक संग रिक्शा, टमटम, लोडस्पीकर, चूड़ी दोकान तक।

नाराक संग मीटिंग समाप्त भेल। भोजन-भात चलल ढेकार करैत जश देत सभ सीमान टपला।

हवा जकाँ समाजमे उठल। गाम-गामक लोक ब्लौक दिस मुड़ीआरी देलक। मुदा अनभुआर माल-जाल जहिना डोरी-खुट्टा तोड़ि लंक लऽ पड़ाइए, जे गोटे-गोटे पकड़ेबो करै छै आ गोटे-गोटे बौरौ जाइते छै। खैर जे होउ, भागल चोरक भगबे नफा। तैसंग ई बात सेहो, सभ नै बूझि पौलक जे आम खाइले गाछ रोपए पड़ै छै। भलहिं गाछ रोपब असान किए ने होइ मुदा आमक चुनाव कऽ माटि-जगहक चुनाव सेहो करए पड़ै छै, जँ से नै तँ धनखेतीक कलम जेहने जुतिगर होइ छै तेहने हएत। व्याख्यानक क्रममे उधिया कऽ एते लोक भाँसि गेल जे बुझैक होशे ने रहलै जे गीता जिनगी छिऐ ने कि पाठ। अध्यात्म दर्शने छिऐ आकि जीवन दर्शन। तहिना कलक्टर साहैब विचारकेँ सभ बुझलक जे मीटिंग समाप्त हेतै आ काल्हि जखने ऑफिसक कुरसीपर बैसै जाइ जेता कि धाँइ-धाँइ गाममे बोरिंग-दमकलक ट्रक संग पंजबिया गाएक पथार लगि जाएत। अकास-धरतीक जे मिलन स्थल क्षितिज होइ छै ओ हस्तांतरणक होइ छै। बोरिंग-दमकल बेपारीक घरसँ जहिना औत तहिना पशुपालकक घरसँ पशु औत। जइ दृष्टिएँ मिथिलांचल कौड़ीओ बरबरि नै। सोलहन्नी बहरबैयाक आशा।

ब्लौक दिस गामक लोक मुड़ी उठबैत पौलक जे पहिने-ब्लौकक रजिष्टरमे नाओं दर्ज करबए पड़त, ओ कागत आगू बढ़ि अगिला ऑफिसमे दर्ज भेला पछाति रजिष्टरमे औत। ओइठामसँ बैंक पठौल जाएत, तेकर पछाति काजक दौड़ शुरू हएत। काजोक दौड़ तँ हल्लुक नहियेँ। ब्लौकक चक्करक संग जिलाक चक्कर आ तैपरसँ बैंकक चक्कर धरिमे दू बर्ख समए आ बिनु हिसाबक खर्च जहिना सभ गमौलक तहिना हरिहर काका सेहो गमौलनि। मुदा तेकर मिसिओ भरि चिन्ता नै भेलनि। चिन्तो केना होइतनि, जहिना हजार हाथक गाछक छिप्पीपर चढ़ला पछाति जँ धरतीपर खसल वा पड़ल फलपर नजरि पड़ै छै, जेकरा पबैले गाछपर सँ उतरैक समैओ आ भीरो किछु ने बूझि पड़ै छै तहिना मनमे घमौड़ लैत रहनि। समए आ खर्चक फल एकटा टटके जरूर भेटलनि जे जहिना परिवारमे तहिना समाजमे गप-सप्पक

क्रम बदलल। रजनी-सजनीक खिस्सामे कमी आएल, खेती-पथारी, माल-जाल इत्यादिक बात समाजक मंचपर आएल। छोट-मोट मीटिंग भी.एल.डब्लू.क माध्यमसँ हुअ लगल। जइसँ लोकक आकर्षण बढ़ल। बैंकक माध्यमसँ कर्जमे भेटत आ बैंकेक माध्यमसँ असुलीओ हएत। मुदा तैबीचमे जिला स्तरपर सब्सिडी-ऑफिस हएत। जाबे ओ आदेश बैंककेँ नै भेटतै ताबे कटौती नै हएत, लोनक सूदि चलैत रहत। तेतबे नै छह मासक बीच जँ अदा नै करब तँ सूदिओ मुइरे पकड़ि लेत।

सरसठिक सरकारक मालगुजारी माफक जबरदस असरि भेल। लोकमे नव बिसवास जगल जे जइ मालगुजारीक चलैत खेत सभ निलाम होइ छल आब नै हएत। जहिना मालगुजारी देनिहार बिसरि गेल तहिना सरकारो अपन कर्मचारीकेँ समेटि दोसर फाइल दिस लगा लेलक। ने मालगुजारी देनिहार आ ने लेनिहार रहल। मुदा बैंकमे टटका रसीदक जरूरति भेल। मालगुजारी माफ मुदा केते माफ तेकर चिट्ठी ऑफिसेमे लटकि गेल। जहिना सबहक तहिना हरिहरो कक्काक साल भरि टहलैएमे चलि गेलनि।

हरिहरो काका तँ जिद्दी, तहीले समाजमे जश-अजश सदिकाल होइते रहै छन्हि। जश ई होइ छन्हि जे काजक प्रति जिद्दी छथि, मुदा काजे तँ उनटा-पुनटा अछि नीको आ अधलो, दुनू तँ काजे छी। जे विपरीतो दिशामे काज करबे करत। जिद्दी तेहेन जे रगड़ि कऽ टटका रसीद कटा बैंकसँ रूपैआक निकासी कराइए लेलनि। पहिल खेप दू सए रूपैआक चेक माइनर एरीगेशनक नाओंसँ देलकनि। जिनगीक पहिल चेक देखि हरिहर काकाकेँ नीक खुशी भेलनि। खुशीओ केना ने होइतनि, छोटके चेक ने बड़का चेक बनैए।

बैंकसँ निकलि हरिहर काका माइनर एरीगेशनक भाँजमे विदा भेला। भँजियबैत-भँजियबैत भाँज लगलनि। मात्र दू गोटेक ऑफिस। बोरिंग गाड़ैक ठीकेदारी। चेक जमा करिते रजिष्टरमे दर्ज भेला पछाति ठीकेदारक नाओं कहलकनि ठीकेदार तँ ठीकेदारे छी। चाहे-सरकारी हो आकि गैर सरकारी ओ तँ सबहक ठीकेदार भेल। एक संग पचासो ठीकेदारी चलि सकै छै, तँए

ओहन लोकक भेँट तँ थोड़े कठिन अछि। ठीकेदार भेटलनि। भेटिते पुछलखिन-

"ठीकेदार साहैब, कहिया तक काजमे हाथ लगत।"

ठीकेदारी शैलीमे ठीकेदार बजला-

"काल्हि नै परसू आउ?"

ऐ दौग-बरहामे पाँच दिन पछाति फेर भेँट भेलनि। भेँट होइते पुछलखिन-

"अहाँक भेँटो हएब कठिन होइए तँए एकटा निठाही दिनक नाओं कहू।"

ठीकेदार स्पष्ट कहलखिन-

"मात्र दूटा पलान्ट छै। अहाँक नम्बर आठम भेल। बीचक काज भेला पछाति हएत।"

हरिहरो कक्काक तीन गोटेक बैच रहनि। तीनू गोटे विचारलनि। काज जहिना अपन तहिना दोसरोक। प्रतीक्षा तँ करए पड़त। पुछलखिन-

"केते समए लगत?"

"महिना दिनमे भऽ जाएत।"

मास दिन पछाति तीनू गोटेक संग हरिहरो काका ठीकेदारक खोजमे निकलला तँ पता लगलनि ओ विधान सभा एलेक्शनक भाँजमे चलि गेल छथि, छह मास पछाति औता। पछुआइत काज देखि सबहक धैर्जक सीमा डगमगाइत तँ रहबे करनि। समए बीति रहल अछि कर्जक सूदि बढ़ि रहल अछि। जहिना समए बेठेकान भऽ गेल तहिना परिवारक काज सेहो बेठेकान भेने आमदनी टूटि रहल अछि। ऐसँ नीक तँ अपन खेत बेचि बोरिंग करबितौं। कोन फेरामे पड़ि गेल छी। अधमड़ू साँप जकाँ बनि गेल छी।

साल बीति गेल। ऑफिसक उनटा फेरि भऽ गेल। जहिना दुनू स्टाफ (अफसर-किरानी) बदलि गेला तहिना ठीकेदारो छोड़ि कऽ पुलक ठीकेदारीमे चलि गेल। भाँज-भुँज लगबैत मास दिनक पछाति फेर काजकेँ पटरीपर

अनलनि। कारगर अफसर। काज करैक उग्र जिज्ञासा। दुनू प्लान्टक भाँज लगौलनि। एकटा काजमे लगल दोसर माटिक तरमे चलि गेल। भेल ई जे अंधराठाढ़ी इलाकामे लेअर बहुत निच्चाँमे छै। साढ़े चारि सए फुट बोर भेला पछाति लेअर भेटलै। बोरिंग लोड भेल। लोड भेला पछाति जखनि क्रेसिंग पाइप उखाड़ब शुरू भेल तँ पचास फीट तरेमे सौकेट फेल कऽ गेलै। पचास फीट निकलल बाँकी माटिएमे रहि गेल। तहूमे तेहेन जगहपर गेल जे अफसरो बेवस भऽ गेला। कोनो सस-बस नै चललनि। अंतमे बेवस होइत हरिहर काकाकेँ कहलखिन-

"जँ रहि गेलौं तँ जरूर बोरिंग हएत नै तँ देखिते छिऐ, ऑफिसक काज आइ एतए छी काल्हि केतौ रहब।"

जिज्ञासु हरिहर काका, अपन काज बिसरि पुछलखिन-

"सर, एना किए अनियमित छै?"

अफसर-

"किए छै तेकर कोनो एक्केटा कारण छै। रंग-बिरंगक कारण छै। अनेरे कोन समुद्र उपछै भाँजमे जाएब, ओकरा छोड़ू। हेबा की चाहै छेलै से कहै छी।"

ओझरीमे जहिना अमती काँट, पेरासूत ओझराइ छै तहिना ने मनो ओझराइ छै। तइसँ नीक हरिहर काका बुझलनि जे जएह कहै छथि सएह नीक। पुछलखिन-

"की हेबा चाहै छेलै?"

"होइओक बहुत रस्ता छै, तँए एकटा कहब उचित नै हएत मुदा सही रहने, नै सोलहन्नी तैयो उचित तँ भेबे कएल।"

मानब मुड़ी डोलबैत हरिहर काका कहलखिन-

"एकरा के टोनत?"

अफसर बजला-

"सुनू, नीक होइतै, जे ऑफिसेमे कागत-कलमक करै छथि हुनका निश्चित समए, निश्चित काजक भार देल जान्हि। तइ काजमे की बाधा उपस्थित भऽ रहलनि तेकर निश्चित समैपर देखल जान्हि।"

मुड़ी डोलबैत हरिहर काका बजला-

"हँ, से तँ देखिते छिऐ जे काज जेहेन होउ मुदा ऑफिसक कागत टन्च रहैक चाही। नै तँ दुनियाँ देखै छै जे कोसी योजना सन योजना अरबोक योजना, मुदा राज रौदियाएल अछि। एना जँ सराध-बिआह दुनू दिस योजना चलत तँ केते आशा।"

माइनर एरीगेशनक दौग-बरहा करैत सालक सिजिन समाप्त भऽ गेल। सिजिनक अर्थ भेल, जे काज माटिक छै ओ सुखारमे हएत। बरसातक समए बोरिंग गाड़ैमे असुविधा होइ छै धसना खसैक डर रहै छै, नव तकनीकसँ गाड़ल जा सकैए। मुदा दुनूक बीच सामंजस केना हएत से मूल भेल। एक पक्ष बुझैए जे पाइ सरकारक छिऐ, तँ दोसर पक्ष बुझैए पाइ जनताक छिऐ, जेकर गेलै तेकर, हमर की। मुदा की तइसँ काज चलतै???

अगिला साल बिहानपुर, तीन बोरिंग-दमकलक संग काजक केंचुआ छोड़लक। किछु गाएओ-महिंस गाम आएल। किछु रिक्शा टम-टम बढ़ने सवारीक सुविधा भेल। मुदा जहिना किछु नव उत्पादित हथियार गाम आएल तइसँ बेसी लूटैक भूत पछुआ बनि पकड़लक। भोज-भात, बिआह-सराध जोर पकड़लक। बैंक कर्ज तर पड़लै। जेकरा असुलैमे शख्तीसँ बैंक पेश भेल जइसँ दिशाहीन समाज डरा गेल! कारोबार कमैत गेलै...।

बोरिंग गड़ौला पछाति सब्सिडी ऑफिसक काज एलनि। जिला भरिमे एकटा ऑफिस। जेते काजक भीड़ तइसँ बेसी खेनिहारक भीड़! पहिल दिन तीनू गोटे हरिहर काका हँसीए-ठट्ठामे ओझरा, घूमि एला। दोसर दिन टेबुलपर जा कहलखिन-

"तीन गोटे बोरिंग-दमकल नेने छी, बाजाप्ता बैंकक कागत अछि, से सब्सिडीक आदेश देल जाए।"

जेना कियो सुनिनिहारे नै! रंग-बिरंगक गप-सप्प चलैत! जहिना स्कूलमे गल्ती केला पछाति विद्यार्थीकेँ ब्रेंचपर ठाढ़ कऽ देल जाइ छै तहिना टेबुलक आगूमे ठाढ़ कऽ देलकनि। घंटा भरिक पछाति कहलकनि-

“परसो आना।”

परसू गेला पछाति फेर परसू। ऊहो भाँज लगबैत जे किनका सम्पर्कमे अबैए, मुदा परसू अंत नै भेल। ने ऑफिसमे दैछना देलखिन आ ने सब्सिडीक कागज ऑफिस छोड़लक।

सतासी-अठासीक भुमकम-बाढ़ि राज्यकेँ हिला देलक। दस हजार रूपैआ बैंक लोन माफक अवाज उठल। नव सरकार बनल। लोन माफ भेल।

बैंकक अंतिम चिट्ठी जखनि हरिहर काकाकेँ पहुँचलनि तखनि केस खर्च सहित जमा कऽ देलखिन।

ओही केसक वारंट हरिहर काकाकेँ भेल छन्हि।

❍❍❍

गामक मुँह फेर देखब

दूटा टेन्टघराड़ीपर ठाढ़, एकटामे अपने दुनू परानी आ दोसर बेटा-पुतोहुक रहैक जोगार ठाकुर प्रसाद कल्हिए कऽ लेलनि। दूटा कुरसी टेन्टक भीतरो आ बाहरो अपना टेन्टमे लगा लेलनि। संगी साथीक संग बेटा-गौरीशंकर कारखाना देखए गेल। असकरे दुनू परानी ठाकुर प्रसाद बाहरक कुरसीपर बैसि, अपन भूत-भविसक गप-सप्प करै छला तखने लंगोटिया संगी रूद्रानन्द लफड़ल उत्तरसँ दछिन मुहेँ पएरे बैंकपर जाइ छला। खेतमे दूटा टेन्टठाढ़देखि रूद्रानन्दक मनमे भेलनि जे भरिसक नट-मघैया सभ आएल हएत। दू-चारि दिन रहत फेर नांगरि ठाढ़ कऽ घसकत। मन तँ मानि गेलनि मुदा आँखि नै मानलकनि। ओम्हरे (टेन्ट दिस) लटकि गेलनि। लटकि ई गेलनि जे कहेनधिया-पुता छै, केहेन कुत्ता-बिलाइ पोसने अछिसेतँ तकनहि देखबै। चारिडेग आगू बढ़िते दुनू परानी ठाकुर प्रसादपर नजरि पड़लनि। चिन्हार लोक लग आँखि घुमा कियो अनचिन्हार बनैए मुदा अनचिन्हारोक नजरिपर पड़ने तँ कहाइए जाइ छै जे 'केतए' रहै छी? पैंतिस बर्ख पहिलुका ठाकुर प्रसादकेँ देखि रूद्रानन्द पुछि देलखिन-

"भाय, हाल-चाल ठीक अछि किने?"

अपन दायित्व निभाएबबूझि ठाकुर प्रसादक मनमे एलनि जे एकतँ पुरान लंगोटिया संगी रूद्रानन्द, तैपर आगूसँ हाल-चाल सेहो पुछलनि उत्तर दैत बजला-

"सभ नीक अछि भाय, चाह पीब लिअ, तखनि जाएब।

धड़फड़ाएल रूद्रानन्द बजला-

"भाय, बैंक काजसँ जाइ छी। कनीको पछुआ जाएब तँ पाछु पड़ि जाएब। तहूमे बैंकक स्टाफ सभ तेहने अछि जे धोतीबला सभकेँ तेते खरिआइर-खरिआइर पुछै छै, जे अनेरे देरी लगा दइ छै। ओम्हरसँघूमब तखनि चाहो पीब आ गपो-सप्पो करब।"

कहि आगू बढ़ैत सुनटे मुहेँ बजला-

''खेतकेँ घराड़ीओ बनाएब आकि खेते रखब।''

बजैत-बजैत रूद्रानन्द एते आगू बढ़ि गेला जे ठाकुर प्रसाद जवाब देब उचित नै बुझलनि। जवाबो तँ तखनि ने जवाब जखनि सुनथि। मुदा एहेन प्रश्न मनमे रोपा गेलनि जे खट-खुट करब शुरू केलकनि। घराड़ीकी भेल आ खेत की भेल? बिनु घरक तँ वाड़ी भऽ सकैए। मुदा वाड़ीओतँझाड़े-झड़ लगौलापर होइए, सेहो नै भेल। चौमासो नहियेँ भेल, किए तँ जइमे चौमासा उपजा होइ। तखनि तँ ने घराड़ी भेल आ ने वाड़ी, आ ने चौमास, तखनि तँ ठीके खेत भेल। मुदा फेर दोसर प्रश्न मनकेँ लपकि लेलकनि। लपकलकनि ई जे खेत केना घराड़ी बनै छै, आ घराड़ी केना खेत बनै छै?

अखनि धरि ठाकुर प्रसाद लोहाक इंजनेक बात बुझै छला, खेत-पथारक नै। मुदा प्रश्न उठि गेलनि खेत-पथारक। दोसर कियो तेहेन लगमे नै जे प्रश्न उठा डारि-पात छोड़ैत फूल-फड़ धरि पहुँचितथि। लगमे पत्नीटा बैसल। जिनकर दुनियाँ जारनि-काठीसँ बाढ़िन धरि। मुदा असकरे जँ कोनो प्रश्नकेँ खोदहऽ चाहब तँ आगूमे बैसल पत्नी बीचमे किछु-ने-किछु टपकिए जेती।तँए नीक हएत जे हिनका ऐठामसँ टारि किछु विचार करी। सुपते मुहेँ कहबनि जे किछु विचारए चाहै छी,तँए अहाँ ऐठामसँ चलि जाउ। सेहो उचित नहियेँ हएत। लूरि-भासमे भलहिं दुनू गोटे दूरंग किए ने छी, मुदा किछु भेली तँ अर्द्धांगिनी भेली। जँ कहि दथि जे अहाँसँ हम कम बुझै छिऐ, तखनि तँ भरी पहपटि (पहपेट) हएत। मुदा ओ तँ सुपते कहती। जखनि डाक्टरक पत्नी बिनु जानकारीओक डाक्टरनी, गुरुक पत्नी गुरुआइन कहबैक अधिकारी छथि तखनि तँ हुनको अधिकार बनिते छन्हि। मुदासे नै, प्रश्नकेँ उधार बनबैत पत्नीकेँ कहलखिन-

> ''मन किछु भरियाएल बूझि पड़ैए, एकटा बात विचारब अछितँए कनी चाह पीबू, पछाति दुनू गोटे हल्लूक मने विचार करब?''

ओना चाह पीबैले रमदुलारीक मन पहिनेसँचटपटाइतरहनि, मुदा अपन घटैत जिनगी देखि मनकेँ मनेक मोटा तर दबनेरहथि। घटैत

जिनगी ई जे जिनका महिनाक तीसोदिनक रोजी भेटै छेलनि आ रोटी चलै छेलनितिनका पनरहे दिनक ने आब भेटतनि। तखनि जँ रोटीकँ टुकड़ी नै बनाएब तँ पार केना लगल। पतिक आदेशकँ हृदैसँ सुहकारिलेलनि। किएक तँ हृदैओमेतँ चाहे रानी ने बैसल छेलखिन। बजली-

> ‘‘ई केहेन भैयारी छथि जे ओहो भाय कहलनि आ अहूँ भाइए कहलियनि?’’

पत्नीक ओझाराएल प्रश्न सुनि आरो ओझराएब नीक नै बूझि ठाकुर प्रसाद बजला-

> ‘‘अही सभ बातक ने विचार करब। पहिने चाह तँ पीआउ?’’

जहिना ठाकुर प्रसाद प्रश्नकँ एकरस्ता धड़बए चाहै छला तहिना पत्नी खुड़पेरिया बना-बना आरो-रस्ता ठाढ़ करै छेली। बजली-

> ‘‘जखनि भैयारीक सम्बन्ध अछि तखनि छुच्छे चाह पिआएब उचित हएत। अहाँ तँ मरदा-मरदी छँटि जाएब, मुदा जँ ओ मुहेँपर बाजि दथि जे बम्बइओ-बम्बै किछु नै, तखनि हमर मुँह केहेन हएत।’’

बम्बैक-बम्बै सुनि ठाकुर प्रसादक मनमे जेना पछुआक सिहकी बहलनि। हफुआइत मने बजला-

> ‘‘जाउ ने,जे मन फुड़एसे ओरियान करि कऽ रखि लेब।’’

पतिक टारैक बात रमदुलारी नै बूझि समटैक बात बूझि गेली। दड़बड़ प्रश्न ठोकलनि-

> ‘‘अहूँ भाय कहलियनि ओहो भाइए कहलनि तखनि हमर दिअर भेला आकि भैंसुर?’’

दिअर-भैंसुर सुनि ठाकुर प्रसादक मन चौंकलनि। मन पड़लनि अपन पैंतीस बर्खक जिनगी। पैंतीस बर्ख पूर्बक परिवारक (पिताक अमरदारी) ने जिनगी छल जगह तँ वएह छी। मुदा पैंतीस बर्खक बीच

गाम-घर नै देखि पेलौं, शहर-बजार तँ देखबे केलौं। की सभ महानगरक जिनगी एकरंगाहे छै। से तँ नै छै। सबहक अपन-अपन क्षेत्रक साहित्य, कला, रीती-रिवाज, खान-पान सभ किछु छै। तहिना ने अपनो गाम-घरक हेबा चाही। प्रश्नकेँ टारैत ठाकुर प्रसाद बजला-

> ''एतेदिनबम्बैसनशहरमेरहलौंजैठामपोरो-पटुआसँ लऽ कऽ पालक-गेनहारी-मेथी सागकेँ लोक सागे बूझि कियो, कम पाइ रहने कीनि खाइए तँ कियो बजारक महग सौदा (अधिक पाइबला) बूझि कीनि खाइए। लूटमे चरखामे नफा जहिना होइ छै तहिना पोरो-पटुआ सेहो पालक-गेनहारी-मेथीक कान काटि लइए।तँएकी एकरा नीक कहबै। खैर ई बम्बैक बात भेल।''

बम्बैक बात सुनि रमदुलारीक मन पघिल गेलनि। बजली-

> ''मन अछिआकि बिसरि गेलौं जे ओ सभ (ब्रिटिस इंजीनियर) दुनू पराणी केना हाथ जोड़ि नमस्ते करै छेलि।''

नमस्ते सुनि,जेना चौराहापर अबिते भक्क खुजै छै, तहिना ठाकुर प्रसादकेँ खुजलनि।बजला-

> ''ओ हमर अहाँक करै छलाआकि ओ अपना धरतीकेँ करै छला जइ धरतीकेँ अपन जीवन सूत्र छै। जखनि ओ सभ अबै छला आ चाह पीयबै छेलियनि तखनि ओ अपन तरीकासँ मिलबै छला। अपना सबहक तरीका दोसररंग अछिए, मुदा ओ अपन ढंगसँ भिन्न तरीका बूझिओ कऽहँसै कहाँ छल। आँखि गड़ा अपनतरीका देखै छलआ देखै छल अपना सबहक अचार-विचार। तेकरा ओ नमस्कर करै छल।''

पतिक बात सुनि रमदुलारी विह्वल होइत बजली-

> ''ओकर रीती-रिवाज हमरा मिसिओ भरि नीक नै लगै छल। भने अहूँ संगबेसँ छुट्टी दऽ देलौं। नैतँ ओकरा जकाँ हमरा कूद-फान करल होइत। तइसँ नीक भेल जे जेतेकाल असकरे डेरामे रहै

> छेलौं तेतेकाल अपन नैहर-सासुरक गीतो-नादक रियाज असगरेमे करै छेलौं आ अपन दादीक सिखौल जे कढ़ाइ-पढ़ाइ छल तेकरो लिखै छेलौं।एह! आब मन पड़ैए ओ दिन जैदिन हाथसँ जनकपुरक कोहबरो लिखै छेलौं आ घुन-घुना, घुन-घुना डहकनो गबै छेलौं। केना कृष्ण कदमक गाछक मचकीपर बैसि बरहमासा गबै छला।''

बजैत-बजैत रमदुलारी पघिल कऽ पनि भऽ गेली। जहिना नवतुरिया संगी-बहिनपा कऽ सुख-दुख सुनि नोराइत तँ संगे मुदा नोर कातमे जा झाड़ैत तहिना रमदुलारीओ आँखि मीड़ैत चाह बनबऽ बढ़ली।

ठाकुर प्रसादकेँ मन पड़लनि गामक स्कूल। संगे-संग दुनूगोरे भट्ठो धेलौं आ गामेक मिड्ल स्कूल होइत आगुओ बढ़लौं। स्कूलक पछुआरमे जे जामुनक गाछ छल ओही गाछक निच्चाँ छाहरिमे दुनूगोरे गुल्लीओ-डन्टा खेलै छेलौं। पढ़ैओमे दुनूगोरे एकेरंग रही। ओहो अपन सबक यादिकरि कऽ आ खांत लिखि कऽ लऽ स्कूल अबै छला आ हमहूँ लिखि कऽ लऽ जाइ छेलौं। सभदिन पढ़ाइ सभदिन परीक्षा होइ छल। हाइस्कूलमे हमफस्ट करए लगलौं आ रूद्रा भायपोजीशनसँनिच्चाँउतरि गेला। तेकर कारण भेल जे आर्ट विषयसँ हुनका बेसी सिनेह छेलनि आ हम सांइस पढ़ै छेलौं। आर्ट विषयमे कम नम्बर अबै छेलै, सांइस विषयमे बेसी। जइसँ कलासमे पहिल सँ लऽ कऽ दसम-बारहम पोजीशनधरि सांइसेक विद्यार्थी रहैत छल। एके हाइस्कूलसँ दुनूगोटे मैट्रीको पास केलौं। आइ.एससी.क पछाति हम इंजीनियरिंग कौलेजसँग्रेजुएशन केलौं आ ओ अंग्रेजी आनर्स केलनि। हुनका गामसँ दूकोस हटि हाइस्कूलमे नोकरी भेट गलनि आ हमरा बाहर जाए पड़ल। बाहर मनमे अबिते ठमकि गेला। बाहर किए? मन पड़लनि अपन पढ़ाइ, अपन शिक्षा मैकेनीक इंजीनियर बनलौं। ई नै बूझि पेलौं जे काज केतए करए जाए पड़त। ग्रेड नीकतँए नीक बूझि पढ़लौं। रिजल्टो नीकतँए मन काज करैले तन-फन करए लगल। जखनि मन तनफनाएल तखनि खोज-भाँज केला पछाति पता चलल जे हमरा लिए महानगर छोड़ि दोसर जगह नै अछि। क्षेत्रक कोन बात जे राज्योमे तेहेन कारखाना नै। दछिन बिहार (अखुनका झारखंड) मे किछु छइहो तँ काजसँ बेसी काज केनिहार अछि। आशामे नोकरीक

ओरूदे खतम भऽ जाइ छै। काजक ओरूदा खतम होइते मनुखोक ओरूदा खतम भऽ जाए छै जइसँजिनगीए फुलहरि जाइ छै। इलाकामे जे किछु कारोबार (कारखाना) छलो तँ कुसियार चाउर-दाइल सेरसो, तोरी, पटुआक छल जइमे हमर काजे ने छेलै। जखनि बाहर जाएब छोड़ि दोसर उपाइएकी छल। मुदा तैयो गामसँ अलग अपनाकेँ कहाँ बुझैछेलौं। बुझै छेलौं जे जहिना बिराटनगर कलकत्तामे नोकरी केनिहारक परिवार गाममे रहै छन्हि आ अपने परदेशमे कमाइ छथि तहिना करब। सालभरिपर तँ एबे करै छेलौं जे कोनो विशेष उत्सव आकि परिवारक विशेष काज होइ छलतँबिच्चोमे अबिते छेलौं। जहिना कोनो दोस-महीम छहमास या सालभरि आकि पानसालपर भेँट भेने भूमिका रूपमे अपन पूर्ब जिनगीक चर्च करैत पाँचेमिनटमे अपन पानसालक गाथा गाबि, अलिसाएल पानजकाँपानिमे डुमकुनियाँ कटिते ताना-उतार भऽ जाइए तहिना ने होइ छथि। मुदासे छूटि गेल। ब्रिटिश कम्पनीमे नोकरी भेटल। जुआइन केला पछाति बूझि पड़ल जे दुनियाँ बदलि गेल। तैबीच रमदुलारी चाह आगूमे रखैत बजली-

> ''चाहमे तुलसी पात दऽ देने छी। देखलौं जे मन ठेहियाएल जकाँ अछि।''

पत्नीक बात सुनि ठाकुर प्रसादक मनमे उठलनि जे हारलकेँ हरिनाम नै कहि रोगक दबाइ कहै छथि। दबाइ तँ तीत-मीठ दुनू होइ छै। जहिना रोग मेटबैमे तीत-मीठक विचार बिना केने लोक खाइए तहिना रोग अनबोमे तीत-मीठ थोड़े बुझै छै। डारि छोड़ि कूदब नीक नै बूझि डारिएमे मचकी लगा झूलब नीक बुझलनि। मुदा जाधरि पत्नी लगमे बैसल रहती ताबे घाटपरहक छबड़ा जकाँ चाल-चूल करिते रहती। कखनो सोझ बाट धड़ैए ने देती।तँए नीक तखने हएत। बजला-

> ''पुरना संगी रूद्रा भाय छथितँएतेहेन सुआगत होन्हि जे मनमे जगह बनाबथि।''

पतिक बात रमदुलारीओकेँ नीक लगलनि। बजली-

> ''होउ, झब दे चाह पीबू। काजमे लगि जाएब तँ कप एत्तै रहि जाएत। आँटा सानि कऽ कचौड़ी बनबैले फ्रिजमे रखि लइ छी। वएह काज ने मेठनगर अछि, बाँकीतँ हल्लुके अछि। नमकीन-अँचार मिठाइ सभ तँए अछिए।''

जान छुटैत देखि ठाकुर प्रसद हाँइ-हाँइ चाह पीब कप हाथमे धड़ा देलखिन। रमदुलारी टेन्टक भीतर आबि जलखैक जोगार करए लगली। अखनि धरिक मनक खुटका रूद्रानन्दकेँ अनायासे मेटा गेलनि। मेटा ई गेलनि जे छहमास पछाति बैंक गेल रहथि। अपन विद्यार्थी कैशियर बनि आबि गेलनि। देखिते पहिने काजो कऽ देलकनि आ खातीरो-बात केलकनि। खातीर-बात देखि रूद्रानन्दक मुँहसँ निकलि गेलनि-

> ''बौआ, बड़ बेरपर केलह। दबाइ कीनैक अछि। पोती दुखित अछि।''

बजै काल तँ रूद्रानन्द बाजि गेला मुदा अपने मन धिक्कारए लगलनि। कोन जरूरी छल जे बच्चाक बिमारीक बात बजलौं। अपन मन तँ रूद्रानन्दक कसाइन होइते रहनि मुदा कैशियरक बात,'मास्सैब हमहूँ कियो आन छी?' सुनि आरोमन खट-मिठेलनि। अनेरे केकरो काजमे बाधा देब उचित नै बूझि बैंकसँ निकलि गेला। दोकान जा दबाइ कीनलनि। घरपरहक रस्ता हियौलनि। रस्ता बदलए पड़त जँ से नै करब तँ समैपरदबाइ केना दऽ पेबै। जखने ठाकुर प्रसाद देखता आकि नहियोँ देखता, अपनो तँ कहिए कऽ आएल छेलियनि, तखने ओझरा जाएब। कोन जुग-जमानाक पछाति भेँट भेला अछि। हुनको केस पाकि गेलनि, हमरो पाकि गेल। एते दिनक जे गप पसरत ओकरा लगले केना समेटि पाएब। तइसँ नीक जे दोसर रस्ते पहिने घरपर जा बच्चाकेँ दबाइ खुएला पछाति आएब, सएह केलनि।

रूद्रानन्दकेँ देखिते ठाकुर प्रसादक मनमे अन्हारमे डिबियाक इजोत जकाँ बूझि पड़लनि। शहर-बजारक रमदुलारी रूद्रानन्दकेँ बैसिते पानि-चाह आगूमे रखि देलखिन। मनाही करैत रूद्रानन्द बजला-

> ''अइसँ आगू किछु ने करू। चाह भऽ गेल, भऽ गेल।''

रूद्रानन्दक मनाहीकेँ टारैत ठाकुर प्रसाद बजला-

"भाय, जाइकाल बाजल छेलौं, जे 'घराड़ी खेत आ खेत घराड़ी'सेनीक जकाँ नै बूझि पेलौं?"

ठाकुर प्रसादक बातकेँ तहियबैत रूद्रानन्द बजला-

"सभ गप हेतै। पहिने ई कहू जे बम्बैमेतँ रहैक अपन सभ बेवस्था कऽ नेने हएब किने?"

"हँ।"

"तखनि गाम किए एलौं?"

"किए हमर गाम नै छी जेनै आएब।"

"ई मजाक भेल?"

मजाकसुनितेसम्हरैतठाकुरप्रसादबाजल-

"ओतुका सभ किछु बेचि-बिकिन कऽ आबि गेल छी।"

सभ किछु बेचि-बिकिन सुनि रूद्रानन्दक मन ठमकलनि।मुदा गामसँ शहर लोक खुशीसँ जाइए आ हिनका...। बम्बै सन शहर छोड़ि गाम अबैक किछु खास कारण जरूर हेतनि। मुदा जेते खोद-बेद करब, भऽ सकैए ओते मने-मन बेथित होथि। तइसँ नीक जे दोसर पाशा फेकि उनटा बानिए बूझि लेब। बजला-

"भाय, घराड़ी केना खेत बनै छै आ खेत केना घराड़ी बनै छै? खेतमे अन्न-तीमन, फल-फूल उपजै छै जखनि कि घराड़ीक उपजा माल-जालक संग लोको होइए। तै संग ईहो होइ छै जे घर बन्हने खेते घराड़ी आ घर नै रहने घराड़ीओ खेते बनि जाइ छै।"

रूद्रानन्दक बात सुनि ठाकुर प्रसादकेँ पच्चीस बर्ख पछिला घटना मन पड़लनि, गाम आएल रही, एक तँ भुमकम, दोसर बरसाती भुमकम

ओना भुमकम बारहोमास भऽ सकैए मुदा बारहो मासक मौसमक अनुकूल प्रभाव भिन्न-भिन्न पड़ै छै। अखनि धरि ठाकुर प्रसाद गाम नै बिसरल छला, साले-साल अबैत छला। पोथीओमे सौन-भादबक लहकी पढ़िते छला। ओही लहकीमे, बरसातेमे गाम एला। भुमकममे घरो खसलनि आ तैपर बरखो तेते नहौलकनि जे जड़ा कऽ जे भगला से गामे बिसरि गेला। ओना तइसँ पहिने मनमे रहनि जे गामोमे घर बनाएब जहिना आन सभ महिना दिनक छुट्टीमे पिकनिको मनबैए आ घुमबो-फिड़बो करैए। मुदा एक्के दहारमे ठाकुर प्रसादक सभ किछु बोहा गेलनि। ब्रिटिश कम्पनीकेँ गाम दिस एने ठाकुर प्रसाद बेटाक नोकरीक संग गाम तँ आबि गेला मुदा मनमे ठहकिते रहनि जे पाँचो सए बीघामे कम्पनीक अपन पढ़ाइ-लिखाइसँ लऽ कऽ कारखाना धरि रहतै। सबहक रहैक बेवस्था अपन केम्पसमे रहतै जहिना मॉरीशस समुद्रक बीच दोसर भारत अछि तहिना ने पाँचो सए बीघाक बीच, लाखो कर्मचारी आ श्रमिकक बीच अंग्रेजक अपन जुति-भाँति रहतै। कारबारकेँ शहरसँ गाम दिस एने ठाकुर प्रसाद गाम एला। बजला-

> “भाय, गाम तँ आबि गेलौं मुदा ने घर अछि आ ने एकोटा गाममे चिन्हारए बूझि पड़ै छथि। पहिल-पहिल अहाँ भेटलौं। अहींपर सभ दार-मदार हएत?”

ठाकुर प्रसादक बात रूद्रानन्दकेँ ओते आकर्षित नै केलकनि जेहेन प्रश्न छेलनि। गाममे ब्रिटिश कम्पनी एने शहरक लोक गाम दिस औता। मुदा संगमे कथी सभ लऽ कऽ औता। ई बात रूद्रानन्दकेँ घेरि लेलकनि। नीलक खेतीक अनुभव तँ अछिए, वेपारीए बनि कऽ ने अंग्रेज आएल छल। अपन टेकनीकल कौलेज, मेडिकल कौलेज खोलत। शिक्षाक संग अपन उत्पादित वस्तु बेचत, इलाज बेचत। विचित्र प्रश्न रूद्रानन्दक मनकेँ पकड़ि लेलकनि। बजला-

> “भाय, अखनि थाकल छी, गप करैक मन नै होइए। अखनि जाए दिअ। जखनि गाम आबि गेलौं, तखनि भेँट-घाँट होइते रहतै।”

रोगसँ जकड़ल रोगी जहिना बेसीसँ बेसी बात डाक्टरकेँ कहए चाहैए जे कहुना झब दऽ रोग छूटि जाइ। तहिना ठाकुर प्रसादकेँ सेहो होन्हि। मनमे नचैत रहनि जे पैंतीस बर्खपर गाम एलौं। पुरना लोक मरिए गेला। संगी-साथीमे दुइए गोटे छी। औरो गोटे खेती-गिरहस्तीसँ जुड़ल रहला, तिनकासँ तेहेन सम्बन्धे ने बनल। तैसंग जतियारे भोज आकि सामाजिक भोज सेहो छूटिए गेल। केना कऽ पबितौं। एमहुरका, पैंतीस बर्खक बीचक जे अछि, जेकर जनम पछाति भेल, ओ किए चिन्हत आकि हमहीं किए चिन्हबै। तखनि गाममे रहब केना? बजला-

> ''भाय साहैब, एक परिवारक आशा भाइए गेल अछि। भौजीओकेँ कहबनि जे कखनो काल आबथि। आब तँ अहीं सबहक ने आशा।''

पत्नीक नाओं सुनि रूद्रानन्द बजला किछु ने मुदा मने-मन विचारए लगला। ने दुनू गोटेक एक बोली रहलनि। पुरनाबोली बिसरिए गेल हेती, बजरूआ बोलीमे केना सुग्गा-मेनाक मिलान हएत। खानो-पान तेहेन जे एकटा कीड़ी-फतिंगी तकैए आ दोसर पाकल तिलकोर, पाकल लताम तकैए। मुदा बच्चाक बिमारी मनकेँ मथैत रहनि। बाल-बोध छी, रोगक कारण थोड़े बुझैए जे बरदास करत। दर्द हेतै, कानत। घरमे जे बच्चा कानत तँ सियानकेँ केना अन्न घोंटल जेतै। बजला-

> ''जाइछी?''

ओना ठाकुर प्रसादक इच्छा रहनि जे अखनिधरिक जे खाली जिनगीरहल ओ तँ विचारेक माध्यमसँ भरत, मुदा रूद्रानन्दकेँ अगुताएब देखि चुपे रहला। चुपो केना नै रहितथि। बलजोरीक विचार तँ ओहिना रसविहिन होइ छै, तैपर दू जिनगीक प्रश्न अछि।

काजक झोंकमे रूद्रानन्द बाजि कऽ विदा भऽ गेला मुदा दसे डेग आगू बढ़लापर मन उबिऐ लगलनि जे भरि मन गप नै भेल। मुदा विदा भेला पछाति पुनः घूमि कऽ जाएबो तँ नीक नहिए हएत। फेर मनमे भेलनि जे जखनि शहर छोड़ि गामे एला आ बजबो केला जे गामेमे रहब।

अखनि धरि जे मनमे छेलनि जे दोहरा कऽ गामक मुँह ने देखि पएब से तँ भेबे केलनि। मुदा गाममे करता की?

जहिना बिनु रोगक डाक्टर, बिनु मशीनक इंजीनियर एक साधारण मनुखक रूपमे रहैत, तहिना ने ठाकुरो प्रसाद गाममे रहता। जे गुण उपार्जित केलनि ओइ गुणक की जरूरति गामक लोककेँ छै, जे कियो किछु पूछतनि। मनुखक जिनगीक आधार काज होइ छै, काजक आधार लूरि होइ छै। से रहितो काज छीनेने वा काज ने रहने तँ ओहिना खाली-खाली जिनगी बनि जाइए। रूद्रानन्दक जीवैक आधार आ ठाकुर प्रसादकआधारअलग-अलग रहने एकमे वेकारी आबि गेलनि दोसरकेँ जिनगीक गाढ़ रस भैटै छेलनि।

घरपर रहि रूद्रानन्द नोकरीओ केलनि आ परिवारसँ लऽ कऽ गामो-समाजक काजसँ जुड़ल रहला। सेवा-निवृति भेला पछातिओ काजमे कमी नै एलनि। स्कूलक बान्हल काजसँ अलग भेला। मुदा अलग भेलो पछाति काज कहाँ छुटलनि। शुरुहेसँ जे जिनगीक काजक रूटिंग बनि गेल छेलनि ओइमे कनीए फेड़-फाड़ भेलनि। फेड़-फाड़ ई भेलनि जेजे समए स्कूलमे लगबै छला ओ दरबज्जापर समाजक बच्चाक बीच लगबए लगला। श्रमजीवी परिवारतँए श्रमजीवी संस्कृति परिवारक जन-जनमे समाएल। जइसँ जिनगीक प्रति अकाट्य बिसवास बनले छन्हि। बेकारीक अवस्थामे ने कियो किम्हरो भटकबो करैए आ तैसंग टहलबो करैए। मुदा नियमित जिनगीक ढंग तँ तइसँ भिन्न होइ छै। जेना-जेना समए चलैत रहल तेना-तेना किरियो-कलाप चलैत रहल।

दोसर दिन रूद्रानन्द मन बना कऽ ठाकुर प्रसाद ऐठाम पहुँचला। पहुँचिते ठाकुर प्रसादकेँ कहलखिन-

> “भाय, अहाँ एलासँ एते जरूर भेल जे खाली समए आनन्दसँ कटत।”

ठाकुर प्रसाद रूद्रानन्दक बातक गंभीरताकेँ नै बूझि सकला। जहिना सभकेँ होइ छै तहिना भेलनि जे भरिसक खाइ-पीबै दुआरे बोली भरलनि। बजला-

> ''भाय, जिनगीमे एते संघर्ष जे केलौं, से कथीले। अही सबले ने?''

ठाकुर प्रसादक बात रूद्रानन्द ताड़ि गेला। मनमे उठलनि यएह भेल संघर्ष जे जाबे शरीरमे काज करैक शक्ति छल ताबे ओकरा बेचि-बेचि जीवन-जापन केलौं आ संघर्ष कहै छी। मुदा सम्हरैत बजला-

> ''भाय, जहिना आमक आँठी टिकुलासँ जुआ-जुआ, सकताइत-सकताइत पकै दिन एते सकता जाइए जे नव गाछ (दोसर गाछ) पैदा करैक शक्ति पाबि जाइए। की ऐसँ भिन्न मनुखक जिनगीकेँ बुझै छी?''

अखड़ाहापर जहिना कोनो खलीफा घंटो लड़ला पछाति माटिपर खसैए आ कोनो सलामी लइते धोबिया पाट खसैए तहिना ठाकुर प्रसादकेँ बूझि पड़लनि। मुदा जहिना प्रश्न नान्हिटा नै, तहिना जवाबो केना नान्हिटा भऽ सकैए। ई तँ विचारधारा छी। एक धार ओहन बोहैए जइमे मनुखक क्रिया कर्म बनि जिनगीक सार्थकता पबैए आ दोसर कर्मसँ हटि पाइक जिनगी बनि ठाढ़ होइए। रूद्रानन्दो आ ठाकुरो प्रसादक बीच यएह दूरी बनि गेल छन्हि। ठाकुर प्रसाद बजला-

> ''भाय, जिनगी लेल कोनो वस्तुक कमी नै अछि। सभ किछु बना नेने छी। तैसंग बेटो अपनासँ अन्नैस नै बीसे अछि।''

ठाकुर प्रसादक बात रूद्रानन्दकेँ एते बिसाइन बना देलकनि जे मन बेकाबू भऽ गेलनि। बजला-

> ''भाय, हाइ स्कूलक अठमा किलासक समाज अध्ययनमे पढ़ने रही, मनुख समाजिक प्राणी छी, जँ से ने तँ या तँ देवता छी या जानवर। ऐ कसौटीपर अपन समीक्षा करियौ।''

रूद्रानन्दक प्रश्न सुनि ठाकुर प्रसाद गुम भऽ गेला। तैबीच पत्नी-रमदुलारी चाह-बिस्कुट दुनू गोटेक आगूमे रखि देलकनि। बिस्कुट खा पानि पीब ठाकुर प्रसाद बजला-

“भाय, जिनगीक कोनो ओर-छोर छै। बेठेकान अछि।”

❍❍❍